गुरु तत्व आकर्षण विशेषांक

जुलाई 2026
वर्ष - 16

मूल्य : 40/-
अंक - 11

निखिल-मंत्र-विज्ञान

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति साधना

श्रावण मास : ररेश्वर शिव साधना - अभिषेक

प्रबल शुक्र तेजस्विता साधना

शिव की शक्ति : पाशुपतास्त्रेय साधना

गुरु पूर्णिमा : चलो सद्गुरु के पास अयोध्या तीर्थ

A Monthly Journal

आवश्यक सूचना

निखिल मंत्र विज्ञान का प्रत्येक अंक अब से रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेजा जा रहा है। जिससे आपको पत्रिका निश्चित रूप पता हो सके। अब पत्रिका जोधपुर कार्यालय से POST होते आपको डाक विभाग द्वारा SMS प्राप्त होगा। यदि आपको मोबाईल पर SMS के माध्यम से सूचना प्राप्त नहीं हुई है तो कृपया पते के साथ अंकित अपना MOBILE NUMBER अवश्य जांच लें और यदि आपने अपना मोबाईल नम्बर बदल दिया है तो तत्काल जोधपुर कार्याल के WhatsApp No. 9602334847 पर अपना नया नम्बर अपने नाम सहित भेज दें अथवा फोन द्वारा सूचना कर दें।

पत्रिका आपको समय पर और निरन्तर प्राप्त हो इसीलिये रजिस्टर्ड डाक (MAGAZINE POST) की विशेष सेवा का प्रयोग किया जा रहा है। पत्रिका नहीं प्राप्त होने पर तुरन्त जोधपुर कार्यालय में फोन एवं WhatsApp द्वारा सम्पर्क करें।

साधना और दीक्षा से ही जीवन गतिशील

प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री, दीक्षा, भेंट आदि की न्यौछावर आप सीधे ''निखिल मंत्र विज्ञान, जोधपुर'' के SBI Bank A/c. 32677736690 और UBI Bank A/c. 310001010036403 में QR Code Scan कर जमा करवा सकते है -

SBI Payments — SCAN & PAY
SBI Bank A/c. 32677736690
IFSC Code SBIN0000659

Union Bank of India — SCAN & PAY
UBI Bank A/c. 3100010100-36403
IFSC Code UBIN0531006

WhatsApp 9602334847 पर न्यौछावर की जानकारी अवश्य भेजे।

कार्यालय में व्यक्तिगत सम्पर्क केवल इन्ही चार नम्बरों पर करें

9799988915   9799988930   9799988937   9799988938

इन्हें अपने Phone में Save कर दें।

शिविर, दीक्षा, साधना सामग्री, विधान, पूजन आदि की जानकारी हेतु
निखिल मंत्र विज्ञान जोधपुर के कार्यालय व्यवस्थापक से सम्पर्क करें -
संजय निखिल - मान सिंह - प्रवेश भारती - जगदीश

दिल्ली कार्यालय में साधनात्मक जानकारी, पूजन-यज्ञ-अनुष्ठान हेतु सम्पर्क करें - मनोज भारद्वाज - 9799988970

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते। पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते।।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः।।

वर्ष 16 | जुलाई 2026

मूल्य मासिक रुपये 40/- | मूल्य वार्षिक रुपये 405/-

निखिल आलेख

।। ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः।।

अंक 11 | पृष्ठ 68

निखिल सम्यक्

सद्गुरु प्रवचन - गुरु ही शिष्य जीवन के सूर्य ...37
गुरु वाणी ...34
शिष्य धर्म ...36
इस माह की प्रमुख साधनाएं ...48
नक्षत्रों की वाणी ...58
काल निर्णय ...60
वराहमिहिर ...61
शिविर जानकारी ...65

साधनाएं

गुरु पूर्णिमाः पारेमष्ठि गुरु शक्ति निखिल पूजन ...14
तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना ...20
शुक्र साधना ...26
श्रावण मास : रसेश्वर शिव साधना-अभिषेक ...30
पाशुपतास्त्रेय साधना ...54
पुष्पदन्तेश्वर शिव साधना ...56
बृहस्पतीश्वर शिव साधना ...57

विशेष

तंत्र उत्कीन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा ...22
प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा ...28
पाशुपतास्त्रेय दीक्षा ...55
पारमेष्ठि गुरु शक्ति महादीक्षा ...67

निखिल विचार प्रवाह

सकल कामनाओं की पूर्ति का मार्ग : गुरु कृपा ...07
गुरु पूर्णिमा : शिष्य आत्म जागरण महापर्व ...11
तंत्र शक्ति : स्वतंत्रता का मार्ग ...17
प्रबल शुक्र : जीवन का आधार ...23
शिव उपासना कल्प : श्रावण मास ...29
देवाधिदेव महादेव महिमा ...52
गुरु पूर्णिमा विचार प्रवाह ...62

प्रेरक संस्थापक
डॉ. नारायणदत्त श्रीमाली
(परमहंस स्वामी निखिलेश्वरानंद जी)

सम्पादक
श्री नन्द किशोर श्रीमाली

संयोजक
मनोज भारद्वाज

व्यवस्थापक मण्डल
नितेश कुमार
संजय 'निखिल'

प्रकाशक, स्वामित्व एवं मुद्रक
नन्द किशोर श्रीमाली
निखिल मंत्र विज्ञान
द्वारा
सालासर ईमेजिंग सिस्टम,
ए-97, सेक्टर-58
नोएडा (उ.प्र.) - 201301
से मुद्रित तथा
निखिल मंत्र विज्ञान,
14 अ मेन रोड
हाईकोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर से प्रकाशित

14 A, मेन रोड हाईकोर्ट कॉलोनी, सेनापति भवन के पास, जोधपुर, फोनः 9799988915, 9799988930, SMS & WhatsApp 9602334847
आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 34, फोनः 9799988970, 9799988904, 9799988905
www.nikhilmantravigyan.org E-mail – nmv.guruji@gmail.com facebook.com\nikhilmantravigyan.org

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'निखिल मंत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। तर्क–कुतर्क करने वाले पाठक पत्रिका में प्रकाशित पूरी सामग्री को गल्प समझें। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यदि कोई घटना, नाम या तथ्य मिल जायं, तो उसे मात्र संयोग समझें। पत्रिका के लेखक घुमक्कड़ साधु–संत होते हैं, अतः उनके पते आदि के बारे में कुछ भी अन्य जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी लेख या सामग्री के बारे में वाद–विवाद या तर्क मान्य नहीं होगा और न ही इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्पादक जिम्मेवार होंगे। किसी भी प्रकार के वाद–विवाद में जोधपुर–न्यायालय ही मान्य होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को साधक या पाठक कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं। पत्रिका कार्यालय द्वारा किसी भी सामग्री का विक्रय नहीं किया जाता, केवल उस पर मंत्र साधना, यज्ञ इत्यादि सम्पन्न किया जाता है। पत्रिका का वार्षिक शुल्क वर्तमान में 405/– है, पर यदि किसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को त्रैमासिक या बंद करना पड़े, तो जितने भी अंक आपको प्राप्त हो चुके हैं, उसी में वार्षिक सदस्यता अथवा दो वर्ष, तीन वर्ष या पंचवर्षीय सदस्यता को पूर्ण समझें, इसमें किसी भी प्रकार की आपत्ति या आलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होगी। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी साधना में सफलता–असफलता, हानि–लाभ की जिम्मेवारी साधक की स्वयं की होगी तथा साधक कोई भी ऐसी उपासना, जप या मंत्र प्रयोग न करें, जो नैतिक, सामाजिक एवं कानूनी नियमों के विपरीत हों। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक योगी या संन्यासी लेखकों के विचार मात्र होते हैं, उन पर भाषा का आवरण पत्रिका के कर्मचारियों की तरफ से होता है। पाठकों की मांग पर इस अंक में पत्रिका के पिछले लेखों का भी ज्यों का त्यों समावेश किया गया है, जिससे कि नवीन पाठक लाभ उठा सकें। साधक या लेखक अपने प्रामाणिक अनुभवों के आधार पर जो मंत्र, तंत्र या यंत्र (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर हों) बताते हैं, वे ही दे देते हैं, अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना व्यर्थ है। आवरण पृष्ठ पर या अन्दर जो भी फोटो प्रकाशित होते हैं, इस सम्बन्ध में सारी जिम्मेवारी फोटो भेजने वाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होगी। दीक्षा प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साधक उससे सम्बन्धित लाभ तुरन्त प्राप्त कर सकें, यह तो धीमी और सतत् प्रक्रिया है, अतः पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दीक्षा प्राप्त करें। पत्रिका में प्रकाशित आलेखों को किसी भी प्रिन्ट या डिजिटल माध्यम से प्रकाशित करने से पूर्व प्रकाशक/सम्पादक कार्यालय से स्वीकृती अवश्य प्राप्त कर लें।

☆ प्रार्थना ☆

दिव्यामाभां च दधतीं परितः विलसत् दिव्यकन्यावराभिः,
सिंहस्थां पूजितां तामसुरसुरगणैः भक्तभाग्यैकधात्रीं।
सौभाग्यं भावयित्रीं जनिभयहर्त्रीं भावगम्यां भवानीं;
वन्दे चन्द्रार्कबिम्बां भगवति दुर्गां पुण्यपुष्यैः परीतां।।

दिव्य आभा से युक्त अनेक दिव्य कन्याओं से घिरी हुई, सिंह के ऊपर विराजमान सुर और असुरों द्वारा संपूजित, भक्तों के भाग्य को अनुप्राणित करने वाली, सौभाग्य को उत्पन्न करने वाली, सभी भक्तों के समस्त भय को दूर करने वाली, केवल भावों से जानने योग्य, सूर्य तथा चन्द्रमा के समान प्रकाशमान, अनन्त पुण्य समूह से पावनतम भगवती दुर्गा को भावपूर्ण हृदय से मैं नमन करता हूं।

ज्ञान और विवेक को जीवन में लाना होगा

एक व्यक्ति गुरुदेव के पास गया और बोला गुरुदेव! मुझे जीवन के सत्य का पूर्ण ज्ञान है। मैंने शास्त्रों का काफी ध्यान से अध्ययन किया है फिर भी मेरा मन किसी काम में नहीं लगता, जब भी कोई काम करने बैठता हूं तो मन भटकने लगता है तो मैं उस काम को छोड़ देता हूं। इस अस्थिरता का क्या कारण है? कृपया मेरी इस समस्या का समाधान कीजिये।

गुरु ने उसे रात तक इंतजार करने के लिए कहा। रात होने पर वह उसे एक झील के पास ले गये और झील के अन्दर चांद का प्रतिबिम्ब दिखाकर बोले – 'एक चांद आकाश में और एक झील में, तुम्हारा मन इस झील की तरह है। तुम्हारे पास ज्ञान तो है लेकिन तुम उसका इस्तेमाल करने की बजाय सिर्फ उसे अपने मन में लेकर बैठे हो ठीक उसी, तरह जैसे झील असली चांद का प्रतिबिम्ब लेकर बैठी है।

तुम्हारा ज्ञान तभी सार्थक हो सकता है जब तुम उसे व्यवहार, एकाग्रता और संयम के साथ अपनाने की कोशिश करो। झील का चांद तो मात्र एक भ्रम है तुम्हें अपने काम में मन लगाने के लिए आकाश के चन्द्रमा की तरह बनना है, झील का चांद तो पानी में पत्थर गिराने पर हिलने लगता है, जिस तरह तुम्हारा मन जरा-जरा सी बात पर डोलने लगता है।

तुम्हें अपने ज्ञान और विवेक को जीवन में नियम पूर्वक लाना होगा। खुद को आकाश के चांद के बराबर बनाओ, शुरू में थोड़ी परेशानी आयेगी पर कुछ समय बाद ही तुम्हें इसकी आदत हो जायेगी।

अपनों से अपनी बात...

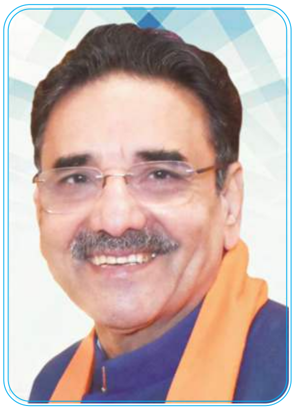

मेरे प्रिय आत्मीय,

शुभाशीर्वाद,

जब ईश्वर ने सृष्टि का निर्माण किया तो इस सृष्टि में रहने वाले प्रत्येक प्राणी, जीव, जन्तु, पक्षियों को अलग-अलग प्रकार की आकृति प्रदान की। किसी की भी आकृति दूसरे प्राणी से शत प्रतिशत नहीं मिलती है। हम हजारों लोगों को देखते हैं, स्त्रियों, पुरुषों सबमें शरीर रचना एक समान है लेकिन सबमें कुछ न कुछ अलग है। किसी भी दो व्यक्तियों को, स्त्री-पुरुषों को एक जैसा नहीं बनाया। इसका अर्थ हुआ कि ईश्वर ने संसार में हमें सबसे अद्भुत और अनोखा बनाया और हमारे जैसा किसी और को नहीं बनाया।

अब ईश्वर ने कहा कि यह तो शरीर की रचना हुई। यह संसार में चलेगा कैसे? कार्य कैसे करेगा? तो उसमें भाव गुण डाला। जिसे हम कहते है 'स्वभाव'। तो संसार के प्रत्येक प्राणी का स्वभाव अलग-अलग होता है। किसी का भी स्वभाव, किसी दूसरे के स्वभाव से शत प्रतिशत नहीं मिलता है। यह भी हमारी विशेषता है, विभिन्न प्रकार के स्वभाव वाले स्त्री-पुरुष है। इसीलिये संसार में विविधता है, विचित्रता है, आकर्षण है। सार रूप में हमें जीती जागती, मशीन नहीं बनाया। हमें जीवन्त प्राणी बनाया और आदेश दिया कि जाओ इस संसार में विचरण करो, अपनी पूर्णायु का भोग करो और अपने-अपने स्वभाव से इस संसार में चिन्तन करते हुए जीओं। प्रगति करो, अवनति करो, जीवन का उत्थान करो, जीवन में सृजनकर्त्ता बनो, यह तुम्हारे स्वभाव पर है कि जीवन कैसे चलेगा? यह तुम्हारा स्वभाव रहेगा और अपने स्वभाव के स्वामी तुम स्वयं होंगे। मैं तुम्हारे स्वभाव के परिवर्तन के लिये हर क्षण दिशा निर्देश नहीं दूंगा।

अब ईश्वर ने दे दिया सबको स्वभाव और मनुष्य जीवन में सबसे अधिक प्रभावी तत्व है उसका स्वभाव। **स्वभाव का सीधा अर्थ है - स्व + भाव अर्थात् स्वयं का भाव। आपकी प्रकृति, मनोवृति और आपकी प्रतिक्रिया की शैली। इसका अर्थ है जो हम बिना किसी दिखावे और प्रयास के करते है वह हमारा वास्तविक स्वभाव है।**

अब इस वास्तविक स्वभाव को व्यक्ति स्वयं ही देख सकता है। यदि हम दूसरों को पहचानना चाहते है तो यह देखें कि कठिन समय में उसका व्यवहार कैसा है? क्योंकि मनुष्य का वास्तविक स्वभाव प्रसन्नता में, क्रोध में, संकट में, सफलता में प्रकट होता है, पूरे संसार को दिखता है।

सामान्य रूप में मनुष्य अपने वास्तविक स्वभाव पर एक आवरण डाले रखता है। इसे कहते है चेहरे के पीछे छिपा हुआ चेहरा। बाह्य रूप से किसी का वास्तविक स्वभाव अथवा उसके मन में क्या है यह देख नहीं सकते है क्योंकि मनुष्य में अभिनय का बहुत गुण है। वह किसी भी स्थिति में नाटक कर सकता है और नाटक करते-करते, धीरे-धीरे खुद की जिन्दगी को भी एक नाटक बना लेता है। वह अपने स्वयं के वास्तविक स्वभाव को ही भूल जाता है।

आज मैं यह बात इसलिए कह रहा हूं कि **मुझसे आप लोग आकर कहते हो कि गुरु जी मैं अपने आपको बदलना चाहता हूं। मैं परिवर्तन चाहता हूं, मैं उन्नति चाहता हूं, मैं बाधाओं का समापन करना चाहता हूं, मैं उच्च स्थान प्राप्त करना चाहता हूं, मैं वह करना चाहता हूं जो मेरे परिवार, मेरे मौहल्ले, मेरे समाज में किसी ने नहीं किया। मैं एक अलग प्रकार का व्यक्तित्व बनना चाहता हूं।**

यह सब बातें मुझे रोज सुननी पड़ती है और इन बातों के बीच में आप अपनी समस्याओं की बात भी कह ही देते हो।

आज मेरी एक बात पर विचार करना, **जो तुम करना चाहते हो, बनना चाहते हो। उस मुकाम तक पहुंचने के लिये सबसे अधिक क्या आवश्यक है?**

उसके लिये सबसे अधिक आवश्यक है - **स्वभाव शुद्धि, अपने स्वभाव में परिवर्तन करना।**

यह भी बात सही है कि स्वभाव एक दिन में नहीं बनता, आपके बचपन के संस्कार, आपके चारों ओर का वातावरण, आपकी संगति, आपके अनुभव, आपके विचार, आपके स्वभाव का निर्माण करते है।

हो सकता है, बचपन में अच्छे संस्कार, अच्छा वातावरण, अच्छी संगति नहीं मिली हो। जीवन में पचासों असफलताएं मिली हो। जिसके कारण विचारों में नकारात्मकता आ गई है।

तो क्या आप ऐसे स्वभाव के आधार पर अपने जीवन को नवीन और श्रेष्ठ बनाना चाहते है जिसमें केवल दूषित विचार और नकारात्मकता भरी हो। तो फिर नये स्वभाव का, नये व्यक्तित्व का निर्माण कैसे होगा?

देखों भाई संसार में सामान्यत आठ प्रकार के स्वभाव वाले लोग ही होते है -

1. शांत स्वभाव 2. क्रोधी स्वभाव 3. विनम्र स्वभाव 4. मिलनसार स्वभाव
5. अन्तर्मुखी स्वभाव 6. बहिर्मुखी स्वभाव 7. सकारात्मक स्वभाव 8. नकारात्मक स्वभाव।

अब इन सब स्वभावों में कुछ गुण भी है, कुछ दोष भी है। किसी भी एक स्वभाव को पूर्ण नहीं कहा जा सकता है।

यदि आप अपने जीवन को बदलना चाहते हो तो अपने स्वभाव में बदलाव की प्रक्रिया आज से ही शुरु कर दो। और स्वभाव में इन गुणों को बढ़ायें - माधुर्यता, सहनशीलता, करुणा, ईमानदारी, विनम्रता, क्षमाशीलता और सकारात्मकता।

मनुष्य स्वभाव में निम्न दोष भी है - अहंकार, क्रोध, ईर्ष्या, जिद, असहिष्णुता और स्वार्थ।

यह दोष एक दिन में नहीं मिटेंगे, इनका धीरे-धीरे नाश करना पड़ता है और इस नाश के लिये आवश्यक है हम अपने स्वभाव का निरन्तर परिष्कार करते रहे। जिस प्रकार सोने को अग्नि में तपाकर शुद्ध किया जाता है उसी प्रकार साधना के द्वारा स्वभाव को निर्मल बनायें।

रखों अच्छी संगत, करो स्वाध्याय और शांत रखो मन, करते रहो आत्म निरीक्षण, सदैव लो गुरु का मार्गदर्शन और अपने चिन्तन को रखों सकारात्मक।

सबसे आवश्यक है अपने व्यवहार का रोज निरीक्षण करते रहो, कि मेरे व्यवहार में क्या अच्छा है, क्या खराब रहा है। जैसे-जैसे स्वभाव शुद्ध होगा, वैसे-वैसे सामान्य व्यक्ति से साधक और साधक से शिष्य की यात्रा गतिशील होगी।

इस बार गुरु पूर्णिमा का शिविर, प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि अयोध्या में सम्पन्न होने जा रहा है, आप सभी गुरु पूर्णिमा पर अयोध्या आने का प्रयास अवश्य करें।

नन्द किशोर श्रीमाली

"गुरु पूर्णिमा पर विशेष"

सकल कामनाओं की पूर्ति का मार्ग "गुरु कृपा"

गुरु ही सिद्धि, गुरु ही पूर्णता

गुरु ही जीवन के परम आधार हैं। गुरु ही सांसारिक कामनाओं की पूर्ति तक पहुंचने का निर्बाध मार्ग है...

गुरु भक्ति, गुरु निष्ठा और गुरु कृपा के माध्यम से साधक बाहरी उपलब्धियों के साथ ही साथ आंतरिक पूर्णता, शांति और आत्मिक संतोष को प्राप्त करता है...

अथ संसारीणः सर्वे गुरुगीताजपेन तु।
सर्वान् कामांस्तु भुञ्जन्ति त्रिसत्यं मम भाषितम्।।

संसार में रहने वाले लोग यदि बार-बार गुरु गीता का जप करें, तो वे अपनी सभी इच्छाओं को प्राप्त कर लेते हैं। हे पार्वती, जो मैं कह रहा हूं, वह पूर्णतः सत्य है तीन बार सत्य है।

संसार में रहने वाले लोगों के लिए सबसे अधिक आवश्यक क्या है? यदि हम ईमानदारी से अपने भीतर झांकें, तो पाएंगे कि हमारी सबसे बड़ी चिंता, सबसे बड़ा प्रयास, और सबसे अधिक ऊर्जा सब कुछ हमारी कामनाओं की पूर्ति के इर्द-गिर्द ही घूमता है। हम जो भी करते हैं, जिस दिशा में भी चलते हैं, उसके पीछे कोई न कोई कामना अवश्य होती है।

इसी सत्य को श्री गुरु गीता एक अत्यंत सरल, किन्तु गहन वचन में प्रकट करती है कि **गुरुगीता का जप मात्र ही मनुष्य की समस्त कामनाओं को पूर्ण करने में समर्थ है। यह कोई साधारण आश्वासन नहीं है, यह एक दिव्य वचन है, एक आध्यात्मिक प्रतिज्ञा है।**

अब प्रश्न उठता है - कामनाओं की पूर्ति पर इतना अधिक जोर क्यों?

इसका कारण बहुत सूक्ष्म है। जब कोई वस्तु हमारे जीवन में अधूरी रह जाती है, तभी वह सबसे अधिक मूल्यवान बन जाती है। जो हमारे पास नहीं है, वही हमें सबसे अधिक आकर्षित करता है। यही कारण है कि अधूरी कामनाएं हमारे हृदय में एक पीड़ा बनकर बैठ जाती हैं। बार-बार याद दिलाती हैं, **'काश ऐसा हो जाता', यह 'काश' ही मनुष्य के जीवन का सबसे बड़ा बोझ है।**

भौतिक जगत में किसी को स्वास्थ्य चाहिए, किसी को धन। जिसके पास स्वास्थ्य नहीं, वह कहता है 'बस स्वास्थ्य मिल जाए, फिर सब ठीक हो जाएगा।' जिसके पास धन नहीं, वह कहता है 'बस धन आ जाए, फिर जीवन संवर जाएगा।' और जिसके पास दोनों हैं, वह कुछ नया सुख, कुछ नई उत्तेजना खोजने लगता है। लेकिन कहानी यहीं समाप्त नहीं होती। जिसके पास सब कुछ है, वह भी कई बार भीतर से खाली हो जाता है और यही शून्यता उसे अवसाद, डिप्रेशन की ओर ले जाती है।

तो स्पष्ट है **कामनाएं पूरी होना ही समाधान नहीं है। समस्या का मूल कुछ और है।**

यहीं पर गुरु गीता का वास्तविक चमत्कार आरम्भ होता है। **गुरु गीता अर्थात् गुरु ध्यान केवल कामनाओं को पूर्ण**

करने का साधन नहीं है, बल्कि यह धीरे-धीरे साधक को उस स्थिति में ले जाती है जहां कामनाएं ही रूपांतरित होने लगती हैं। पहले मन कहता है 'मुझे यह चाहिए'। फिर गुरु कृपा से वही मन कहता है 'जो उचित है, वही मिले' और अंत में स्थिति यह हो जाती है 'मुझे कुछ नहीं चाहिए, क्योंकि जो है वही पूर्ण है।' यह परिवर्तन ही सच्ची सिद्धि है।

इसलिए जब कहा जाता है कि गुरु गीता का पाठ कामनाओं को पूर्ण करता है, तो उसका अर्थ केवल बाहरी उपलब्धियां नहीं है। वह आपको उस अवस्था तक ले जाता है जहां कामना और पूर्णता एक हो जाते हैं जहां न 'काश' बचता है, न 'अधूरापन' केवल एक शांत, संतुष्ट और पूर्ण अस्तित्व शेष रह जाता है।

सत्यं सत्यं पुनः सत्यं धर्मसारं मयोदितम्।
गुरुगीतासमं स्तोत्रं नास्ति तत्त्वं गुरोः परम्।।

संसारिक मन की पहली प्रतिक्रिया क्या होती है? जैसे ही उसे सुनने को मिलता है कि कोई ऐसा स्तोत्र है जिसके पाठ मात्र से सारी कामनाएं पूर्ण हो सकती हैं, तो वह तुरन्त संदेह करता है 'नहीं, यह संभव नहीं है यह कोई मायाजाल है'।

क्यों? क्योंकि मन को असाधारण बातों पर विश्वास करने की आदत नहीं है। वह उसी को सत्य मानता है जो उसने बार-बार अनुभव किया है। परिश्रम करो, संघर्ष करो, तब कहीं जाकर थोड़ी-सी प्राप्ति होती है। यदि कोई कहे कि केवल जप, गुरु ध्यान से सब कुछ मिल सकता है, तो मन उसे स्वीकार नहीं करता।

यही वह स्थान है जहां भगवान शिव स्वयं हस्तक्षेप करते हैं। शिव जानते हैं कि आने वाले समय में हर साधक का मन यही प्रश्न करेगा, यही संदेह करेगा। इसलिए वे एक बार नहीं, दो बार नहीं, बल्कि तीन बार दोहराते हैं 'सत्यं सत्यं पुनः सत्यं' हे पार्वती!, मैं जो कह रहा हूं वह सत्य है, पुनः सत्य है, और पुनः भी सत्य है। यह कोई कल्पना नहीं, बल्कि धर्म का सार है।

शिव का बार-बार कहना केवल कथन नहीं है यह साधक के भीतर छिपे संदेह को तोड़ने का प्रयत्न है।

शिव का आशय यह नहीं है कि बिना समझ के, बिना भाव के, केवल शब्दों के उच्चारण से चमत्कार हो जाएगा। वे यह कह रहे हैं कि यदि तुम निष्ठा, श्रद्धा और समर्पण के साथ गुरु गीता का पाठ करोगी, तो तुम्हारी सभी कामनाएं पूर्णता को प्राप्त करेंगी। और यहां 'पूर्णता' का अर्थ केवल बाहरी प्राप्ति नहीं है। कभी-कभी कामना पूरी होकर मिलती है और कभी-कभी वह भीतर से शांत होकर समाप्त हो जाती है। दोनों ही स्थितियां पूर्णता हैं।

जब शिव तीन बार कहते हैं 'यह सत्य है' तो वे साधक को एक ऐसे मार्ग पर स्थापित कर रहे हैं जहां विश्वास ही साधना बन जाता है और साधना ही सिद्धि।

गुरुर्देवो गुरुर्धर्मो गुरौ निष्ठा परं तपः।
गुरोः परतरं नास्ति त्रिवारं कथयामि ते।।

गुरु ही देव हैं, गुरु ही धर्म हैं, और गुरु के प्रति निष्ठा ही

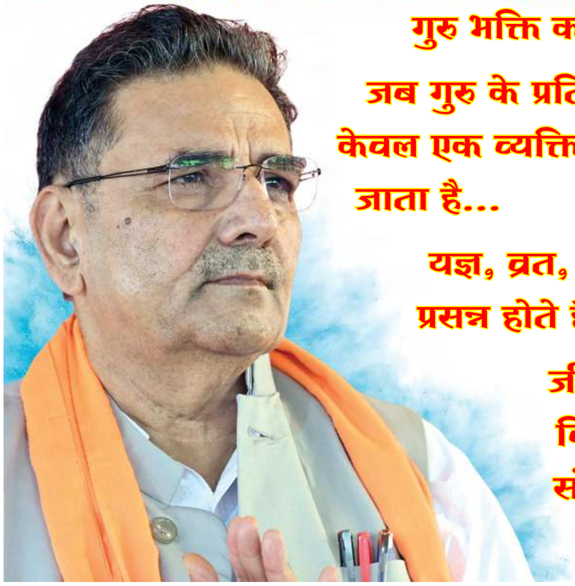

गुरु भक्ति कोई सामान्य उपलब्धि नहीं है...

जब गुरु के प्रति श्रद्धा, निष्ठा और समर्पण जागृत होता है, तब केवल एक व्यक्ति का नहीं बल्कि पूरे कुल का कल्याण प्रारम्भ हो जाता है...

यज्ञ, व्रत, तप और पुण्य कर्म तब पूर्ण फल देते हैं जब गुरु प्रसन्न होते हैं...

जीवन में सद्‌गुरु का मिलना और सद्‌गुरु में विश्वास जागना स्वयं ईश्वर के अनुग्रह का संकेत है..।

- सद्‌गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

परम तप है। गुरु से बढ़कर कुछ भी नहीं है। हे पार्वती, मैं यह बात तुम्हें बार-बार कह रहा हूं।

यह केवल एक श्लोक नहीं है, यह संपूर्ण आध्यात्मिक जीवन का सार है। जब शिव स्वयं यह कहते हैं कि **गुरोः परतरं नास्तिगुरु...** से बढ़कर कुछ भी नहीं है, तो इसका अर्थ है कि साधना, धर्म, तप, ज्ञान सबका केंद्र गुरु ही हैं।

गुरु कब आते है?

अब प्रश्न उठता है, गुरु का हमारे जीवन में आगमन कब होता है? गुरु तब आते हैं जब जीवन बदलने के लिए तैयार हो चुका होता है। जब पूर्व जन्मों और इस जन्म के सत्कर्मों का संचय उस बिंदु पर पहुंच जाता है जहां उसका फल मिलने का समय आ जाता है। तभी गुरु का प्राकट्य होता है। इसलिए कहा जाता है कि **जीवन दो भागों में बंटा होता है गुरु मिलने से पहले और गुरु मिलने के बाद। गुरु से पहले का जीवन खोज है, भटकाव है। गुरु के बाद का जीवन दिशा है, स्पष्टता है और क्रमशः शांति की ओर बढ़ना है।**

आज के समय में इस सत्य को स्वीकार करना कठिन हो गया है। ज्ञान का भ्रम इतना गहरा हो गया है कि सीखने की विनम्रता खोती जा रही है। परन्तु **जीवन का एक नियम है जिस वस्तु का अभाव होता है, उसी की अनुभूति सबसे तीव्र होती है।** जिस दिन थोड़ा भी सिर दुखता है, उस दिन समझ आता है कि जब सिर नहीं दुखता था, तब काम करना कितना सहज था। वैसे ही, मन में थोड़ी सी पीड़ा हमें यह सिखा देती है कि दूसरों के मन को कष्ट नहीं देना चाहिए। यही पीड़ा, यही अभाव मनुष्य को गुरु की ओर ले जाता है।

जब हम कहते हैं **'गुरुर्देवो'** तो इसका अर्थ है कि गुरु ही वह माध्यम हैं जिनके द्वारा हम देवत्व का अनुभव करते हैं। **'गुरुर्धर्मः'** का अर्थ है कि सही और गलत का बोध, जीवन का मार्ग, कर्तव्य का ज्ञान सब गुरु से ही प्रकट होता है। और **'गुरौर्निष्ठा परं तपः'** का अर्थ है कि गुरु के प्रति अटूट विश्वास और निरंतर समर्पण यही सबसे बड़ा तप है। यह तप किसी जंगल में जाकर साधना करने से भी बड़ा है।

इसलिए शिव बार-बार कहते हैं **'त्रिवारं कथयामि ते'** क्योंकि यह सत्य इतना गहरा है कि एक बार सुनने से मन उसे स्वीकार नहीं करता। जब यह बात हृदय में स्थापित हो जाती है, तब साधना सरल हो जाती है, जीवन सहज हो जाता है और जो पीड़ा हमें भटका रही थी, वही पीड़ा हमें गुरु के चरणों तक पहुंचा देती है।

धन्या माता पिता धन्यो गोत्रं धन्यं कुलोद्भवः।
धन्या च वसुधा देवि यत्र स्याद् गुरुभक्तता॥

धन्य है वह माता-पिता, धन्य है वह कुल और वंश; और धन्य है यह पृथ्वी भी, जहां गुरु भक्ति होती है।

एक बहुत सीधी और गहरी बात क्या हर किसी के लिए संभव है गुरु की भक्ति करना? नहीं, हर व्यक्ति गुरु की भक्ति नहीं कर सकता। क्योंकि **गुरु भक्ति कोई साधारण भावना नहीं है, यह अनुकंपा का परिणाम है। वह स्थिति जहां केवल प्रयास पर्याप्त नहीं होता, वहां ईश्वर की कृपा भी आवश्यक होती है।**

जहां गुरु भक्त जन्म लेते हैं, वह कोई संयोग नहीं होता वह अनेक जन्मों के सत्कर्मों का संचित फल होता है। **'जौं प्रभु अनुग्रह कीन्हा...'**, यदि प्रभु की कृपा हो जाए, तभी पार उतारना संभव होता है।

गुरु अनुग्रह : अमृत आगमन

'अनुग्रह' शब्द अपने आप में बहुत गहरा है। अनुग्रह का एक अर्थ है कृपा, लेकिन एक सूक्ष्म अर्थ यह भी है 'ग्रहों को अपने अनुसार कर लेना...'। हम सभी अपने जीवन में ग्रहों के प्रभाव से प्रभावित होते हैं। कभी समय साथ देता है, कभी विरोध करता है। परंतु जब अनुग्रह होता है, तो वही ग्रह जो पहले बाधा बन रहे थे, अब सहायक बन जाते हैं। जीवन का प्रवाह बदलने लगता है।

गुरु से भेंट होना, गुरु के मार्ग का अनुसरण करना, गुरु के प्रति निष्ठा जागृत होना, गुरु से दीक्षा प्राप्त होना यह सब ऐसे ही नहीं होता। यह सब भाग्य में अंकित होता है और

यह भाग्य उसी का बनता है जिसने अपने पूर्व कर्मों से उसे अर्जित किया हो।

इसलिए शिव कहते हैं **धन्य है वह परिवार, धन्य है वह घर, जहां गुरु भक्ति का उदय होता है। क्योंकि वहां केवल एक व्यक्ति का उत्थान नहीं होता, वहां पूरे वंश का कल्याण प्रारम्भ हो जाता है। जहां गुरु के प्रति निष्ठा होती है, वहां जीवन केवल भोग का माध्यम नहीं रहता, वह उत्थान का मार्ग बन जाता है।**

गुरु आशीर्वाद : प्रसन्नोभवः

आकल्पजन्मकोटीनां यज्ञव्रत तपः क्रियाः।
ताः सर्वाः सफलाः देवि गुरुसन्तोषमात्रतः।।

असंख्य जन्मों तक किए गए यज्ञ, व्रत और तप ये सब तभी फलित होते हैं, जब गुरु प्रसन्न होते हैं। केवल गुरु की प्रसन्नता से ही सब कुछ सफल हो जाता है।

हम जीवन भर कर्म करते हैं यज्ञ करते हैं, व्रत रखते हैं, तप करते हैं, दान देते हैं। परन्तु इन सबका फल कब मिलता है? शिव स्पष्ट कहते हैं जब तक गुरु संतुष्ट नहीं होते, तब तक इन साधनों की पूर्णता नहीं होती।

इसका अर्थ यह नहीं है कि यज्ञ, व्रत और तप व्यर्थ हैं। ये सब आवश्यक हैं। लेकिन ये सब भूमि को तैयार करने की प्रक्रिया हैं और जब भूमि तैयार हो जाती है, तब उस पर कृपा का बीज गिरता है जिसे हम कहते हैं गुरु का आगमन।

गुरु की कृपा कोई आकस्मिक घटना नहीं है। यह असंख्य जन्मों के संचित पुण्यों का परिणाम है। जब साधक भीतर से तैयार हो जाता है, तब गुरु के दर्शन होते है और यह दर्शन केवल किसी व्यक्ति से मिलना नहीं है, यह एक दिशा से मिलना है, एक प्रकाश से जुड़ना है।

गुरु केवल ज्ञान नहीं देते, वे जीवन को दिशा देते हैं। गुरु केवल मार्ग नहीं दिखाते, वे उस मार्ग पर चलने की शक्ति भी देते हैं और सबसे बड़ी बात, गुरु केवल कर्मों का फल नहीं दिलाते, वे कर्मों के बंधन से मुक्त होने का मार्ग भी बताते हैं।

इसलिए कहा गया 'गुरुसन्तोषमात्रतः...', जब गुरु प्रसन्न होते हैं, तो वर्षों का प्रयास क्षण में फलित हो जाता है। और गुरु को प्रसन्न करना कठिन नहीं है। वह केवल बाहरी सेवा से नहीं, बल्कि भीतरी निष्ठा, श्रद्धा, और समर्पण से होता है। जब यह समर्पण जागृत हो जाता है, तब असंख्य जन्मों का संचित तप एक साथ फल देने लगता है।

शरीरमिन्द्रियं प्राणाश्चार्थः स्वजनबन्धुता।
मातृकुलं पितृकुलं गुरुरेव न संशयः।।

शरीर, इन्द्रियां, प्राण, धन, अपने लोग यहां तक कि माता-पिता का कुल भी सब कुछ गुरु में ही स्थित है, इसमें कोई संदेह नहीं है।

जय-जय-जय महादेव
जय-जय-जय गुरुदेव

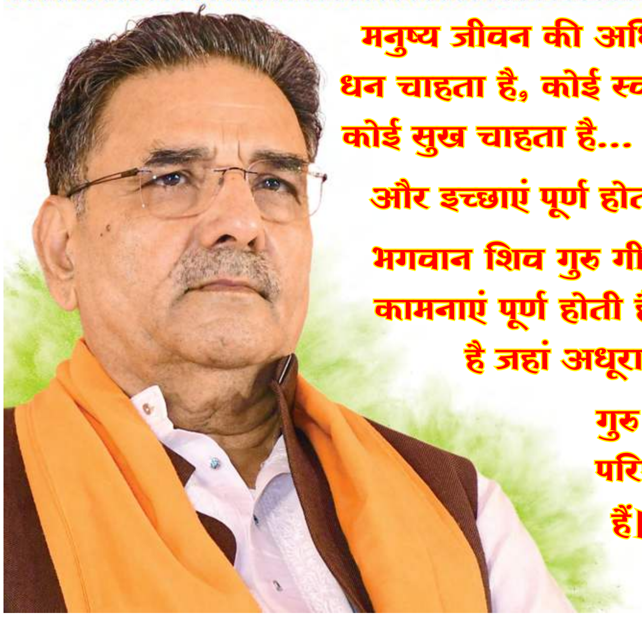

मनुष्य जीवन की अधिकांश दौड़ इच्छाओं की पूर्ति के लिए है कोई धन चाहता है, कोई स्वास्थ्य चाहता है, कोई सम्मान चाहता है और कोई सुख चाहता है...

और इच्छाएं पूर्ण होती है गुरु कृपा से...

भगवान शिव गुरु गीता में स्पष्ट कहते है कि गुरु कृपा से न केवल कामनाएं पूर्ण होती हैं, बल्कि साधक उस अवस्था को प्राप्त करता है जहां अधूरापन समाप्त हो जाता है।

गुरु केवल इच्छित वस्तु नहीं देते, वे इच्छाओं को परिष्कृत कर जीवन को पूर्णता की ओर ले जाते हैं। यही गुरु कृपा का गूढ़ रहस्य है...

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

शिष्य श्रद्धा, समर्पण और आत्म जागरण का महापर्व

शिष्य का हृदय जब श्रद्धा से भर जाता है, तब गुरु की कृपा सहज रूप से प्रवाहित होने लगती है।

गुरु कृपा कोई चमत्कार नहीं, बल्कि चेतना का जागरण है। जिस प्रकार सूर्य सदैव प्रकाश देता है, किन्तु बंद खिड़की वाले घर में प्रकाश नहीं पहुंचता, उसी प्रकार गुरु की कृपा सदैव उपलब्ध है। गुरु को श्रद्धा और विनम्रता से हृदय में सदैव धारण करना, शिष्य का अहोभाग्य है।

इस धरा का सबसे अधिक पवित्र, दिव्य और आत्मिक सम्बन्ध है - गुरु और शिष्य का सम्बन्ध। गुरु-शिष्य का सम्बन्ध मात्र ज्ञान के आदान-प्रदान का सम्बन्ध नहीं है, **गुरु-शिष्य का सम्बन्ध तो चेतना के जागरण, आत्मा के विकास और जीवन के अंधकार को प्रकाश में परिवर्तित करने का सम्बन्ध है। माता-पिता शरीर को जन्म देते हैं, किन्तु गुरु मनुष्य के भीतर छिपे हुए दिव्य पुरुष का जन्म कराते हैं।**

संसार में मनुष्य को धन देने वाले अनेक मिल सकते हैं, ज्ञान देने वाले भी मिल सकते हैं, किन्तु आत्मा को दिशा प्रदान करने वाले सद्गुरु का मिलना दुर्लभ होता है। इसी कारण सद्गुरुदेव को ब्रह्मा, विष्णु और महेश के समान पूजनीय माना गया है।

गुरु-शिष्य सम्बन्ध को पूर्णता प्रदान करने वाला पर्व गुरु पूर्णिमा है। गुरु पूर्णिमा केवल पर्व नहीं, बल्कि जीवन में प्रकाश देने वाले गुरु के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर है। यह वह दिन है जब शिष्य अपने गुरु के प्रति श्रद्धा, सेवा, समर्पण और प्रेम व्यक्त करता है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि जीवन में चाहे कितना भी ज्ञान, पद, प्रतिष्ठा और सामर्थ्य प्राप्त हो जाए, यदि मार्गदर्शन करने वाला गुरु न हो तो मनुष्य भीतर से अधूरा रह जाता है।

गुरु का वास्तविक अर्थ केवल अध्यापक नहीं है। 'गु' का अर्थ अंधकार और 'रु' का अर्थ प्रकाश कहा गया है। जो अज्ञानरूपी अंधकार को हटाकर ज्ञान का प्रकाश उत्पन्न करे वही गुरु है। संसार में अनेक लोग जानकारी देते हैं, परन्तु **गुरु वह होता है जो जीवन का रहस्य समझाता है। गुरु केवल पुस्तक का ज्ञान नहीं देता, वह आत्मा की दिशा बदल देता है।** वह व्यक्ति के भीतर सोई हुई शक्ति को जाग्रत करता है। वह केवल यह नहीं बताता कि क्या करना है, बल्कि यह भी सिखाता है कि क्यों करना है और किस भावना से करना है।

जीवन की अनजानी राह

मनुष्य का जीवन अनेक भ्रमों, भय, इच्छाओं और संघर्षों से भरा होता है। कभी वह मोह में फंस जाता है, कभी क्रोध में, कभी निराशा में और कभी अहंकार में। ऐसे समय गुरु जीवन के पथप्रदर्शक बनते हैं। जिस प्रकार घने अंधकार में दीपक मार्ग दिखाता है, उसी प्रकार गुरु जीवन की कठिन परिस्थितियों में सही दिशा प्रदान करते हैं। **गुरु केवल उपदेश नहीं देते है, वे अपने वचनों से, नेत्रों से, मौन से अपनी तपस्या के बल से शिष्य का मार्ग प्रशस्त करते है।**

महाभारत में अर्जुन जैसे महान योद्धा भी युद्धभूमि में

जीवन से निकली जीवन की बातें
आप इन बातों पर विचार करें

- ☆ सब कुछ गलत हो तो भी खुद पर विश्वास रखिए। ऐसे ही आगे बढ़ सकेंगे... चीजों को समझना जरूरी है, उनसे डरना नहीं।
- ☆ जिन्दगी में सफल होने के लिए न तो यह जानने में ज्यादा उत्सुक हों कि दूसरे क्या सोच रहे हैं, न ही चीजों में रुचि दिखाएं लेकिन नए आइडिया या किसी नए विचार की खोज करिए। कुछ नया करने से ही आगे बढ़ने का रास्ता बनेगा। प्रसिद्धि मिलेगी।
- ☆ दुनिया में ऐसी कोई भी चीज नहीं जिससे डरने की जरूरत है। फिलहाल जरूरत सिर्फ चीजों को सही तरीके से समझने की है। इससे डर कम होगा।
- ☆ आगे बढ़ने का रास्ता न ही आसान होता है और न छोटा, पर नतीजे अच्छे मिलते हैं।
- ☆ उस वक्त तक डरने की कोई जरूरत नहीं है जब तक आप जानते हैं कि जो कर रहे हैं वह बिल्कुल सही है। उससे किसी को नुकसान नहीं पहुंच रहा है।
- ☆ उन लोगों में से एक बनिए जिन्हें कर्म में ही सुन्दरता दिखती है।
- ☆ दुनिया में ऐसे लोगों की कोई कमी नहीं जो सिर्फ गलतियां निकालने की कोशिश करते हैं, न कि सत्य की तलाश करते हैं। ऐसा हर जगह है।
- ☆ कम ही लोग इस बात की तरफ ध्यान देते हैं कि क्या हो चुका है, जबकि ज्यादातर लोगों की रुचि इस बात में रहती है कि क्या बाकी रह गया है?
- ☆ किसी भी व्यक्ति के लिए जीवन आसान नहीं है तो फिर क्या किया जाए? इससे बाहर निकलने का एक ही रास्ता है, खुद पर विश्वास रखिए। हर व्यक्ति को सोचना चाहिए कि भगवान ने उन्हें कोई न कोई खास तोहफा दिया है और उस तोहफे को बनाए रखना है।

मोह और भ्रम से भर गये थे। उनके हाथ कांपने लगे, मन विचलित हो गया और उन्होंने अपने शस्त्र डाल दिये। उस समय जगद्गुरु श्रीकृष्ण ने गीता का ज्ञान दिया। गुरु ज्ञान को प्राप्त कर अर्जुन पुनः धर्मयुद्ध को लड़ने के लिये तैयार हुए।

सद्गुरु मनुष्य की सुप्त चेतना को जाग्रत करते है

सद्गुरु केवल शिक्षा नहीं देता, वह शिष्य को स्वयं से मिलाते है। संसार मनुष्य को बाहर की वस्तुओं में उलझाता है, जबकि सद्गुरु भीतर की यात्रा कराते है। संसार कहता है कि सुख, आनन्द बाहर है, गुरु कहता है कि आनन्द भीतर है। संसार मनुष्य को प्रतियोगिता सिखाता है, गुरु उसे प्रेम और संतुलन सिखाते है। संसार शरीर को सजाता है, गुरु आत्मा को संवारते है।

सद्गुरु शिष्य के कमजोर पहलूओं को न केवल मजबूत करते है बल्कि मजबूत पहलूओं को भी सही दिशा प्रदान करते है। **सद्गुरु शिष्य के विचारों को उचित दिशा और सकारात्मकता से परिपूर्ण करते हैं।**

विचार ही कर्म बनते हैं और कर्म ही भाग्य का निर्माण करते हैं। यदि विचार दूषित हों तो जीवन अशांत हो जाता है। सद्गुरु शिष्य को सकारात्मक, सात्त्विक और उच्च विचारों की ओर ले जाते है।

सद्गुरु द्वारा शिष्य को आत्मविश्वास

सद्गुरु शिष्य की आत्मिक शक्ति को जाग्रत करते है। सामान्यतः मनुष्य स्वयं को कमजोर समझता है, जबकि उसके भीतर असीम शक्ति छिपी होती है। सद्गुरु उस शक्ति का बोध कराते है। वह बताते है कि मनुष्य केवल शरीर नहीं, बल्कि चेतना है। जब यह अनुभूति जागती है तो जीवन का दृष्टिकोण ही बदल जाता है।

सद्गुरु शिष्य को बाधाओं, परेशानियों, संकटों से लड़ने की शक्ति देते है। जीवन है तो जीवन में दुःख, हानि, अपमान और संघर्ष आते ही रहते है। साधारण व्यक्ति टूट जाता है, किन्तु **सद्गुरु का शिष्य भीतर से इतना मजबूत होता है कि वह विपरित परिस्थितियों में भी सत्य, धैर्य और विवेक के साथ आगे बढ़ता हुआ सफलता को प्राप्त कर लेता है। सद्गुरु केवल सुख में साथ नहीं देते, सद्गुरु तो शिष्य के दुःख में आशा का दीप बन जाते है।**

सद्गुरु : निरन्तर मार्ग दर्शन

सद्गुरु शिष्य को धर्म-अधर्म, सत्य-असत्य, क्रोध-शांति, अधैर्य-धैर्य जैसे सूक्ष्म विषयों के मध्य श्रेष्ठता के साथ आगे बढ़ने का मार्ग बतलाते है। देश-काल, परिस्थिति के अनुसार **सद्गुरुदेव शिष्य को उचित-अनुचित मार्गों को चुनने की शक्ति प्रदान करते है। सद्गुरु केवल नियम-कायदे नहीं बताते है बल्कि जीवन में आत्म सम्मान का पाठ पढ़ाते है।**

इसी कारण आध्यात्मिक गुरु का महत्व शिक्षक गुरु और धर्मगुरु से अधिक माना गया है। शिक्षक व्यक्ति को संसार में सफल बनाता है, किन्तु आध्यात्मिक गुरु उसे स्वयं पर विजय प्राप्त करना सिखाता है। शिक्षक बुद्धि का विकास करता है, परन्तु आध्यात्मिक गुरु चेतना का विस्तार करता है। शिक्षक परीक्षा में उत्तीर्ण कराता है, परन्तु गुरु जीवन की परीक्षा में स्थिर रहना सिखाते है।

सद्गुरु शिष्य को केवल धार्मिक कर्मकाण्ड तक सीमित नहीं रखते, बल्कि शिष्य को धर्म की आत्मा से साक्षात्कार कराते है, धर्म का मर्म समझाते है, धर्म के आचरण का ज्ञान प्रदान करते है, धर्म को जीवन का स्वरूप बनाने का ज्ञान प्रदान करते है। **सद्गुरु शिष्य को आत्मा की शुद्धि, आत्मा पर छाये दोष को शुद्ध करने वाली साधना सम्पन्न करवाते है।** इसी कारण कबीरदास जी ने कहा कि -

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दियो बताय।।

गुरु - शिष्य : सृष्टि का श्रेष्ठ सम्बन्ध

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध अत्यन्त आत्मीय और पवित्र होता है, मात्र औपचारिक सम्बन्ध नहीं होता। गुरु-शिष्य सम्बन्ध में विश्वास, श्रद्धा, समर्पण और प्रेम का आधार होता है। शिष्य गुरु के प्रति केवल सम्मान नहीं रखता, बल्कि गुरु के मार्गदर्शन में स्वयं को बदलने का प्रयास करता है। **सद्गुरु शिष्य को केवल साधक नहीं मानते, बल्कि अपने आत्मिक परिवार का अंग समझते है।**

श्रद्धावान लभ्यते ज्ञानम्

शिष्य का सबसे बड़ा गुण श्रद्धा है। श्रद्धा अंधविश्वास नहीं, बल्कि विश्वासपूर्वक ग्रहण करना है। जिस शिष्य में श्रद्धा नहीं होती, वह गुरु के ज्ञान को वास्तविक अनुभव नहीं कर पाता। जैसे बंद पात्र में जल नहीं भरा जा सकता, वैसे ही अहंकार से भरे व्यक्ति में ज्ञान नहीं ठहरता।

श्रद्धावांल्लभते ज्ञानं तत्परः संयतेन्द्रियः।
ज्ञानं लब्ध्वा परां शान्तिमचिरेणाधिगच्छति।।

शिष्य का धर्म

शिष्य को गुरु वचनों को जीवन में उतारना चाहिये। केवल चरण स्पर्श करने या पूजा करने से गुरु प्रसन्न नहीं होते। गुरु की वास्तविक पूजा उनके ज्ञान को व्यवहार में लाना है।

शिष्य को सेवा भाव रखना चाहिये। सेवा से अहंकार गलता है और विनम्रता आती है। **गुरु सेवा का उद्देश्य केवल सुविधा नहीं, बल्कि शिष्य के भीतर नम्रता और प्रेम का विकास करना होता है।**

शिष्य को सत्य और अनुशासन का पालन करना चाहिये। असंयमित और असत्य से भरा शिष्य गुरु ज्ञान का पात्र नहीं बन सकता। गुरु का ज्ञान केवल सुनने के लिये नहीं, बल्कि जीने के लिये होता है।

शिष्य को गुरु के प्रति कृतज्ञ होना चाहिये। सामान्य मनुष्य थोड़ी सी सफलता मिलते ही अपने मूल को भूल जाते हैं। किन्तु सच्चा शिष्य सदैव स्मरण रखता है कि उसके जीवन में जो प्रकाश आया है, उसमें गुरु का योगदान है।

गुरु पूर्णिमा का पर्व इसी कृतज्ञता का उत्सव है। इस दिन शिष्य सद्गुरु के चरणों में प्रणाम कर, पूजन कर, यह स्वीकार करता है कि उसके जीवन में जो भी श्रेष्ठ है, वह गुरु की कृपा और मार्गदर्शन से सम्भव हुआ है। यह दिन केवल बाहरी उत्सव का नहीं, बल्कि आत्ममंथन का भी दिन है। शिष्य को इस दिन पूरे परिवार सहित गुरु पूजन सम्पन्न कर गुरु ज्ञान को आत्मसात् करने का वचन लेना चाहिये।

गुरु पूर्णिमा 'गुरु' के प्रति कृतज्ञता प्रदर्शित करने का पर्व है। गुरु पूजन के माध्यम से शिष्य अपने अहंकार का त्याग कर अपना सर्वस्व गुरु चरणों में अर्पित कर देता है।

गुरु पूर्णिमा || ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः || 29 जुलाई 2026

गुरु पूर्णिमा
शक्ति सायुज्य निखिलेश्वर पूजन

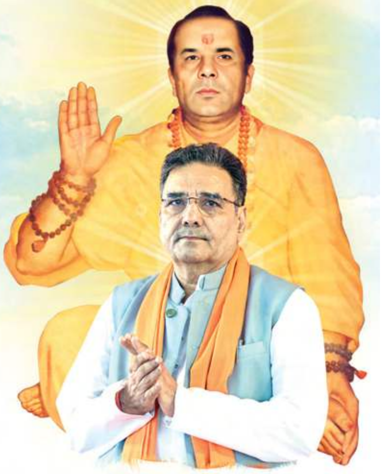

गुरु शिष्य के जीवन का प्रकाश हैं। वे केवल ज्ञानदाता नहीं, बल्कि आत्मा के जागरणकर्ता हैं। गुरु शिष्य को भय से निर्भयता, अज्ञान से ज्ञान, अशान्ति से आनन्द और सीमितता से अनन्तता की ओर ले जाते हैं।

गुरु पूर्णिमा का यह पर्व हमें स्मरण कराता है कि जीवन में यदि कोई सबसे बड़ा सौभाग्य है तो वह है सद्गुरु की प्राप्ति, सद्गुरु ज्ञान और सद्गुरु सेवा...

|| ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ||

गुरु पूर्णिमा निखिलेश्वर पूजन

गुरु पूर्णिमा के दिन घर में मंगलमय वातावरण होना चाहिए। गुरु पूजन सम्पन्न करने के लिए साधक को पहले से ही **'निखिल गुरु यंत्र'**, **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** तथा **'निखिल दिव्यत्व माला'** प्राप्त कर लेनी चाहिए। इसके अलावा पूजन की सभी निम्न सामग्रियों को भी एकत्र कर लें -

गंगा जल, धूप, दीप, अक्षत, कुंकुम, पुष्प, फल, नैवेद्य (मिठाई) तथा पंचामृत (दूध, दही, घी, शहद, शक्कर)।

साधना आरम्भ करने से पूर्व साधक स्वयं ही अपने पूजन कक्ष को साफ करें और स्नान आदि से निवृत्त हो कर स्वच्छ पीले वस्त्र धारण करें, गुरु चादर ओढ़ लें तथा अपने सामने बाजोट पर पीले रंग का वस्त्र बिछा कर उस पर किसी थाली या ताम्रपात्र में केसर से स्वस्तिक बना लें। साधक का मुंह पूर्व या उत्तर दिशा की ओर हो, अपने सामने धूप, दीप जला लें तथा पूजन की अन्य सामग्रियों को भी थाली में सजा कर अपने पास रख लें।

फिर अपने सामने बाजोट पर एक सुपारी में मौली बांध कर उसे पुष्पों का आसन देकर स्थापित करें। उसे गणपति मानते हुए दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का स्मरण करें और धूप, दीप, कुंकुम आदि समर्पित करते हुए मंगल कामना करें -

ॐ गजाननंभूत गणधिसेवितं,
कपित्थ जम्बू फल चारुभक्षणं।
उमासुतं शोक विनाश कारकं,
नमामि विघ्नेश्वर पादपंकजम्॥

भो! गणपते सांगं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकम् आवाहयामि स्थापयामि पूजयामि, अक्षतं धूपं दीपं पुष्पं नैवेद्यं च समर्पयामि ॐ गणाधिपतये नमः ॥

गणपति पूजन के पश्चात् दाहिने हाथ में जल लेकर विशिष्ट गुरु पूजन का संकल्प करें -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः आषाढ़ मासे पूर्णिमा तिथौ बुधवासरे (दिन व महीना) अमुक गोत्रीयः (अपना गोत्र बोलें) अमुक शर्माऽहं (नाम बोलें) सकल भौतिक उन्नति प्राप्ति निमित्तं आध्यात्मिक पक्ष सिद्धि निमित्तं अद्य अस्मिन् विशिष्टे दिवसे गुरु पूर्णिमा शुभ अवसरे पूर्णत्व प्राप्ति निमित्तं मन वचन कर्मणा अश्रुपूरित नेत्राभ्यां गुरु पूजनं सम्पर्ददे।

संकल्प करने के पश्चात् जल भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद थाली में गुलाब की पंखुड़ियों का आसन प्रदान कर, गुरु आह्वान करें -

पूर्वस्यां पूर्वा एतोस्मानं गुरुं आवाहयमि स्थापयामि नमः।

फिर गुरु प्रार्थना करें -

ॐ आवोदेवा परिमहे वमन्त तद्दरे।
आवोदेवा सवहै यज्ञियासो हवामहे॥

गुरु आह्वान के बाद **निखिल गुरु यंत्र** को उन पंखुड़ियों पर स्थापित करने के बाद गंगा जल अथवा शुद्ध जल से यंत्र को स्नान करायें -

ॐ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः स्वस्तिनस्तारिष्योऽरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु।

इसके पश्चात् **'निखिल गुरु यंत्र'** को दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से स्नान करायें -

दुग्ध स्नानं समर्पयामि नमः - दूध
दधि स्नानं समर्पयामि नमः - दही
घृत स्नानं समर्पयामि नमः - घी
मधु स्नानं समर्पयामि नमः - शहद
शर्करा स्नानं समर्पयामि नमः - शक्कर

इसके बाद पांचों चीजों को एक साथ मिला कर पंचामृत स्नान करायें -

ॐ पंचनद्यः सरस्वतीमपि यन्ति सस्त्रोतसः।
सरस्वती तु पंचधा सोदेशेऽभवत् सरित॥

यंत्र को शुद्ध जल से स्नान करा कर पौंछ लें फिर किसी दूसरी थाली में कुंकुम से स्वास्तिक बना कर बाजोट पर रख दें तथा उसमें गुरु यंत्र को स्थापित करें।

सर्वप्रथम यंत्र को तिलक लगायें -

ॐ नमो स्त्वनताेय सहस्त्रमूर्तये, सहस्र पादाक्षिषिरोरूबाहवे। सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्र कोटि युग धारिणे नमः॥

अक्षत समर्पित करें -

ॐ अक्षन्नमी मदन्त ह्यवऽप्रियाऽअधूषत।
अस्तोषत स्वभावनो विप्रान्
विष्ठयामती योजान् विन्दते हरी॥

फिर यंत्र पर पुष्प या पुष्प माला समर्पित करें -

सुमाल्यानि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो!
मया दत्तानि पूजार्थं पुष्पाणि प्रतिह्यताम्॥

यंत्र पर पुनः अक्षत चढ़ायें -

ॐ अक्षन्तात् पूर्वा स दीर्घो स
पूर्वोस्मात् एतोस्मानं स कुर्यात्।
अक्षतान् समर्पयमि नमः॥

अब अपने दाहिने हाथ में मंत्रसिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त **'पंचमुखी रुद्राक्ष'** के ऊपर त्रिताप नाश के लिए तीन बार कुंकुम से तिलक करें, फिर उसे दाहिने हाथ की मुट्ठी में बंद करके अपनी आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति एवं गुरु कृपा की प्राप्ति के लिए चिन्तन करते हुए यंत्र पर चढ़ा दें -

त्रितापनाशकं स एतोस्मान्
मांगल्यं फलं समर्पयामि नमः॥

धूपं आघ्रापयामि नमः -धूप दिखाइये।
दीपं दर्शयामि नमः -दीप दिखाइये।

दोनों हाथ जोड़ें -

भो! दीप! सूर्य रूपस्त्वं अन्धकार निवारक!
मम हृदये पूर्णत्वं प्रकाशं भव सर्वदा॥

यज्ञोपवीत समर्पित करें -

यज्ञोपवीत इति सुतलं छन्दः यज्ञोपवीत धारणे

विनियोग -

यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं, प्रजापते यत् सहजं पुरस्तात्।
आयुष्यमग्रं प्रतिमुंच, यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

नैवेद्य और फल अर्पित करें -

नैवेद्यं निवेदयामि स एतोस्मानम् फलं
समर्पयामि नमः॥

फिर पुष्प समर्पित करें -

नाना सुगन्ध पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च।
पुष्पाणि मया दत्तं गृहाण परमेश्वर॥
पुष्पाञ्जलि समर्पयामि नमः॥

यंत्र के समक्ष हाथ जोड़, सिर झुका कर पूर्ण श्रद्धा एवं निष्ठा पूर्वक गुरु के मानस स्वरूप को प्रणाम करें। फिर पूज्य गुरुदेव से प्रार्थना करें -

त्वं मातृ रूपं त्वं पितृ रूपं,
ब्रह्म स्वरूपं रूद्र स्वरूपम्।
विष्णु स्वरूपं वेद स्वरूपं
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यम्॥
न जानामि मंत्रं न जानामि तंत्रं,
न योगं न पूजां न ध्यानं वदामि।
न जानामि चैतन्य ज्ञानं स्वरूपं,
एकोहि रूपं गुरुत्वं शरण्यम्॥
अनाथो दरिद्रो जरा रोग युक्तो,
महाक्षीणकायः सदा जाड्यवक्त्रः।
विपत्ति प्रविष्ट सदाहं भजामि,
गुरुत्वं शरण्यं, गुरुत्वं शरण्यम्॥
मम अश्रु अर्घ्यं देहं च पात्रं,
ज्ञानं च ज्योतिर्भवतां सदेव।
मम संसदि पूर्ण समर्पयामि,
गुरुत्वं शरण्यं गुरुत्वं शरण्यम्॥

मम पूर्ण शरीरं त्वां देहत्वं एतोस्मानं स पूर्णत्व सिद्ध च्ये मम अश्रु पूर्ण नेत्राभ्यां त्वां गुरुपूजनंच मम करिष्ये त्वां चरणे पूर्णत्व प्राप्ताय निमित्तं सर्वसुखसौभाग्यं धन धान्य ऐश्वर्य प्रतिष्ठा पूर्ण मनोकामना सिद्धाय स तुभ्यं सम्पर्ददे।

इसके बाद **गुरु सिद्ध दिव्यत्व माला** से निम्न मंत्र का 11 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

ॐ निं निखिलेश्वराय गुरुत्वं सिद्धये निं ॐ॥

मंत्र जप के पश्चात् पूरे परिवार सहित गुरु आरती और समर्पण स्तुति अवश्य सम्पन्न करें। इस प्रकार गुरु पूर्णिमा का यह पूजन विधान सम्पन्न होता है।

गुरुत्व शक्ति के प्रतीक पंचमुखी रुद्राक्ष को पूजन सम्पन्न करने के पश्चात् जलभरे छोटे कलश में रखें तथा उस जल को परिवार के सभी सदस्यों में चरणामृत के रूप में बांट दें। गुरु को समर्पित नैवेद्य को भी पूरे परिवार में बांट दें तथा स्वयं भी ग्रहण करें। गुरु पूजन की यह सामग्री अपने पूजा स्थान में ही स्थापित रखें और महीने में एक बार पूर्ण विधि-विधान सहित गुरु पूजन अवश्य करें। गुरु मंत्र के अतिरिक्त ऊपर वर्णित निखिल मंत्र का भी जप अवश्य करें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 650 /-

गुरु समर्पण स्तुति

अब सौप दिया इस जीवन का
सब भार तुम्हारे हाथों में।
है जीत तुम्हारे हाथों में
और हार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ....

मेरा निश्चय बस एक यही,
इक बार तुम्हें पा जाऊं मैं।
अर्पण कर दूं दुनियां भर का,
सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ....

जो जग में रहूं तो ऐसे रहूं,
ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण दोष समर्पित हों,
भगवान तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ....

यदि मानव का मुझे जनम मिले,
तो तब चरणों का पुजारी बनूं।
इस पूजक की इक-इक रग का,
हो तार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ....

जब-जब संसार का कैदी बनूं,
निष्काम भाव से कर्म करूं।
फिर अन्त समय में प्राण तजूं,
साकार तुम्हारे हाथों में॥
अब सौंप दिया ....

मुझ में तुझ मे बस भेद यही,
मैं नर हूं तुम नारायण हो।
मैं हूं संसार के हाथों में,
संसार तुम्हारे हाथों में।
अब सौंप दिया ....

तंत्र शक्ति

सदुपयोग और दुरुपयोग : आध्यात्मिक विवेचन
तंत्र : बाधा नहीं, मुक्ति का मार्ग

तंत्र भारतीय आध्यात्मिक विज्ञान परम्परा का एक दिव्य विज्ञान है, जो भगवान शिव और आदिशक्ति के आशीर्वाद से मानव कल्याण हेतु प्रकट हुआ।

तंत्र का उद्देश्य चेतना का विकास, शक्ति का जागरण और जीवन को उच्चता प्रदान करना है। किन्तु जब इस दिव्य शक्ति का उपयोग स्वार्थ, ईर्ष्या अथवा किसी के जीवन में अवरोध उत्पन्न करने के लिए किया जाता है, तब वशीकरण, कीलन जैसी तांत्रिक बाधाएं जन्म लेती हैं।

साधक तंत्र का प्रयोग किसी को कष्ट पहुंचाने के लिए नहीं करते, बल्कि शिव-शक्ति की कृपा से ऐसी बाधाओं का निवारण कर लोककल्याण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

यह लेख तंत्र के वास्तविक स्वरूप, उसके सदुपयोग-दुरुपयोग तथा तांत्रिक अवरोधों से मुक्ति के आध्यात्मिक उपायों का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है।

तंत्र एक अत्यन्त ही गूढ़, वैज्ञानिक और दिव्य वैज्ञानिक साधना पद्धति है। वर्तमान में तंत्र शब्द को लेकर समाज में अनेक भ्रांतियां हैं। साधारण जानकारी वाले लोग तंत्र को केवल जादू-टोना, वशीकरण, उच्चाटन, कीलन अथवा किसी को कष्ट पहुंचाने वाली क्रिया के रूप में देखते हैं, जबकि वास्तविकता इससे बिल्कुल भिन्न है। **तंत्र का मूल स्वरूप शिव और शक्ति की उपासना पर आधारित एक दिव्य विज्ञान है, जिसका उद्देश्य मानव जीवन को उच्चता, सामर्थ्य, जागृति और मुक्ति प्रदान करना है।**

तंत्र का प्रकटीकरण स्वयं भगवान शिव से माना गया है। शिव ने आदिशक्ति पार्वती को जो दिव्य ज्ञान प्रदान किया, वही आगे चलकर तंत्र के रूप में प्रसिद्ध हुआ। इसीलिए तंत्र को शिव-शक्ति संवाद का विज्ञान भी कहा जाता है। इसमें जीवन की समस्याओं का समाधान, शक्ति का संतुलन और साधक की चेतना को ऊंचा उठाने की क्षमता निहित है।

तंत्र स्वयं में पूर्ण विज्ञान है, शक्ति है, एक प्रणाली है, एक विधान है। जैसे अग्नि भोजन भी पका सकती है और घर भी जला सकती है, वैसे ही तंत्र का उपयोग साधक की भावना और उद्देश्य के अनुसार होता है। यदि तंत्र का प्रयोग आत्मविकास, लोककल्याण और आध्यात्मिक उन्नति के लिए किया जाए तो वह वरदान बन जाता है, और यदि उसका प्रयोग स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष या किसी को कष्ट देने के लिए किया जाए तो वही तंत्र विनाशकारी परिणाम भी उत्पन्न कर सकता है।

तंत्र के क्षेत्र में शरीर सर्वोपरि है। इस जीवन में समस्त रस, सारे सुख तन के द्वारा ही अनुभव किए जाते हैं। जब आप समस्याओं से घिरते हैं, गुप्त शत्रु आपको त्रास देते हैं, आर्थिक कष्ट झेलते हैं, बने हुए कार्य बिगड़ने का संताप झेलते हैं, उस क्षण आप जो व्यथा, परेशानी अनुभव करते हैं, वे उतनी ही सच्ची हैं, जितना आपका अस्तित्व और यह व्यथा तन+मन दोनों को कष्ट देती है।

सिद्ध साधक तंत्र का प्रयोग किसी के जीवन में बाधा उत्पन्न करने के लिए नहीं करते। उनका उद्देश्य सदैव संरक्षण, भौतिक उन्नति, सफलता, कल्याण और आध्यात्मिक उत्थान होता है। वे तंत्र की शक्ति का उपयोग रोग, भय, ग्रहबाधा, नकारात्मकता और जीवन के अवरोधों को दूर करने के लिए करते हैं।

तंत्र का सर्वोच्च उद्देश्य मनुष्य को बंधनों से मुक्त करना है, न कि उसे किसी नए बंधन में जकड़ना।

तंत्र का विशुद्ध स्वरूप -

तंत्र वह व्यवस्था है जो चेतना का विस्तार करे, शक्ति का विस्तार करे और जीवन को सीमाओं से निकालकर अनंत संभावनाओं की ओर ले जाए।

तंत्र एक सम्पूर्ण प्रणाली है जिसमें मंत्र, यंत्र, ध्यान, साधना, ऊर्जा-संतुलन, देवता-उपासना, चक्र-जागरण, प्राणशक्ति और आत्मबोध सम्मिलित हैं। तंत्र का उद्देश्य मनुष्य को उसकी सुप्त शक्तियों से परिचित कराना है।

तंत्र का दुरुपयोग

दुर्भाग्यवश कुछ लोग तंत्र की शक्तियों का उपयोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थों के लिए करने लगते हैं। जब साधना का उद्देश्य स्वयं की उन्नति न होकर किसी अन्य व्यक्ति को प्रभावित करना, नियंत्रित करना या हानि पहुंचाना बन जाता है, तब तंत्र का दुरुपयोग प्रारम्भ हो जाता है।

जबकि तंत्र शास्त्रों में स्पष्ट है कि जो शक्ति दूसरों को कष्ट देने के लिए प्रयुक्त होती है, उसका प्रतिफल किसी न किसी रूप में कर्ता को भोगना ही पड़ता है। इसलिए उच्चकोटि के तांत्रिक और सिद्ध साधक कभी भी ऐसी क्रियाओं में प्रवृत्त नहीं होते।

तांत्रिक बाधाएं क्या हैं?

जब किसी व्यक्ति के जीवन में बिना किसी स्पष्ट कारण के लगातार अवरोध उत्पन्न होने लगें, निर्णय क्षमता कमजोर हो जाए, मानसिक भ्रम बढ़ जाए, कार्य बार-बार असफल होने लगें, परिवार में अनावश्यक कलह होने लगे अथवा व्यक्ति की ऊर्जा लगातार गिरती चली जाए, तब आध्यात्मिक दृष्टि से इसे तांत्रिक बाधाओं की श्रेणी में भी देखा जाता है।

तांत्रिक बाधाएं अनेक प्रकार की हो सकती हैं, किन्तु उनमें दो प्रमुख बाधाएं मानी गई हैं -

1. वशीकरण **2. कीलन**

आध्यात्मिक दृष्टि से सबसे बड़ा वशीकरण अपने मन का वशीकरण है। जिसने अपने मन, इन्द्रियों, वासनाओं और अहंकार को वश में कर लिया, वही वास्तविक वशीकरण का अधिकारी है।

किन्तु जब इस शक्ति का उपयोग किसी अन्य व्यक्ति की स्वतंत्र इच्छा को प्रभावित करने के लिए किया जाता है, तब यह अनुचित दिशा में चला जाता है।

वशीकरण का प्रभाव

- ❑ वशीकरण के कारण व्यक्ति निर्णय लेने में भ्रमित हो सकता है।
- ❑ गलत लोगों के प्रभाव में आ सकता है।
- ❑ अपने वास्तविक लक्ष्यों से भटक सकता है।
- ❑ परिवार और शुभचिंतकों से दूरी बना सकता है।
- ❑ मानसिक अस्थिरता अनुभव कर सकता है।
- ❑ जीवन की दिशा खो सकता है।
- ❑ वशीकरण का सबसे बड़ा दुष्प्रभाव यह है कि व्यक्ति की स्वतंत्र चेतना कमजोर होने लगती है। उसकी ऊर्जा का प्रवाह बाधित हो जाता है और वह अपने वास्तविक सामर्थ्य का उपयोग नहीं कर पाता।

कीलन तंत्र क्रिया

तांत्रिक बाधाओं में दूसरा प्रमुख प्रकार है कीलन। 'कील' का अर्थ होता है किसी वस्तु को स्थिर कर देना। आध्यात्मिक अर्थ में कीलन का तात्पर्य है किसी व्यक्ति की प्रगति, ऊर्जा, प्रतिभा या कार्यक्षमता को बांध देना।

ऐसे व्यक्ति में योग्यता होने के बावजूद सफलता नहीं आती। अवसर सामने आते हैं लेकिन अंतिम क्षण में छूट जाते हैं। परिश्रम करने के बाद भी परिणाम नहीं मिलते।

कीलन के प्रभाव

- ❑ कीलन के प्रभाव से कार्यों में बार-बार विघ्न आते हैं।
- ❑ आर्थिक प्रगति रुक सकती है।
- ❑ व्यापार में अचानक अवरोध आ सकते हैं।
- ❑ शिक्षा और करियर में रुकावटें उत्पन्न हो सकती हैं।
- ❑ व्यक्ति की ऊर्जा क्षीण हो सकती है।
- ❑ आध्यात्मिक साधना में बाधाएँ आ सकती हैं।
- ❑ यह ऐसा है जैसे किसी नदी के प्रवाह पर बांध बना

दिया जाए। नदी का जल समाप्त नहीं होता, पर उसका प्रवाह अवरुद्ध हो जाता है।

शिव और शक्ति की कृपा किसी भी नकारात्मक शक्ति से अधिक प्रबल है। इसलिए वह प्रतिशोध नहीं लेता, बल्कि अपने आध्यात्मिक बल को बढ़ाता है। भगवान शिव को तंत्र का आदि गुरु कहा गया है। समस्त तंत्र शास्त्र का उद्गम शिव से माना जाता है।

जहां शिव चेतना हैं, वहीं शक्ति क्रिया हैं। शक्ति के बिना कोई भी साधना पूर्ण नहीं होती। जब साधक शक्ति की शरण में जाता है, तब उसके भीतर आत्मबल, साहस और तेज का विकास होता है। नकारात्मक प्रभाव उसके निकट टिक नहीं पाते।

शक्ति उपासना का मूल उद्देश्य किसी को हराना नहीं, बल्कि स्वयं को इतना सशक्त बनाना है कि कोई नकारात्मकता प्रभावित न कर सके।

तांत्रिक बाधाओं का सर्वोत्तम समाधान -

❒ नियमित साधना, ❒ गुरु कृपा, ❒ शिव उपासना, ❒ शक्ति साधना, ❒ मंत्र जप और ❒ सकारात्मक चिंतन

जब साधक अपनी ऊर्जा को ऊँचा उठाता है, तब निम्न स्तर की बाधाएं स्वतः समाप्त होने लगती हैं।

तांत्रिक बाधाओं से रक्षा में गुरु का स्थान सर्वोपरि है। गुरु साधक को अपनी चेतना से जोड़ते हैं। गुरु का आशीर्वाद एक अदृश्य कवच की भांति कार्य करता है।

जब साधक गुरु के प्रति श्रद्धा, विश्वास और समर्पण रखता है, तब अनेक प्रकार की बाधाएं उसके निकट आने से पहले ही समाप्त हो जाती हैं। गुरु की कृपा वह अग्नि है जो नकारात्मक संस्कारों, भय और बाधाओं को भस्म कर देती है।

तंत्र शिव और शक्ति का दिव्य विज्ञान है, जो मनुष्य को शक्तिशाली, जाग्रत और मुक्त बनाने के लिए प्रकट हुआ है। इसका मूल उद्देश्य जीवन को उच्चता प्रदान करना है, न कि किसी को कष्ट देना।

वशीकरण और कीलन जैसी तांत्रिक बाधाओं का उल्लेख परम्पराओं में मिलता है, किन्तु जब इसका प्रभाव आपके जीवन पर पड़ता है तो जीवन अस्त-व्यस्त हो जाता है, उस स्थिति में शिव की कृपा, शक्ति की उपासना, गुरु का संरक्षण और नियमित साधना किसी भी नकारात्मक प्रभाव को समाप्त कर सकती है।

तंत्र का वास्तविक स्वरूप विनाश नहीं, बल्कि संरक्षण है; बंधन नहीं, बल्कि मुक्ति है; अंधकार नहीं, बल्कि चेतना का प्रकाश है।

जब साधक शिव और शक्ति के चरणों में समर्पित होकर गुरु के आदेश अनुसार साधना करता है, तब उसके जीवन में ऐसी दिव्य ऊर्जा प्रवाहित होती है कि वशीकरण, कीलन और अन्य सभी प्रकार की बाधाएं स्वयं ही क्षीण होकर समाप्त हो जाती हैं। यही तंत्र का वास्तविक रहस्य और उसका परम कल्याणकारी स्वरूप है।

गुरु कृपा स्वरूप ही सूर्य ग्रहण (रात्रि 9 बजे से रात्रि 1 बजे) और हरियाली अमावस्या के सिद्ध मुहूर्म में तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना का प्रकाशन किया जा रहा है।

जिस साधना को सम्पन्न कर गलत उद्देश्य के आपके या आपके परिवार पर की गई तंत्र विद्याओं को आप समाप्त कर अपने लिये एक ऐसा सुरक्षा चक्र तैयार कर सकते है जो किसी भी प्रकार की तंत्र बाधाओं को समाप्त कर सकते है।

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना से साधक तंत्र सिद्धि के मार्ग में स्वयं को निरन्तर उच्च गति देता है।

तंत्र सिद्धि दिवस - 12 अगस्त 2026 - हरियाली अमावस्या

सूर्य ग्रहण (रात्रि 9 बजे से रात्रि 1 बजे)

क्या किसी ने आपकी शक्ति को बांध रखा है?

क्या आप हर समय निर्बल अनुभव करते हैं?

क्या आपकी प्रगति के मार्ग अवरुद्ध हो रहे हैं?

सम्पन्न करें

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना

अस्तित्व पर जब भी संकट आता है, उसका निराकरण तंत्र के द्वारा ही संभव है, क्योंकि तंत्र एक नपा-तुला, जांचा-परखा मार्ग है, जिसके द्वारा बाधाओं पर विजय प्राप्ति सम्भव है।

तन्यते विस्तार्यते ज्ञानम्, अनेन इत तंत्रम्।

तंत्र ज्ञान का विस्तार है और तंत्र तो ज्ञान पूर्वक आचरण करने वाले की रक्षा ही करता है।

हमारे जीवन में जो घटित हो रहा है वह सामान्य है अथवा असामान्य? सामान्य समस्याओं का हल तो सामान्य प्रयोगों से किया जा सकता है। किन्तु असामान्य समस्याओं का हल तो विशेष तंत्र प्रयोगों से ही संभव है और इस हेतु उच्चस्तरीय तंत्र साधनाएं सम्पन्न करनी होती हैं। इस हेतु गुरुदेव के मार्ग दर्शन में श्रेष्ठ उपाय है - **'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना'।**

तंत्र सिद्ध मुहूर्त में तंत्र तीव्र साधनाओं को सम्पन्न करने से शीघ्र सफलता प्राप्त होती है। गुप्त नवरात्रि तंत्र साधनाओं को सम्पन्न करने का साधनात्मक मुहूर्त है। इसके अतिरिक्त इस साधना को किसी भी तंत्र सिद्धि मुहूर्त अथवा अमावस्या को सम्पन्न किया जा सकता है।

तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना रात्रिकालीन साधना है, जिसे रात्रि को 10 बजे के पश्चात् सम्पन्न करें। इस साधना हेतु आवश्यक है - **तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र, 11 तांत्रोक्त फल** और **भैरवी माला** आवश्यक है।

मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठियुक्त **तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र** विशेष रौद्र शिव एवं त्रिपुरा शक्ति के मंत्रों से प्राण प्रतिष्ठित किया गया है। इस यंत्र के सामने जब साधक मंत्र जप करता है तो कैसा ही कीलन प्रयोग हुआ हो वह स्वतः ही समाप्त हो जाता है।

अपने सामने एक बाजोट पर लाल कपड़ा बिछा दें तथा उस लाल कपड़े पर कुंकुम से रंगे चावल और अष्टगन्ध फैला दें, उस पर एक पंक्ति में **तिल तथा सरसों** बराबर मात्रा में मिलाकर उनकी **11 ढेरियां** बनाएं तथा प्रत्येक ढेरी पर एक-एक **'तांत्रोक्त फल'** रख दें, अब इनके सामने ही **'तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र'** को दूध से धोकर एक ताम्र पात्र में स्थापित कर दें। यंत्र और तांत्रोक्त फल का पंचोपचार पूजन करें। सर्वप्रथम विनियोग करें -

विनियोग -

ॐ अस्य श्री सर्वयंत्रमंत्राणां उत्कीलनमंत्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृतिर्ऋषिर्जगतीच्छन्दः, निरंजनी देवता क्लीं बीजं हीं शक्तिः, हः लौं कीलकं सप्तकोटि मन्त्र यन्त्र तन्त्र कीलकानां संजीवन सिद्धर्थे जपे विनियोगः ।

विनियोग के पश्चात् त्रिपुर भैरवी का ध्यान निम्न मंत्र का जप करते हुए करें -

उद्यद्भानु सहस्र कांति मरुणा क्षौमां शिरोमालिकाम्। रक्तालिप्त पयोधरां जपपटीं विद्यामभीतिं वरम्। हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्र विलसद् वक्त्रार विन्द श्रियम्। देवी बद्ध हिमांशु रत्न मुकुटां वन्दे - स्मन्दस्मिताम्।

भगवती त्रिपुर भैरवी की देह कान्ति उदीयमान सहस्र सूर्यों की कांति के समान है। वे रक्त वर्ण के रेशमी वस्त्र धारण किए हुए हैं। उनके गले में मुण्ड माला तथा दोनों स्तन रक्त से लिप्त हैं। वे अपने हाथों में जप-माला, पुस्तक, अभय मुद्रा तथा वर मुद्रा धारण किए हुए हैं। उनके ललाट पर चन्द्रमा की कला शोभायमान है। रक्त कमल जैसी शोभा वाले उनके तीन नेत्र हैं। आपके मस्तक पर रत्न जटित मुकुट है तथा मुख पर मन्द मुस्कान है। भगवती त्रिपुर भैरवी के इस आपको मेरा प्रणाम स्वीकार हो।

अपने दाहिने हाथ से तांत्रोक्त उत्कीलन यंत्र को स्पर्श करते हुए निम्न मंत्रों का उच्चारण करें -

ॐ मण्डूकाय नमः ॐ कालाग्निरुद्राय नमः
ॐ मूलप्रकृत्यै नमः ॐ आधारशक्त्यै नमः
ॐ कूर्माय नमः ॐ अनन्ताय नमः
ॐ वाराहाय नमः ॐ पृथिव्यै नमः
ॐ सुधाम्बुधये नमः ॐ सर्वसागराय नमः
ॐ मणिद्विपाय नमः ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः
ॐ श्मशानाय नमः ॐ पारिजाताय नमः
ॐ रत्न वेदिकायै नमः ॐ मणिपीठाय नमः
ॐ नानामुनिभ्यो नमः ॐ शिवेभ्यो नमः
ॐ शिवमुण्डेभ्यो नमः
ॐ बहुमांसास्थिमोदमान शिवोभ्यो नमः
ॐ धर्माय नमः ॐ ज्ञानाय नमः
ॐ वैराग्याय नमः ॐ ऐश्वर्याय नमः
ॐ अधर्माय नमः ॐ अज्ञानाय नमः
ॐ अवराग्यानाय नमः ॐ अनैश्वर्याय नमः
ॐ आनन्दकन्दाय नमः ॐ सर्वतत्वात्मपद्माय नमः
ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः
ॐ पंचाशद्वर्णढ्यकर्णिकायै नमः
ॐ अर्कमण्डलाय नमः ॐ सोममण्डलाय नमः
ॐ महीमण्डलाय नमः ॐ सत्वाय नमः
ॐ रजसे नमः ॐ तमसे नमः
ॐ आत्मने नमः ॐ अन्तरात्मने नमः
ॐ परमात्मने नमः ॐ ज्ञानात्मने नमः
ॐ क्रियायै नमः ॐ आनन्दायै नमः
ॐ ऐं पारयै नमः ॐ परापरायै नमः
ॐ निरुधानाय नमः ॐ महारुद्र भैरवाय नमः ।।

मंत्र उच्चारण के पश्चात् मानसिक रूप से भगवान सदाशिव का ध्यान करें तथा भगवान सदाशिव से तंत्र बाधाओं से मुक्त कराने का निवेदन करें।

शिव के ध्यान के पश्चात् साधक **'त्रिपुर भैरवी माला'** से निम्न **भैरवी तंत्र उत्कीलन मंत्र** की एक माला जप करें।

मंत्र

ॐ हीं हीं हीं षट् पंचाक्षराणाम उत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ॐ जूं सर्वमन्त्र यन्त्र तन्त्राणां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा ।।

भैरवी उत्कीलन मंत्र पश्चात् साधक निम्न त्रिपुर भैरवी मंत्र की 3 माला मंत्र जप करें -

मंत्र

।।हसैं हसकरीं हसैं।।

मंत्र जप की पूर्णता पर शक्ति स्वरूपा त्रिपुरा से तंत्र बाधाओं की समाप्ति की प्रार्थना करें तथा समस्त साधना सामग्री को लाल कपड़े में बांधकर जल में विसर्जित कर दें।

अन्य किसी मुहूर्त पर साधना प्रारम्भ करने पर सात दिन तक नित्य साधना सम्पन्न करने के पश्चात् आठवें दिन समस्त साधना सामग्री को किसी निर्जन स्थान पर जमीन में गाड़ दें। यह विशेष तांत्रोक्त प्रयोग प्राण प्रतिष्ठित साधना सामग्री पर ही सम्पन्न किया जा सकता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

हे गुरुदेव! मैं इस संसार सागर में विभिन्न तंत्र प्रयोगों से ग्रसित हूं, मेरे कोई भी कार्य सिद्ध नहीं होते है। मेरे भीतर की तंत्र शक्ति शुष्क हो रही है और दूसरों के द्वारा तंत्र प्रयास से मेरा जीवन अस्त-व्यस्त हो रहा है। मेरी वाणी का कीलन हो गया है, मेरे मंत्र सार्थक नहीं हो पाते, मेरे द्वारा कहे गये शब्दों का प्रभाव नहीं पड़ता। मेरा मन, मेरा वचन, मेरी बुद्धि और मेरी शक्ति एक अदृश्य बंधन में बंध गई है। आप ही मेरे इन सब बन्धनों को एक प्रहार से नाश कर सकते है। आप ही मुझे पुनः स्वतंत्र व्यक्तित्व बना सकते है। जिससे मेरा तंत्र स्वयं का हो और मैं अपनी तंत्र शक्ति से अपने घर परिवार के लिये श्रेष्ठ गति से कर्म कर सकूं।

जब साधक की यह पुकार आती है तब गुरु उसे विशेष शक्तिपात करते है और वह शक्तिपात है 'तंत्र उत्कीलन' जिसे त्रिपुरा शक्ति संचरण उत्कीलन विद्या कही गई है।

तंत्र उत्कीलन
त्रिपुरा शक्ति दीक्षा

तंत्र की जटिल बाधाओं के समाधान सद्गुरुदेव के मार्गदर्शन में ही संभव है। 'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा' के माध्यम से सद्गुरुदेव शिष्य-साधक में तीव्र शक्ति प्रदान करते हैं।

- साधक के चारों ओर एक सुरक्षा कवच निर्मित होता है। यह कवच नकारात्मक शक्तियों, दुष्प्रभावों और अनिष्ट संकल्पों से रक्षा करता है।
- साधक की आन्तरिक शक्ति जागृत होती है। भीतर की दुर्बलता, भय, संशय और नकारात्मकता दूर कर आत्मविश्वास प्रदान करती है।
- कार्यों में गति आती है, निर्णय क्षमता बढ़ती है और रुके हुए कार्य आगे बढ़ने लगते हैं।
- जीवन में संतुलन स्थापित होता है। मानसिक तनाव, भय, असुरक्षा और निराशा का प्रभाव कम होने लगता है।
- अदृश्य अवरोधों का शमन होता है। इससे मंत्र सिद्धि, ध्यान और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग भी प्रशस्त होता है।

- तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा (प्रति चरण) - 3100/-

बिना दीक्षा और बिना उचित ज्ञान के तंत्र प्रयोग करना साधक के लिए हानिकारक भी हो सकता है

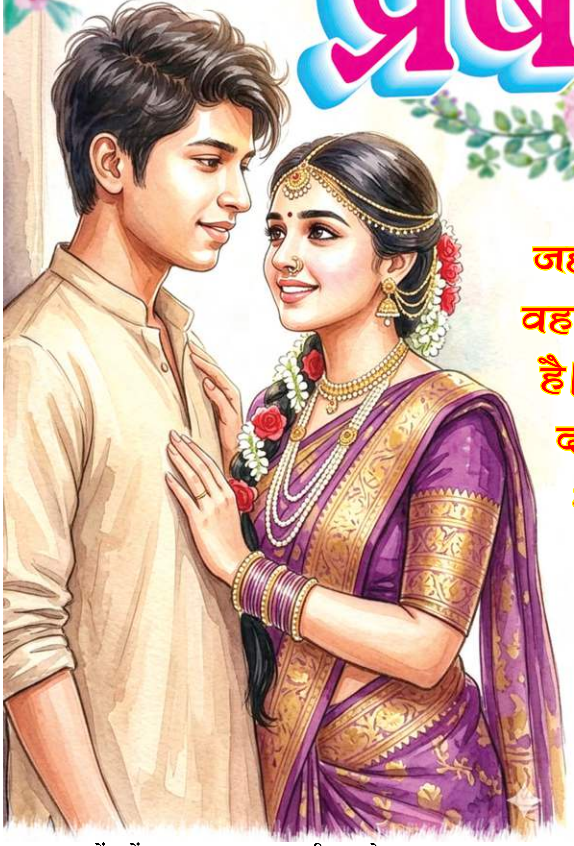

जीवन का आधार
प्रबल शुक्र

जहां प्रेम है, वहां शुक्र है। जहां कला है, वहां शुक्र है। जहां सुगंध है, वहां शुक्र है। जहां विनम्रता है, वहां शुक्र है। जहां दाम्पत्य में सम्मान है, वहां शुक्र है। जहां धन के साथ संस्कार हैं, वहां शुक्र है और जहां जीवन केवल जीया नहीं जाता, बल्कि रसपूर्वक, सौन्दर्यपूर्वक और कृतज्ञता के साथ अनुभव किया जाता है वहां निश्चित ही शुक्र की दिव्य उपस्थिति है।

नवग्रहों में शुक्र ग्रह अर्थात् भोर का तारा अत्यन्त प्रभावशाली ग्रह है। सूर्योदय से ठीक पहले पूर्व दिशा की ओर दृश्यमान शुक्र का जीवनमें उदय होना सूर्योदय के समय प्रकृति में छाई लालिमा के समान ही जीवन में सौन्दर्य, प्रेम, आकर्षण, धन, विलासिता, कला और दाम्पत्य सुख का उदय है। वैसे शुक्र का प्रभाव इससे कहीं अधिक व्यापक और गहन है। **शुक्र केवल भौतिक सुखों का कारक नहीं है, बल्कि यह जीवन में रस, कोमलता, सृजन, संवेदनशीलता, संबंधों की मधुरता, भोग और योग के संतुलन तथा जीवन को सुन्दर बनाने वाली चेतना का प्रतिनिधि है।**

जीवन में शुक्र की प्रधानता व्यक्तित्व में सहज आकर्षण, वाणी में माधुर्य, व्यवहार में विनम्रता, विचारों में सृजनशीलता और कर्मों में कलात्मकता प्रदान करती है। इसी कारण ज्योतिष, तंत्र, वेद, पुराण और जीवन-दर्शन में शुक्र को अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है।

शुक्र ग्रह के स्वामी शुक्राचार्य केवल दैत्यों के गुरु नहीं थे, बल्कि वे नीति, ज्ञान, विज्ञान, औषधि, पुनर्जीवन शक्ति और गूढ़ विद्याओं के महान आचार्य भी थे। यही कारण है कि **शुक्र ग्रह को केवल सौन्दर्य का ग्रह नहीं, बल्कि ज्ञानयुक्त भोग, विवेकपूर्ण ऐश्वर्य और सृजन की शक्ति का प्रतीक माना गया।**

पुराणों में वर्णन मिलता है कि शुक्राचार्य ने कठोर तपस्या द्वारा भगवान शिव से मृत-संजीवनी विद्या प्राप्त की। यह कथा प्रतीकात्मक रूप से बताती है कि शुक्र वह शक्ति है जो मृतप्राय परिस्थितियों में भी जीवन का रस पुनः भर सकती है। जहां सब कुछ सूखा, नीरस और समाप्त प्रतीत हो, वहां शुक्र की शक्ति जीवन में पुनः आकर्षण, प्रेम और सृजन का संचार करती है।

जीवन को एक वृक्ष माना जाए तो सूर्य उसकी आत्मा

शुक्र का उच्च स्वरूप व्यक्ति को प्रेम से ऊपर उठाकर करुणा तक ले जाता है। प्रारम्भ में मनुष्य आकर्षण से प्रेम करता है, फिर प्रेम से समर्पण सीखता है और अंततः समर्पण से करुणा तक पहुंचता है। सही अर्थों में शुक्र जीवन की पूर्णता का प्रतीक है, यदि शुक्र की ऊर्जा को सही दिशा में प्रयुक्त किया जाये।

शुक्र का आध्यात्मिक स्वरूप है - जब भोग, योग में बदलने लगे, जब सौन्दर्य साधना बन जाए, जब सम्बन्ध सेवा बन जाएं। तब शुक्र अपनी दिव्यता प्रकट करता है।

है, चन्द्र उसका मन है, मंगल उसकी शक्ति है, बुध उसकी बुद्धि है, गुरु उसका ज्ञान है, और शुक्र उस वृक्ष के फूल, सुगंध और रस हैं।

बिना फूलों और सुगंध के वृक्ष जीवित तो रह सकता है, किन्तु आकर्षक नहीं बनता। शुक्र की शक्ति के अभाव में जीवन चल तो सकता है, पर उसमें रस, माधुर्य और आनन्द का अभाव होता है।

माधुर्यं सर्वभूतेषु सौन्दर्यं च मनोहरम्।
यस्य जीवनमध्यास्ते शुक्रस्तस्य प्रसन्नकृत्।।

अर्थात् जीवन में माधुर्य, सौन्दर्य और मनोहरता शुक्र की कृपा से ही संभव है। शुक्र केवल बाहरी रूप-रंग तक सीमित नहीं है; यह भीतर की कोमलता और सौन्दर्य चेतना का प्रतिनिधित्व करता है।

शुक्र बलवान होता है तब व्यक्ति सम्बन्धों को निभाने वाला, लोगों को जोड़ने वाला और वातावरण को सुखद बनाने वाला होता है। उसकी उपस्थिति ही लोगों को आकर्षित करती है। यह आकर्षण केवल शारीरिक नहीं होता, बल्कि उसकी वाणी, दृष्टि, व्यवहार और व्यक्तित्व में एक अदृश्य चुम्बकत्व होता है।

शुक्र का सबसे प्रमुख सम्बन्ध दाम्पत्य जीवन से माना जाता है। विवाह केवल सामाजिक व्यवस्था नहीं, बल्कि दो आत्माओं के बीच प्रेम, समर्पण, आकर्षण और सहयोग का बंधन है। इस बंधन की मधुरता शुक्र से संचालित होती है।

श्रेष्ठ शुक्र से पति-पत्नी के बीच सम्मान, संवाद, आकर्षण और सहयोग बना रहता है। यही शुक्र ऊर्जा की न्यूनता संबंधों में दूरी, कटुता, असंतोष, आकर्षण की कमी अथवा भावनात्मक रिक्तता के रूप में दिखाई देती है। इसलिए वैदिक ज्योतिष में विवाह-सम्बन्धी विश्लेषण में शुक्र की स्थिति को विशेष महत्व दिया जाता है।

शुक्र का सम्बन्ध कला से भी अत्यन्त गहरा है। संगीत, नृत्य, चित्रकला, अभिनय, साहित्य, अलंकरण, वास्तु, फैशन, सुगन्ध, आभूषण, सौंदर्य-उद्योग इन सबका स्वामी शुक्र माना जाता है। जब कोई कलाकार संगीत में डूबकर रचना करता है, जब कोई कवि शब्दों में सौन्दर्य भर देता है, जब कोई मूर्तिकार पत्थर में प्राण फूंक देता है वहां शुक्र की प्रेरणा सक्रिय होती है।

ज्योतिष शास्त्र में स्पष्ट कहा गया है कि शुक्र मजबूत हो तो व्यक्ति के भीतर सौंदर्य पहचानने और उसे अभिव्यक्त करने की क्षमता अधिक होती है।

जीवन में धन होना पर्याप्त नहीं; उस धन का उपयोग किस प्रकार सौन्दर्य, सुविधा, परिवार, प्रेम और संस्कृति के विकास में हो यह शुक्र प्रदान करता है।

जीवन में ज्ञान होना पर्याप्त नहीं; उस ज्ञान में विनम्रता और आकर्षण कैसे आये यह शुक्र प्रदान करता है।

शक्ति होना पर्याप्त नहीं; उस शक्ति में सौम्यता और संतुलन कैसे आये यह भी शुक्र का ही प्रदान करता है।

शुक्र और लक्ष्मी तत्व

महालक्ष्मी का सीधा सम्बन्ध शुक्र के साथ है। जहां स्वच्छता, सुगंध, मधुरता, सौहार्द, सम्मान होता है वहां महालक्ष्मी निवास करती है और यह सब गुण शुक्र के हैं। अतः शुक्र की शुभता लक्ष्मी को भी आमन्त्रित करती है। शुक्र के प्रभाव में जीवन की गुणवता स्वतः ही धन को आमन्त्रित कर देती है।

शुक्र का सम्बन्ध भौतिक सुविधाओं से है। लेकिन यहां एक सूक्ष्म अंतर समझना आवश्यक है। शुक्र विलासिता का प्रतीक अवश्य है, किन्तु अंधभोग का नहीं। **शुक्र की उच्चता व्यक्ति को सुविधाओं का उपयोग करना सिखाती है, उनका दास बनना नहीं।**

शुक्र ज्ञान के साथ जुड़ा हो तो व्यक्ति सम्पन्न होकर भी विनम्र रहता है। यदि शुक्र अज्ञान के साथ जुड़ जाए तो व्यक्ति दिखावे, व्यसन, असंयम और भोग में उलझ सकता है। इसलिए शुक्र की ऊर्जा को दिशा देना आवश्यक है।

शुक्र - सृजन बीज

शुक्र का सम्बन्ध प्रजनन शक्ति, ओज, तेज और जीवन ऊर्जा से है। शरीर में जो सृजन क्षमता है, जो बीज शक्ति है, जो पुनरुत्पादन की सामर्थ्य है वह शुक्र तत्व से जुड़ी मानी गई है। प्राचीन ग्रन्थों में **'शुक्र धातु'** को अत्यन्त मूल्यवान माना गया है। यह केवल शारीरिक शक्ति का नहीं, बल्कि मानसिक स्थिरता, स्मृति और ओज का भी आधार है।

तांत्रिक दृष्टि से शुक्र ऊर्जा आकर्षण और सम्मोहन का भी आधार है। तंत्र ज्ञान में वास्तविक आकर्षण बाहरी सजावट से नहीं, भीतर की ऊर्जा से उत्पन्न होता है। जब मन शुद्ध, विचार सुंदर और भावनाएं करुणामयी हों, तब शुक्र अपनी उच्चतम अभिव्यक्ति देता है।

जीवन में आर्थिक सफलता और शुक्र का भी गहरा सम्बन्ध है। कई लोग बहुत परिश्रम करते हैं, ज्ञान भी रखते हैं, अवसर भी मिलते हैं, फिर भी जीवन में वह चमक नहीं आती। इसका एक कारण शुक्र ऊर्जा की कमी भी हो सकती है। व्यापार में प्रस्तुति, ग्राहक से व्यवहार, वातावरण की सुंदरता, उत्पाद की आकर्षकता, ब्रांडिंग, प्रतिष्ठा इन सबमें शुक्र की भूमिका होती है। **जीवन में शुक्र का वास्तविक महत्व केवल प्राप्ति में नहीं, अनुभूति में है।**

न रूपं न धनं तस्य न कुलं न पराक्रमः।
माधुर्यं यदि नास्त्यन्ते निष्फलं जीवनं नृणाम्।।

जीवन में माधुर्य नहीं है तो रूप, धन, कुल और पराक्रम भी अधूरे रह जाते हैं।

शुक्र को मजबूत करना है तो पहले जीवन में सौन्दर्य, वाणी में मधुरता, घर में स्वच्छता, सम्बन्धों में सम्मान, भोजन में शुद्धता, वस्त्रों में सादगी, व्यवहार में विनम्रता और विचारों में कोमलता लानी होगी। जहां अशिष्टता, अव्यवस्था, कटुता और असंयम है, वहां शुक्र कमजोर पड़ने लगता है।

शुक्र जीवन को जीने योग्य बनाता है। सूर्य हमें अस्तित्व देता है, पर शुक्र उस अस्तित्व में सौन्दर्य भरता है। गुरु हमें ज्ञान देते है, पर शुक्र उस ज्ञान को आकर्षक अभिव्यक्ति देता है। मंगल हमें शक्ति देता है, पर शुक्र उस शक्ति को सौम्यता देता है। चन्द्र हमें भावना देता है, पर शुक्र उन भावनाओं को प्रेम में बदलता है। लक्ष्मी हमें सम्पन्नता देती हैं, पर शुक्र उस सम्पन्नता को सरसता में बदलता है।

शुक्र सिद्धि प्रदात्री - रसेश्वरी मातंगी

आनन्द, विलास, सौन्दर्य, गृहस्थ सुख, पुरुषार्थ प्राप्ति, प्रेम, आकर्षण निरन्तर रस वर्षा और विलासित ही जीवन रस है।

वृक्ष की गरिमा फल-फूल और हरे भरे पत्तों से है, उसी प्रकार जीवन गरिमा ऐश्वर्य, विलास, आनन्द के रस से पूर्ण होती है।

'रसौः वै सिद्धि...' जिसके जीवन में रस है वही सिद्ध पुरुष है। रस के अधिष्ठाता भगवान शिव हैं और रसेश्वरी भगवान शिव की शक्ति महाविद्या मातंगी हैं। रसेश्वरी मातंगी जीवन के प्रत्येक पक्ष को रस पूर्ण करने वाली शक्ति है।

हरियाली एकादशी - 25 जुलाई 2026
कामदा एकादशी - 9 अगस्त 2026

शुक्र साधना

सुखीकान्त व पुः श्रेष्ठ सुलोचना भृगु सुतः
कान्यकर्ता कफाधिक्या निलात्मा वक्रमूर्धजः

शुक्र साधना से साधक सुन्दर मुख, कान्ति युक्त शरीर, बड़े-बड़े नेत्र तथा सभी प्रकार के रोग-शोक से मुक्त और सौन्दर्य प्रधान मन का व्यक्तित्व प्राप्त करता है।

शुक्र को जीवन के सुखों का कारक ग्रह माना गया है। शुक्र की चमक एवं शान अन्य ग्रहों से अलग है, निराली है। इसी सुन्दरता के लिए शुक्र जाना जाता है। शुक्र की साधना से शुक्र को बलवान बनाकर उस वृक्ष समान बनाया जाता है जो फलों, फूलों से भरा हुआ छायादार पूर्णतः हराभरा हो। वास्तव में शुक्र की शक्ति जीवन में सौन्दर्य, तेज, आकर्षण, सम्मोहन, माधुर्य, ऐश्वर्य, प्रभावशाली व्यक्तित्व, ऐश्वर्य, दाम्पत्य सुख जैसे आधारभूत गुणों को प्रदान करती है।

शुक्र ग्रह जीवन को जीवन्त बनाने वाला ग्रह है। जिसके प्रभाव से जीवन में सृजन शक्ति का विकास होता है। प्रबल शुक्र की शक्ति व्यक्ति में कला, ज्ञान-विज्ञान, वाणी-व्यवहार से अलंकृत कर प्रभावशाली व्यक्तित्व के रूप में स्थापित करती है। शुक्र ग्रह की साधना शुक्र की कृपा प्राप्त करने का सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

शुक्र साधना **किसी भी शुभ मुहूर्त अथवा किसी भी शुक्रवार** को सम्पन्न की जा सकती है। **आगे लाने वाले दिनों में 25 जुलाई 2026 हरियाली एकादशी और 9 अगस्त 2026 कामदा एकादशी शुक्र साधना सम्पन्न कर शुक्र की कृपा प्राप्त करने के विशिष्ट अवसर है।** इन मुहूर्तों में शुक्र की साधना अवश्य सम्पन्न करें। **जिस साधकों के शुक्र की महादशा चल रही हो उन्हें तो निश्चित रूप से अपनी 20 वर्ष की महादशा प्रतिवर्ष कम से कम 1 बार तो शुक्र साधना अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिये तथा सद्गुरुदेव से 'शुक्र दीक्षा' ग्रहण करनी चाहिये।**

शुक्र की साधना स्त्री-पुरुष दोनों के लिये ही आवश्यक है और बिना किसी भेद के इस साधना को सम्पन्न करना चाहिये। शुक्र तो सदैव यौवन, कांति, ऐश्वर्य, विलास, पुरुषों में वीर्य और स्त्रियों में रज का स्वरूप है। रज और वीर्य के मिलन से ही सृष्टि में सृजन होता है।

सृजन से ही सृष्टि में भोग, विलास, वाणी, गायन, नृत्य, धन-धान्य, ऐश्वर्य, आभा, सम्मोहन, उत्साह प्रकट होते है।

भौतिक जीवन में रहने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिये उपरोक्त गुण आवश्यक है। इन गुणों को पाकर पर अपने भौतिक जीवन की यात्रा आनन्द और उत्साह से सम्पन्न करता है। इसलिये शुक्र को उल्लास का स्वरूप कहा जाता है और जिस प्रकार रत्नों में हीरा सबसे अधिक बहुमूल्य होता है उसी प्रकार ग्रहों में शुक्र सबसे अधिक प्रभाव डालने वाला ग्रह होता है।

शुक्र साधना के लाभ

1. व्यक्ति के स्वास्थ्य और उसकी आयु (जरा, बुढ़ापा) पर शुक्र का प्रभाव होता है और शुक्र की कृपा से ही जीवन में कोई रस, उमंग, उत्साह परीलक्षित होते है।
2. व्यवहार में शिष्टाचार, साज-सज्जा, पोशाक में विशिष्टता - यह शुक्र की कृपा से ही संभव है।
3. उत्साह, उमंग और कार्य में तल्लीनता, व्यवहार में अभिरुचि - यह सब शुक्र की देन है।
4. महिलाओं-पुरुषों में सौन्दर्य-निखार, आकर्षण-वशीकरण-सम्मोहन शुक्र से प्रभावित होते है।
5. विवाह के उपरान्त वैवाहिक जीवन की सफलता का आधार भी शुक्र ही है।
6. मनोनुकूल विवाह शुक्र की कृपा से ही होते है।
7. विवाह में बाधा अथवा विवाह की बात-चीत बार-बार असफल हो रही हो और शादी नहीं हो पा रही हो, तो शुक्र को प्रबल करना आवश्यक है।
8. संतान प्राप्ति में विलम्ब हो रहा हो अथवा बाधा आ रही हो तो शुक्र कृपा आवश्यक है।
9. **अक्षुण्ण यौवन और दुर्दान्त पौरुष दोनों के लिए शुक्र ही आधार हैं।**
10. अर्थ प्राप्ति में, व्यापार में अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर लक्ष्मीपति अथवा विश्व प्रसिद्ध अर्थ धनपति, संग्रह कर्ता बनाने में शुक्र प्रभाव डालता है।
11. वाणी में सम्मोहन और कांतिहीन चेहरे को कांतिमय बनाने तथा शरीर को सुडौल बनाने के लिए भी शुक्र प्रभाव डालते है।

अतः साधकों को पूर्ण पौरुष और पूर्ण सौन्दर्य प्राप्त करने के लिए अनंग साधना, कामदेव रति साधना, अप्सरा साधना के साथ ही शुक्र सिद्धि हेतु 'प्रबल शुक्र साधना' सम्पन्न करनी चाहिये और सद्गुरुदेव से शुक्र दीक्षा भी ग्रहण करनी चाहिये।

धर्म की भाषा में कहें तो शुक्र का शुभ होना चार पुरुषार्थ में से एक 'काम' को पाने में अहम भूमिका निभाता है। यही कारण है कि शुक्र की प्रधानता होने से पुरुषों में तेजस्वीता और स्त्रियों में माधुर्य, कोमलता, आकर्षण व्याप्त होता है। सृजनात्मक शक्ति का से परिपूर्ण शुक्र पुरुषों में वीर्य और स्त्रीयों में रज की पूर्णता करता है। शुक्र की शक्ति के अभाव में रज और वीर्य विकार जातक को ओजहीन बना देते है।

शुक्र जीवन में प्रेम और धन दोनों चीजें प्रदान करते हैं और जीवन में सुख-सुविधाओं की बरसात करते हैं। लक्ष्मीवान, ऐश्वर्यवान व्यक्ति के व्यक्तित्व की आभा ही अलग होती है। ऐसी आभा केवल और केवल शुक्र साधना से ही संभव है।

साधना सामग्री - साधक को इस साधना में स्वयं तीसा यंत्र की प्राणप्रतिष्ठा क्रिया करनी पड़ती है। साथ ही तीन सामग्री आवश्यक है - **'मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त शुक्र यंत्र'**, **'शुक्र आकर्षण मुद्रिका'** और **'श्वेत हकीक माला'**। इसमें शुक्र आकर्षण मुद्रिका परम प्रभावशाली होती है।

शुक्र साधना विधान

शुक्र साधना को प्रातः सूर्यादय के समय अथवा रात्रि के प्रथम प्रहर में सम्पन्न करना चाहिये। साधना वाले दिन साधक स्नानकर, स्वच्छ सफेद वस्त्र धारण कर पूर्व दिशा की ओर मुख कर सफेद रंग के आसन पर बैठें। अपने सामने एक बाजोट पर सफेद वस्त्र बिछाकर उस पर गुरु चित्र/विग्रह/यंत्र/पादुका स्थापित कर लें और साधना में सफलता हेतु **'निखिल साधना विधान'** अनुसार गुरु पूजन सम्पन्न कर, गुरु माला से गुरु मंत्र की एक माला मंत्र जप करें -

ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः

गुरु पूजन के पश्चात् शुक्र की मूल साधना-पूजन निम्न प्रकार सम्पन्न करें -

गुरु पूजन के पश्चात् साधक एक सफेद कागज पर चन्दन से निम्न प्रकार के **तीसा यंत्र** का अंकन कर लें। अंकित यंत्र को गुरु चित्र के सम्मुख स्थापित कर कुंकुम, अक्षत, पुष्प आदि से संक्षिप्त पूजन कर लें।

११	६	१३
१२	१०	८
७	१४	९

शुक्र साधना में नारियल के तेल अथवा तिल के तेल का दीपक प्रज्वलित करना चाहिए। दीपक ऐसा होना चाहिए कि सम्पूर्ण मंत्र जप तक प्रज्वलित रहे। दीपक के तेल में चन्दन भी मिला देना चाहिये।

दीपक प्रज्वलित करने के पश्चात् बाजोट पर एक बड़ी थाली में अक्षत से एक निम्न प्रकार का तारा चक्र (✡) बनाएं। अक्षत के उस आसन पर निम्न मंत्र बोलते हुए **मंत्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठित 'शुक्र यंत्र'** को स्थापित करें -

शुक्र स्थापन मंत्र

ह्रीं हिमकुन्द मृणालाभं दैत्यानां परमं गुरुम्।
सर्वशास्त्र प्रवक्तारम् भार्गवं प्रजमाम्यहम्॥
ॐ भूर्भुवः स्वः शुक्रः इहागच्छ इहतिष्ठः।
शुक्राय नमः।

इसके बाद **'शुक्र आकर्षण मुद्रिका'** को दाहिने हाथ की मुट्ठी में बंद कर शुक्र का ध्यान करें -

ॐ श्वेतः श्वेताम्बरधर किरीटि च चतुर्भुजः।
दैत्यगुरुः प्रशान्तश्च साक्षसूत्र कमण्डलुः॥

उपरोक्त प्रकार से ध्यान के बाद मुद्रिका को यंत्र के मध्य में रख दें। फिर कुंकुम से यंत्र पर निम्न मंत्र बोलते हुए सात बार तिलक करें -

ॐ भाग्यदाय नमः पाद्यं समर्पयामि।
ॐ शुभदाय नमः आचमनीयं समर्पयामि।
ॐ दैत्यगुरवे नमः स्नानं समर्पयामि।
ॐ भोगकराय नमः गन्धं समर्पयामि।
ॐ श्वेताम्बराय नमः धूपं दीपं दर्शयामि।
ॐ सर्वैश्वर प्रदाय नमः नैवेद्यं निवेदयामि।
ॐ शुक्राय नमः आचमनीयं समर्पयामि।

इसके बाद **'सफेद हकीक माला'** से निम्न मंत्र का 7 माला जप करें -

शुक्र साधना मंत्र

॥ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः॥

नित्य मंत्र जप के बाद यंत्र के समक्ष हाथ जोड़कर शुक्र स्तोत्र का पाठ करें। इस साधना को तीन बार अवश्य सम्पन्न करना है। साधना समाप्ति पर सफेद वस्त्र एवं चावल किसी को दान में देना लाभप्रद होता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौछावर - 600/-

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा

शुक्र की शुभता से साधक को जीवन में धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष सभी कुछ मिल जाता है। ऐसी है, शुक्र की माया जिससे साधक और जन-साधारण कोई भी नहीं बच पाता है।

प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा के द्वारा मनुष्य की सभी भोग-विलासमयी इच्छाएं पूरी हो जाती हैं।

शुक्र के प्रभाव से व्यक्ति में मुख में तेज और मादकता छलक उठती है और वह अपने सौन्दर्य से किसी को भी अपने तेज से सम्मोहित-आकर्षित कर सकते है। सौन्दर्य-आकर्षण, प्रेम, सम्मोहन का प्रतीक शुक्र ही है, शुक्र का प्रभाव मनुष्यों पर सामान्यतः देखा जा सकता है। समाज में नीरसता को दूर कर सरसता पैदा करना, आलस्य और कुण्ठा को समाप्त कर उत्साह और उमंग पैदा करना तथा किसी को सार्थक कार्य करने के लिए प्रेरित कर देना यह क्षमता शुक्र की अनुकूलता से ही संभव है।

सद्गुरुदेव से सात चरण में प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा प्राप्त कर मंत्र जप करने से शुक्र की प्रबलता साधक को अवश्य ही प्राप्त होती है और साधक के जीवन में सम्मोहन और आकर्षण के प्रभाव से सर्व कार्य सिद्ध होने लग जाते है।

- प्रबल शुक्र तेजस्विता दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

श्रावण मास – 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

नास्ति गङ्गासमं तीर्थं नास्ति देवो हरोपमः।
श्रावणेन समो मासो न भूतो न भविष्यति।।

गंगा के समान कोई तीर्थ नहीं, शिव के समान कोई देव नहीं और श्रावण मास के समान कोई सिद्धि प्राप्त का मास न हुआ है न होगा।

आत्मा में व्याप्त सद्गुरुदेव स्वरूप शिव

शिव का श्रवण : श्रावण मास

आषाढ़ीय पूर्णिमा अर्थात् गुरु पूर्णिमा के पश्चात् श्रावण मास प्रारम्भ होता है। 'श्रावण' शब्द 'श्रवण' से बना है, जब देवाधिदेव महादेव अपने भक्तों की पुकार सुनते है और साधक बाहरी कोलाहल से हटकर महादेव के समान ध्यानस्थ होकर अपने भीतर की दिव्य ध्वनि को सुनने का प्रयास करता है, आत्मा से जुड़ता है, स्वयं को खोजता है।

श्रावणे मासि यो भक्त्या शिवलिङ्गं प्रपूजयेत्।
सर्वपापविनिर्मुक्तः शिवलोके महीयते।।

श्रावण मास में भक्तिपूर्वक शिवलिङ्ग की पूजा करने से साधक पापों से मुक्त होकर शिवलोक को प्राप्त करता है। इस मास में की गई उपासना सामान्य दिनों की अपेक्षा अनेक गुना फलदायी मानी जाती है।

श्रावण मास का सम्बन्ध मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया से भी है। वर्षा ऋतु में प्रकृति शीतल होती है, धूल बैठ जाती है, वृक्षों में नवीन पत्तियां आती हैं, नदियां जल से भर जाती हैं। उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में भी यह समय आन्तरिक शुद्धि और नवीनता का प्रतीक है।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, श्रावण मास हमें अपने भीतर के विकारों का शमन कर कल्याणमय बनने की प्रेरणा देते है। श्रावण मास केवल मांगने का समय नहीं, बल्कि स्वयं को बदलने का अवसर भी है, आत्मशुद्धि का पर्व है। शिव का अर्थ ही है जो कल्याण करे। अतः जो व्यक्ति अपने भीतर के अन्धकार को दूर कर प्रकाश की ओर बढ़ता है, वही वास्तविक रूप से श्रावण का पालन करता है।

श्रावण मास में विशेष रूप से सोमवार का महत्व है। सोमवार का सम्बन्ध चन्द्रमा से है और चन्द्रमा शिव के मस्तक पर सुशोभित है। चन्द्र मन का प्रतीक माना गया है, जब मन चंचल होता है, तब जीवन में अशान्ति, भ्रम और दुःख उत्पन्न होते हैं। शिवोपासना मन को स्थिर और शान्त बनाती है। श्रावण सोमवार अभिषेक, साधना-उपासना से मन की शुद्धि, इच्छाओं की पूर्ति और शिवकृपा प्राप्ति का श्रेष्ठ साधन माना गया है।

सोमः मनसो जातः।

शिव की आराधना करने से मन के दोष दूर होते हैं और मानसिक शान्ति प्राप्त होती है। श्रावण सोमवार शिव अभिषेक-साधना-उपासना द्वारा भीतर की आध्यात्मिक शक्ति के संचय मार्ग है। अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाने का संकल्प।

श्रावण मास में शिवाभिषेक-साधना-उपासना का विशेष महत्व माना गया है। 'रुद्र' शिव का उग्र और शक्तिशाली स्वरूप है। मनुष्य दुःख, भय, रोग, शत्रुता और संकटों से मुक्ति चाहता है, तब रुद्राभिषेक सम्पन्न करता है। जल, दूध और मन्त्रों के माध्यम से किया गया अभिषेक केवल बाहरी अनुष्ठान नहीं, बल्कि चेतना की शुद्धि का माध्यम है।

नमः शम्भवाय च मयोभवाय च।
नमः शङ्कराय च मयस्कराय च।।

निरन्तर अभिषेक, मंत्र-जप, मौन और प्रकृति के समीप रहना मन को गहरी शान्ति प्रदान करता है।

श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

श्रावण मास

रसेश्वर शिव साधना कल्प

प्रथम सोमवार - 03 अगस्त 2026 - बाधा हरण सिद्धि दिवस

द्वितीय सोमवार - 10 अगस्त 2026 - स्थायी लक्ष्मी सिद्धि दिवस

तृतीय सोमवार - 17 अगस्त 2026 - शत्रु बाधा निवारण सिद्धि दिवस

चतुर्थ सोमवार - 24 अगस्त 2026 - रसेश्वर शिव आनन्द सिद्धि दिवस

रसो वै सः। रसं ह्येवायं लब्ध्वानन्दी भवति।।

परम तत्व शिव रस के स्वरूप है और रसेश्वर शिव की साधना अराधना से ही जीवन में रस की प्राप्ति संभव है....

रस ही हमारे अस्तित्व, हमारे जीवन का, हमारी चेतना का मूल का स्वरूप है...

श्रावण मास - शिव मास - रसेश्वर मास

सद्‌गुरुदेव द्वारा वर्णित पूजन का यह विधान गृहस्थ शिष्यों-साधकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जा रहा है। जिससे गृहस्थ साधक जीवन के इन चारों सोपानों का पान कर सकें।

इसी क्रम में इस बार श्रावण के चार सोमवार को जीवन की चार महत्वपूर्ण कामनाओं की पूर्ति हेतु साधना-पूजन सम्पन्न करें। पूजन-साधना की विशेष बातें -

- श्रावणमास में नियमित रूप से आगे वर्णित शिव पूजन विधान करना चाहिए।
- यदि नित्य यह पूजन संभव नहीं हो तो श्रावण में प्रत्येक सोमवार को यह पूजन अवश्य सम्पन्न करें।
- किसी कारण से सुबह पूजन नहीं कर सकते हैं तो रात्रि 8 बजे के बाद भी शिव पूजन, अभिषेक सम्पन्न किया जा सकता है।
- पहले श्रावण सोमवार को शिव साधना में जो साधना सामग्री प्रयुक्त की है, उसे ही प्रत्येक सोमवार को प्रयोग में लाना है।
- श्रावण में संभव हो तो नित्य प्रति शिव अभिषेक सम्पन्न करें। यदि आपके पास पारदेश्वर शिवलिंग अथवा कोई अन्य शिवलिंग है तो उस शिवलिंग का भी विशेष पूजन, रुद्राभिषेक सम्पन्न करें। रुद्राभिषेक में भी पूजन विधान यही सम्पन्न किया जाता है।

प्रत्येक सोमवार को संकल्प विनियोग अवश्य करें।

साधना में आवश्यक सामग्री

प्राण प्रतिष्ठित शिव यंत्र, पारद शिवलिंग, रुद्राक्ष माला, नवग्रह रस सिद्धि गुटिका।

उपरोक्त पैकेट के अलावा कुछ और सामग्री की आवश्यकता होती है, जिसकी पहले से ही व्यवस्था कर लेनी चाहिए।

आसन किसी भी रंग का हो, जलपात्र, गंगाजल यदि हो तो, चांदी या स्टील की प्लेट, कुंकुम, रोली, चावल, केशर, पुष्प, बिल्वपत्र, पुष्पमाला, दूध, दही, घी, चीनी, शहद, नारियल, रक्तसूत्र या मौली अथवा कलावा, यज्ञोपवीत, अबीर, गुलाल, अगरबत्ती, कपूर, घी का दीपक, नैवेद्य हेतु दूध का प्रसाद, पांच फल, इलायची इत्यादि।

इसके अलावा यदि घर में तांबे का पंचपात्र, अर्घ्य पात्र, घण्टी, शंख, अगरबत्ती स्टेन्ड आदि हों तो उनकी व्यवस्था पहले से कर लें।

साधना विधान

स्नान कर शुद्ध सफेद रंग की धोती पहन कर पूर्व की ओर मुंह कर आसन पर बैठ जाएं और अपने सामने गुरु चित्र, विग्रह, गुरु यंत्र, गुरु पादुका जो आपके पूजा स्थान में स्थापित है उन्हें अपने सामने स्थापित कर पंचोपचार गुरु पूजन सम्पन्न कर, एक माला गुरु मंत्र का जप करें।

गुरु पूजन के पश्चात् बाजोट पर शिव चित्र स्थापित कर उसका तिलक कर, पुष्पमाला पहना दें। शिव चित्र के सम्मुख ही ताम्र पात्र में **'शिव यंत्र'** एवं **'नवग्रह रस सिद्धि गुटिका'** स्थापित कर अगरबत्ती एवं दीपक प्रज्वलित कर दें।

इस पूजन में यदि सम्भव हो तो अपनी पत्नी को भी अपने दाहिने हाथ की ओर आसन पर बिठा दें, फिर अपनी चोटी को गांठ लगावें अथवा वहां हाथ रखें। इसके पश्चात् बांये हाथ में जल लेकर दाहिने हाथ से अपने पूरे शरीर एवं सामग्री पर निम्न श्लोक पढ़ते हुए जल छिड़क दें -

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरं शुचिः।

इसके पश्चात् जल के कलश में गंगाजल, सिक्का डालकर। चावल की ढेरी बनाकर उस पर रख दें और उसके चारों तरफ कुंकुम या केशर की चार बिन्दियां लगा लें और उसमें निम्न मंत्र पढ़ते हुए जल भरें-

शिव का स्वरूप शिवलिंग

इसी अनादि सदाशिव - लिङ्ग और अनादि प्रकृति - योनि से समस्त सृष्टि उत्पन्न होती है। इसमें आधेय बीज - प्रदाता (लिङ्ग) और आधार बीज को धारण करने वाली (योनि) का संयोग आवश्यक है। इन दोनों के संयोग के बिना कुछ उत्पन्न नहीं हो सकता।

यह लिङ्ग-योनि जिसका व्यवहार श्री शिव-पूजा में होता है, प्रकृति और पुरुष के संयोग से होने वाली सृष्टि की उत्पत्ति का सूचक है। इस प्रकार यह परमात्मा जगत्पिता और दयामयी जगन्माता के आदिसम्बन्ध के भाव का द्योतक है। अतः यह परम पवित्र और मधुर भाव है।

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन सन्निधिं कुरु।
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्यास्सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि पूजाकाले सदा मम।।

फिर उस जल में से जल लेकर संकल्प करें -

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणो द्वितीय परार्द्धेश्वेतवाराह कल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टा विंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बुद्वीपे भारतवर्षे (अपने शहर का नाम लें) *नगरे श्रावण मासे सोमवासरे मम* (अपना नाम व कामनाओं या इच्छाओं का नाम लें) *कामनां सिद्ध्यर्थ साधना करिष्ये।*

गणेश पूजन

फिर सामने स्टील या चांदी की प्लेट/थाली में कुंकुम से स्वस्तिक बनाकर गणपति को स्थापित करें, यदि गणपति नहीं हों तो एक सुपारी रखकर उसे गणपति मानकर उस पर जल चढ़ाकर, पौंछकर, केशर लगाकर सामने नैवेद्य एवं फल रख दें, ऊपर पुष्प चढावें और फिर हाथ जोड़कर बोलें -

परं धाम परब्रह्म परेशं परमाद्भुतम्।
विघ्न निघ्न करं शांतं गणेशं प्रणमाम्यहम।।
ॐ गणाधिपतये नमः।

नवग्रह पूजन

बाजोट पर ही चावल की नौ ढेरियां बनाकर प्रत्येक पर एक-एक सुपारी स्थापित कर दें। इसके पश्चात् निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए प्रत्येक सुपारी का पूजन कुंकुम एवं पुष्प से करें। तत्पश्चात् प्रत्येक मंत्र का 11-11 बार उच्च स्वर में उच्चारण करें -

सूर्य - ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः।
चन्द्र - ॐ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः।
मंगल - ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः।
बुध - ॐ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः।
गुरु - ॐ ग्रां ग्रीं ग्रौं सः गुरवे नमः।
शुक्र - ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
शनि - ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनये नमः।
राहु - ॐ भ्रां भ्रीं भ्रौं सः राहवे नमः।
केतु - ॐ स्त्रां स्त्रीं स्त्रौं सः केतवे नमः।

इसके पश्चात् शिव का मूल पूजन प्रारम्भ होता है।

शिव-यंत्र पूजन

ताम्र पात्र में स्थापित शिव यंत्र के ऊपर पारद शिवलिंग और नवग्रह गुटिका रख दें। फिर शुद्ध जल में थोड़ा सा कच्चा दूध और गंगाजल मिलाकर **'ॐ नमः शिवाय'** मन्त्र का उच्चारण करते हुए **'शिव यंत्र एवं नवग्रह रससिद्धि गुटिका'**, पर पतली धार से दुग्ध मिश्रित जल चढाते रहें।

इसके पश्चात् दूध, दही, घी, शहद, शक्कर का पंचामृत बनाकर उससे भी स्नान करावें, फिर शुद्ध जल से धो लें, फिर शुद्ध वस्त्र से पौंछ लें और अलग शुद्ध पात्र में स्थापित कर लें। तत्पश्चात् केसर और कुंकुम लगावें। फिर इन सभी पर धीरे-धीरे पुष्प की पंखुड़ियां डालते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर उन्हें सिद्धि युक्त बनावें।

ॐ शिवाय नमः पादौ पूजयामि।
ॐ जगत्पित्रे नमः जंघे पूजयामि।
ॐ मृडाय नमः जानुनी पूजयामि।
ॐ रुद्राय नमः उरु पूजयामि।
ॐ कालान्तकाय नमः कटिं पूजयामि।
ॐ नागेन्द्र भरणाय नमः नाभिं पूजयामि।
ॐ स्तव्याय नमः स्तनौ पूजयामि।
ॐ भावनाय नमः भुजान् पूजयामि।
ॐ कालकंठाय नमः कंठं पूजयामि।
ॐ महेशाय नमः सर्वाण्यंगानि पूजयामि।

शिवाभिषेक और पूजन के पश्चात् शिवयंत्र, शिवलिंग और नवग्रह गुटिका पर अबीर, गुलाल और अक्षत अर्पित करें तथा उन्हें पुष्प तथा पुष्पमाला समर्पित करें।

इसके पश्चात् 11 बार निम्न मंत्र का जप करें -

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्।।

महामृत्युंजय मंत्र जप के पश्चात् 1 माला शिव पंचाक्षरी मंत्र की जप करें।

ॐ नमः शिवाय।।

तत्पश्चात अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित कर नैवेद्य और फल अर्पित करें तथा पश्चात् हाथ जोड़कर पाठ करें -

वन्दे देवउमापतिं सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणं
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुंनाम्पतिं।
वन्दे सूर्यशशांक वन्हिनयनं वन्दे मुकुन्दप्रियं
वन्दे भक्तजनाश्रयं च वरदं वन्दे शिवं शंकरम्।

इस प्रकार अभिषेक-पूजन पूर्ण होता है। साधक को श्रावण के प्रत्येक सोमवार को अभिषेक - पूजन करना ही

"मन में बसें शिवाय..."

यह मन शिव के समान बड़ा ही भोला है। जितना इसके ऊपर बोझ डालोगे यह बोझ को धारण कर लेगा। धीरे-धीरे ऐसी स्थिति हो जायेगी कि मन ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा।

मिलेगी तो केवल और केवल चिन्ताएं...

मन को स्निग्ध करो, इस मन पर रस पूर्ण प्रवाह करो। इस मन का अभिषेक करो...

यही शिवोऽहम् भाव है, यही शिव अभिषेक है।

- सद्गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली।

है और प्रयास कर श्रावण के प्रत्येक दिन अभिषेक-पूजन करना चाहिये। श्रावण के प्रत्येक दिन अभिषेक-पूजन करने से साधक की मनोकामनाएं अवश्य ही पूर्ण होती है।

अभिषेक-पूजन की पूर्णता के पश्चात् श्रावण सोमवार के क्रमानुसार निम्न मंत्रों का जप सम्पन्न करें।

प्रथम सोमवार -
बाधा हरण सिद्धि दिवस (03 अगस्त 2026)

मैं (अमुक नाम, अमुक गौत्र) यह संकल्प लेता हूं कि मेरे जीवन में शिव और शक्ति को स्थापित करूंगा, जिससे मेरे जीवन की बाधाओं का हरण हो। मैं गुरु और देवताओं को साक्षी रखते हुए यह संकल्प करता हूं कि मैं बाधाओं के हरण हेतु दृढ़ संकल्पवान बनूं, मुझे शिव और शक्ति की असीम कृपा प्राप्त हो, यह पूजन और अभिषेक शिव को समर्पित है।

॥ ॐ ह्रौं जूं सः ॥

द्वितीय सोमवार -
स्थायी लक्ष्मी सिद्धि (10 अगस्त 2026)

मैं (अमुक नाम, गौत्र) संकल्प लेता हूं कि मुझे अपने जीवन में अर्थ की प्राप्ति हो, धन का अभाव समाप्त हो, शिव की शक्ति, लक्ष्मी मेरे जीवन में स्थायी बनी रहे। मैं पूर्ण रूप से ऋण-मुक्त होऊं। मेरा यह पूजन शिव एवं पार्वती को समर्पित है।

॥ कुबेर त्वं धनाधीश गृहे ते कमला स्थिता,
त्वं देवी प्रेषयाशु त्वं मम गृहे ते नमो नमः ॥

तृतीय सोमवार -
शत्रुबाधा निवारण सिद्धि दिवस (17 अगस्त 2026)

मैं (अमुक नाम, अमुक गौत्र) यह संकल्प लेता हूं कि अपने जीवन से शत्रु बाधा के निवारण हेतु शिव और शक्ति की कृपा हेतु प्रयत्नशील रहूंगा। अपनी शक्ति का उपयोग यश, सम्मान और प्रतिष्ठा प्राप्ति में करूंगा। जीवन से शत्रु बाधा समाप्त कर अपने कार्यों द्वारा समाज में श्रेष्ठ कार्य करूंगा। मैं अपने कार्यों द्वारा गुरु की सेवा सच्चे रूप में कर सकूं। आज का यह विशेष पूजन-अभिषेक आपको समर्पित है।

॥ ॐ ह्लौं ह्लौं हूं हूं महाकालाय फट् ॥

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रियायुधम्।
त्रिजन्मपापसंहारं एकबिल्वं शिवार्पणम्॥

श्रावण मास में तीन दल वाला बेलपत्र तीन गुणों, तीन नेत्रों और तीन आयुधों वाले शिव का प्रतीक है। एक बेलपत्र अर्पित करने से तीन जन्मों के पाप नष्ट हो जाते हैं।

चतुर्थ सोमवार -
रसेश्वर शिव आनन्द सिद्धि दिवस (24 अगस्त 2026)

हे! देवाधिदेव महादेव मैं (अमुक नाम, अमुक गौत्र) आज श्रावण मास के इस अंतिम सोमवार को यह संकल्प लेता हूं कि आप चन्द्रशेखर की कृपा मुझ पर सदैव बनी रहे। मेरे मन में शीतलता, शांति एवं संतोष हो। मेरे सभी चक्र जाग्रत हों, मैं भौतिक उन्नति के साथ आध्यात्मिक उन्नति के पथ पर गतिशील रहूं। आपकी कृपा से जीवन में परम आनन्द की प्राप्ति हो। मेरे सद्गुरुदेव की कृपा मुझ पर निरन्तर बनी रहे।

॥ ॐ साम्ब सदा शिवायै नमः॥

प्रत्येक सोमवार को मंत्र जप करने के बाद यंत्र एवं गुटिका को अलग-अलग पात्र में रख देना चाहिए और श्रावण मास में नित्य इनके सामने सुबह-शाम अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित करना चाहिए तथा संभव हो तो *'ॐ नमः शिवाय'* मंत्र की एक माला जप करना चाहिए।

28 अगस्त 2026 को श्रावण पूर्णिमा है, अतः इस दिन इस सारी पूजन सामग्री को, जिस पर आपने चारों सोमवार विशेष मंत्र अनुष्ठान किया है, उसे पूजा स्थान में सफेद वस्त्र बिछा कर स्थापित करें और पुनः इनका एक बार संक्षिप्त पूजन करें और चारों सोमवार-मंत्रों की कम से कम एक-एक माला मंत्र जप करें। अपनी मनोकामना इच्छा पूर्ति की प्रार्थना करें और सभी सामग्री को उस दिन सायं किसी जल सरोवर में समर्पित कर दें।

भगवान शिव तो सर्वाधिक दयालु और तुरन्त वरदान देने वाले महादेव हैं, अतः इन साधनाओं का फल तुरन्त प्राप्त होता है, और साधक शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त करने में सफल हो पाता है।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/-

☆ मैं बीज बो रहा हूं। पिछले कई-कई जन्मों से, युगों-युगों से और इसी वजह से पृथ्वी पर अभी अध्यात्म का प्रकाश है, अभी ज्ञान की चेतना है, अभी साधना की अनुभूतियां हैं।

☆ इसके लिए पिछले कई जन्मों से मैंने अथक प्रयत्न किए हैं और शिष्यों के रूप में अग्नि बीज बोए हैं। अपने हाथों से, परिश्रम के पसीने की बूंदों से भिगो कर।

☆ ध्यान रहे, कि ये बीज जमीन के ऊपर ही न रह जाएं, ये बीज व्यर्थ ही न चले जाएं, ये जमीन में गड़ जाएं, ये मिट्टी में मिल जाएं।

☆ इनमें अहंकार न रहे, अपने-आप को बचाने की युक्ति न निकाल लें, ये तो पूरी तरह से रच-पच जाएं, मिल जाएं और अंततः विसर्जित हो जाएं।

☆ ऐसा हुआ, तो मैं पूरी पृथ्वी को सिद्धाश्रम बनाकर दिखा दूंगा।

☆ वेदव्यास अपनी मृत्यु शैया पर डबडबायी आंखों से कह रहे थे, कि- ''काश! मुझे कुछ सही और वास्तविक शिष्य मिल जाते।

☆ गोरखनाथ ने कहा - 'समर्पित शिष्य मिल जाएं यह आश्चर्य सा हो गया है।'

☆ शंकराचार्य व्यथित भाव से उच्चरित कर रहे थे, कि- 'यदि कुछ शिष्य मेरे पास हों तो मैं बहुत कुछ कर लूं।'

☆ वे सब सही थे, क्योंकि समर्पित शिष्य की पहिचान ही अलग है, अहंकार रहित, सर्वस्व समर्पण युक्त, जीवन को फना करने का हौंसला रखने वाला।

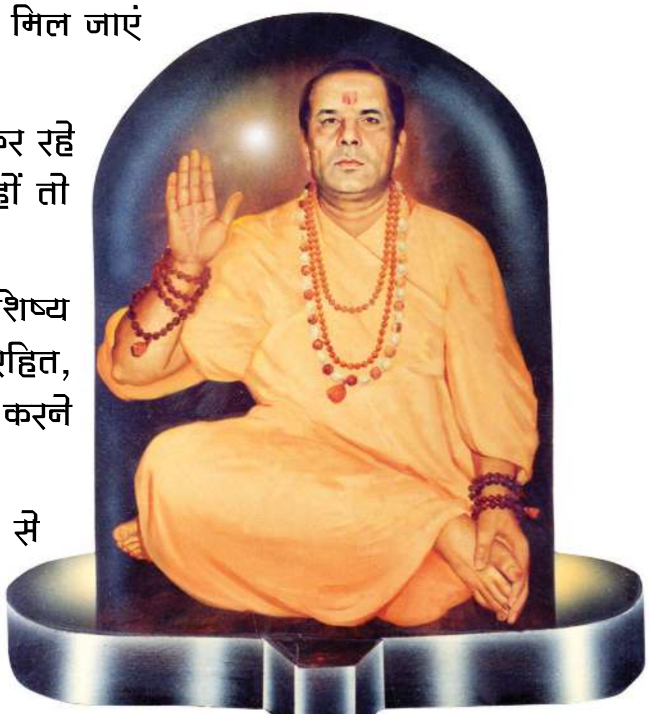

☆ वह गुरु के व्यक्तित्व में पूरी तरह से ढल जाता है, वैसी ही चाल, वैसी ही बोलने की अदा, वैसा ही बैठने का ढंग, वैसा ही व्यवहार, चिन्तन, विचार और लक्ष्य... ऐसा लगे की गुरु की प्रतिकृति हो।

☆ ऐसे ही मात्र बारह शिष्य मिल जाएं, तो मैं पूरे ब्रह्माण्ड को बदल देने का हौंसला रखता हूं। बस शिष्य आगे आवें, और मुझे प्राप्त हो जाएं।

☆ तुम्हें जीने का सलीका नहीं है, जीवन को घूंट-घूंट पीने का ज्ञान नहीं है, जीवन को आनन्द में, मस्ती में डूबोकर मतवाली चाल से बढ़ने की जानकारी नहीं है।

☆ मेरी उपस्थिति में तो तुम्हारे हृदय धड़कते हैं, पर मेरी अनुपस्थिति में भी तुम्हारे हृदय धड़कने चाहिए। मेरी अनुपस्थिति में भी मुझमें डूबे रहने की कला सीखिए।

☆ मेरी अनुपस्थिति को भी उपस्थिति बना लेने की युक्ति जान लीजिए।

☆ मौन रहकर प्रार्थना करना सीखो, आंखें बन्द कर देखने का अभ्यास करो, बिना बोले बातचीत करने की कला प्राप्त करो, मेरी अनुपस्थिति में भी मेरा साहचर्य अनुभव करने की विद्या जानो।

☆ ऐसा होने पर तुम जहां पर भी होओगे मैं उपलब्ध रहूंगा - जागते, सोते, नींद लेते, मुस्कुराते, रोते और छलछलाते, सभी रूपों में, हर समय, सभी स्थानों पर और यही तो परमहंसावस्था है।

शिष्य धर्म

- गुरु कुछ करता ही नहीं, समुद्र चलकर गंगोत्री के पास नहीं पहुंचता। शिष्य को गुरु के पास जाना पड़ता है और उससे ज्ञान प्राप्त करना होता है।
- सेवा समर्पण और श्रद्धा - ये तीनों ही रास्ते हैं जिनके माध्यम से शिष्य अपने खून को शुद्ध कर सकता है।
- जो गुरु कहे वह करे, उसे सेवा कहते हैं। जो तुम्हारी मर्जी हो वह करना कदापि गुरु सेवा नहीं है।
- शिष्य को ज्ञान देने से पहले उसका अहं गलाना जरूरी है। शिष्य का कर्तव्य है कि वह इस कार्य में गुरु का पूरा सहयोग करें।
- शिष्य को चाहिए कि वह पाद पद्म न बने, उसे चाहिए वह विवेकानन्द बने और उसके लिए सर्वोत्तम उपाय है श्रद्धा एवं समर्पण।
- ज्ञान के पुंज को प्राप्त करने के लिए जरूरी है कि शिष्य को कसौटी पर कसा जाए। शिष्य को चाहिए कि वह गुरु की हर कसौटी पर उतरे।
- शिष्य पर गुरु का ऋण है क्योंकि गुरु शिष्य को ज्ञान देता है। ज्ञान केवल गुरु की सेवा से प्राप्त हो सकता है।
- शिष्य के मानस में, चिंतन में, विचार में, ज्ञान की गरिमा स्थापित गुरु करता है, इसलिए शिष्य का धर्म है कि वह गुरु सेवा करे और ज्ञान प्राप्त करें।
- शिष्य का लक्षण, शिष्य का चिन्तन, शिष्य का विचार मधुर होना चाहिए हर क्षण गुरु की आज्ञा का पालन करें किसी भी तर्क या विर्तक में न फंसें। सेवा, समर्पण और श्रद्धा से ही तुम लोहे से कुन्दन बन सकते हो।
- शिष्य को चाहिए कि गुरु जो भी मंत्र दे, उसे पूर्ण भक्तिभाव से ग्रहण करें, कभी भी मन में गुरु या मंत्र के प्रति कुतर्क या अश्रद्धा न लावें।
- गुरु तो हर क्षण ही शिष्य को अपने समकक्ष बनाने का प्रयास करते हैं, और इसी कारण उन्हें स्वयं सर्वप्रथम शिष्य के अनुरूप स्वरूप धारण करना पड़ता है, परन्तु यह शिष्य की अज्ञानता होती है, जो वह गुरु को सामान्य मनुष्य के रूप में देखता है, उसके लिए ऐसा चिन्तन दुर्भाग्यपूर्ण होता है।

गुरु ही शिष्य जीवन के सूर्य

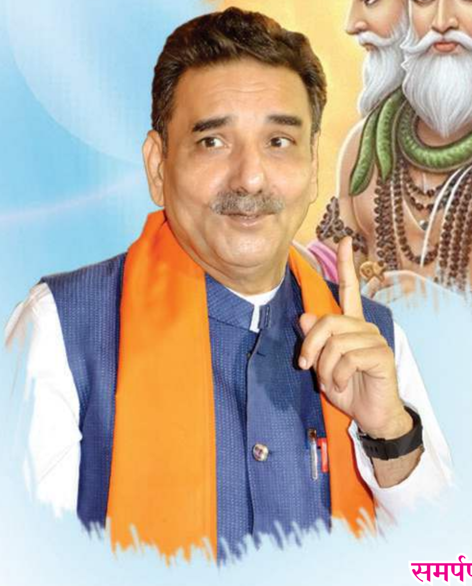

गुरु ही अपने प्रकाश से शिष्य के जीवन को आलोकित करते है और अपनी ऊर्जा से, उष्मा से उसके सारे दोषों का शमन करते है। यह है मकर संक्रान्ति का मूल रहस्य। मकर संक्रान्ति की पूर्व संध्या पर सद्गुरुदेव का यह दिव्य प्रवचन -

गुरु और ईश्वर के समक्ष एक ही भाव समर्पित कर सकते है और वह है समर्पण। निश्चित रूप से ईश्वर समस्त ब्रह्माण्ड का स्वामी है तो उसे सबसे अधिक प्रिय समर्पण भाव ही होता है।

गुरु और शिष्य का सम्बन्ध भी प्रेम और समर्पण का सहयोग है। शिष्य समर्पण भाव से अपने मन की बात कहता है और गुरु उसे प्रेम का आशीर्वाद प्रदान करते है। इस समर्पण भाव के लिये गुरु प्रार्थना में गुरु गीता में विशेष वर्णन आया है। दो श्लोक विशेष है -

शरीरमिन्द्रियं प्राणमर्थस्वजनबान्धवान्। आत्मदारादिकं सर्व सद्गुरुभ्यो निवेदयेत्।।
गुरुरेको जगत्सर्वं ब्रह्मविष्णुशिवात्मकम्। गुरोः परतरं नास्ति तस्मात्संपूजयेद्गुरुम्।।

शिष्य वही है जो अपने आपको पूर्ण रूप से गुरु को समर्पण कर दे, अपना शरीर, अपनी बुद्धि, तन-मन-धन इस भाव के साथ कि सबकुछ गुरु द्वारा प्रदान किया गया है।

सबसे बड़ा उच्चतम सम्बन्ध गुरु और शिष्य का सम्बन्ध है और गुरु कभी भी शिष्य को अकेला नहीं छोड़ते है।

कभी गुरु आगे आगे चलते है और शिष्य उनका अनुगामी होता है। कभी गुरु शिष्य का हाथ पकड़ कर साथ चलते है और जब गुरु जान जाते है कि मेरा शिष्य योग्य और समर्थ हो गया है तो वे उसे आगे कर देते है और उसके पीछे हो जाते है और कहते है कि प्रिय शिष्य अब तुम संसार सागर में अपनी शक्ति, अपनी बुद्धि और ज्ञान के साथ आगे बढ़ो।

इसीलिये गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश कहा गया है। एक रूप में संरचना करते है, एक रूप में पालन करते है और एक रुप में उसे स्वतंत्र करते है।

नवग्रह है प्रत्येक ग्रह अपनी-अपनी कक्षा में घूमता है और यह कक्षा अपनी धुरी में घुमने के साथ-साथ सूर्य की परिक्रमा भी होती है। तो इसका अर्थ क्या हुआ?

जगत की आत्मा है सूर्य।

किसी ने मुझसे पूछा कि

गुरुदेव ये सारे ग्रह तो लाखों-लाखों योजन पृथ्वी से दूर है, फिर हमारे ऊपर इनका क्या प्रभाव पड़ सकता है? हमें तो केवल सूर्य और चन्द्रमा ही दिखते है और पृथ्वी स्पष्ट दिखाई देती है उसे हम स्पर्श कर अनुभव करते है। फिर ग्रहों का कैसे प्रभाव पड़ सकता है?

मैंने कहा कि - तुम संसार में किससे देखते हो, उसने कहा आंखों से।

मैंने कहा आंखें सूर्य का स्वरूप है।

कितना ही प्रकाश हो पर यदि हमारे नेत्रों में ही ज्योति नहीं है तो हमें कुछ नहीं दिख सकता।

सूर्य का स्वरूप है, उष्मा, अग्नि। और तुम्हारे शरीर में भी ऊष्मा है अग्नि, यदि यह ऊष्मा और अग्नि शांत हो जाये तो क्या होगा?

इसलिये नेत्र, ऊष्मा और अग्नि जीवन का मूल तत्व है। हमारी सारी क्रियाएं अग्नि के द्वारा ही संचालित होती है। तो सूर्य तत्व नेत्रों के साथ-साथ हमारे प्रत्येक अंग में विद्यमान है।

ठीक इसी प्रकार चन्द्रमा शीतलता का प्रतीक है। यदि हर समय हमारा शरीर गर्म ही रहे तो क्या होगा? हम झुलस जायेंगे। तो चन्द्रमा हमारी शीतलता का स्वरूप है।

इसीलिये सूर्य और चन्द्र दोनों हमारे शरीर के दृश्यमान देव है। यदि भट्टी निरन्तर जलती रहेगी तो क्या होगा? सब कुछ भस्म हो जायेगा। तो सूर्य और चन्द्रमा दोनों आवश्यक है।

मंगल रक्त प्रवाह का स्वरूप, बुध है बुद्धि का स्वरूप, गुरु है ज्ञान का स्वरूप है, शुक्र है काम शक्ति का स्वरूप, शुक्र रज का स्वरूप जिससे नवीन रचना होती है और शनि है कर्म शक्ति संघर्ष और कर्म के न्यायधीश का स्वरूप। राहु है शौर्य का स्वरूप और केतु है मृत्युभय से मुक्ति का स्वरूप।

चलों आप आकाश मण्डल में स्थित इन ग्रहों की व्याख्या नहीं करो लेकिन हमारे प्रत्येक के शरीर में ये नवभाव, नवग्रह अवश्य स्थापित है और इन नवभाव से ही नवरस की रचना हुई है।

नौ रस से युक्त है हमारा शरीर, मन।

प्राण तो ईश्वर ने दिये है। प्राण अर्थात् आत्मा उसको संजाने, संवारने का स्वरूप है जीवन के ये नौ रस जिसे हमारे जीवन श्रेष्ठ रूप से गतिशील हो।

अभी मैंने दिल्ली शिविर में कहा था कि शिव हमें प्रत्येक दिवस उपहार के स्वरूप प्रदान करते है। प्रजेन्ट के रूप में आज के रूप में क्योंकि हम कालचक्र के अधीन है और कालचक्र में प्रत्येक क्षण नवीन होता है। जो आज है वह कल चला जाता है जा बन जाता है। आज का उल्टा है जा।

तो आपके पास है आज, शिव का उपहार समय है। अब इस उपहार का उपयोग आप किस प्रकार से करते है ये तो आप पर ही निर्भर करेगा। आपकी बुद्धि और आपके ज्ञान के ऊपर निर्भर करता है।

अब गुरु के पास क्यों आते हो? गुरु तो सीधी-सादी बात कहते है। आपको कहोंगे कि इसमें ज्ञान की क्या बात हुई। यह सब तो किताबों में भी लिखा हुआ है, पर गुरु के पास एक अलग प्रकार की क्रिया होती है।

मैं जानता हूं कि मेरा प्रत्येक साधक बुद्धिमान है, ज्ञानवान है। वह अपना भला बुरा अच्छी तरह से जानता है। वह अपनी गृहस्थी का पालन कर रहा है। अब इस जीवन चक्र में कई बार परिस्थितियां अनुकूल रहती है और कई बार प्रतिकूल रहती है।

जब बार-बार परिस्थितियां प्रतिकूल होती है तो उसके मन में एक निराशा का गुबार भर जाता है। उसे खाली करने के लिये वह गुरु का आशीर्वाद चाहता है।

जब वह खाली हो जाता है चिन्ता से भय से, तो फिर उसकी कर्मशक्ति पुनः चैतन्य हो जाती है। गुरु शिष्य मिलन का इतना ही सरल रहस्य है।

इसीलिये खाली करने की क्रिया को समर्पण भाव कहा गया है।

यह सौंप दिया सब भार तुम्हारे हाथों में।

सूर्य साधना का शिविर है और ज्योतिषी कहते है कि मकर राशि का स्वामी शनि है और मकर संक्रान्ति के दिन सूर्य शनि के घर आता है।

शनि सूर्य से रुठा हुआ है क्योंकि वह सूर्य पुत्र है लेकिन उसे संसार में सम्मान नहीं मिला, सूर्य ने स्वीकार नहीं किया। कथा आप जानते है कि सूर्य का विवाह संज्ञा से हुआ था। संज्ञा सूर्य का तप नहीं झेल सकी तो उसने संध्या को भेज दिया उससे शनिदेव का जन्म हुआ और एक ओर संतान यम और यमी हुये।

पिता ने शनि को निकाल दिया। पुत्र कुपित हुआ।

अब पिता-पुत्र का झगड़ा होगा तो क्या स्थिति बनती है आप भी अपने-अपने घरों में सब जानते है।

अब पिता-पुत्र के इस झगड़े को शांत करने की जिम्मेदारी किसकी है? लोक व्यवहार में तो कहते है कि पुत्र जाकर पिता से क्षमा मांगे। पर यहां तो विचित्र स्थिति है, पुत्र की कोई गलती नहीं और पिता ने उसे निकाल दिया।

तो हमारे सूर्य है जगत के पिता। सूर्य है संसार की आत्मा और सूर्य के ऊपर सबकी जिम्मेदारी है।

ऐसा है जो वास्तव में सूर्य होता है सन होता है उसी को जिम्मेदारी निभानी होती है। आपका बेटा बनने के तो हर एक तैयार हो सकता है। पर SUN कोई नहीं बनता। आप किसी के पिता बनकर, सूर्य बनकर जिम्मेदारी निभाओं, इससे तो बड़ा भय लगता है।

तो सूर्य देव ने निर्णय लिया मैं पुत्र के घर आऊंगा।

अब पिता ही पुत्र के घर पहुंच जाये तो सारी बात समाप्त, गिले-शिकवे समाप्त, घर-परिवार में पुनः एकता। शनि देव ने प्रणाम किया तो सूर्य ने अपने गले लगाया।

शास्त्रों में यह वर्णन आता है कि सूर्य देव की पहली पत्नी से अश्विनी कुमार, यम, यमी हुए और संध्या से शनिदेव, सावर्णी मनु हुए।

अब अश्विनी कुमारों को देवताओं के वैद्य का पद मिला। यम को धर्मराज का पद मिला। तो सूर्य ने शनि के कहा कि मेरा पुत्र यह शनि संसार का न्यायधीश होगा।

अब इस कथा को हम आध्यात्मिक स्तर पर सोचते है। संसार के सारे रोगों का नाश सूर्य से ही होता है और अश्विनी कुमार के रूप में सूर्य संसार के प्राणियों को पुनः आरोग्य शक्ति प्रदान करता है।

धर्मराज जीवन के पश्चात् व्यक्ति को नवीन जीवन श्रृंखला में भेजते है।

शनि को मिला न्यायधीश का पद। तो सबसे बड़े हो गये शनि, क्योंकि न्यायधीश का कर्तव्य होता है कि वह उचित, अनुचित का निर्णय करें और मनुष्य को उसका कर्मफल प्रदान करें।

यह सारा जगत कर्म के अटूट सिद्धान्त पर ही चल रहा है। सब मनुष्य कर्म करते है। फिर कोई अच्छे फल प्राप्त करता है, कोई बुरे फल प्राप्त करता है। ऐसा क्यों?

सरल बात है, कर्मों का प्रभाव और इसीलिये शनि उसका निर्णय देते है। वे दूध का दूध, पानी का पानी कर दे है। पर एक बात है कोर्ट कहचरी में हर एक को डर लगता है। क्या मालूम न्यायधीश कैसा निर्णय दे दे।

अरे भाई! जब आप अपने कर्मों के प्रति निश्चित हो तो फिर डर कैसा? तब तो न्यायधीश आपको आपका हक अवश्य दिलायेंगा और उसके दिये गये निर्णय को कोई टाल नहीं सकता, सबको मानना पड़ेगा।

कहीं लिखा है कि मनुष्य गलतियों का पुतला है। तो आप मानों या नहीं मानों हम हमारे जीवन में कहीं न कहीं गलतियां अवश्य करते है।

हम कितना ही अपने आपको समझायें लेकिन अन्तर्मन जानता है कि मैंने यह कर्म श्रेष्ठ नहीं किया है। किसी का अधिकार लिया है। घर परिवार में सबके साथ न्याय नहीं किया है।

हर घर में कहते है कि माता-पिता बराबर न्याय करते है लेकिन यह देखने में आता है कि पिता का प्यार बड़े पुत्र की और विशेष होता है और माता का प्यार सबसे छोटे पुत्र की ओर विशेष होता है।

यह घर-घर की कहानी है।

अब जहां भी गलती होती है, वहां शनि की दृष्टि पड़ ही जाती है। शनि से कुछ छुप नहीं सकता है। गलतियां करें या नहीं करें शनि की दृष्टि में सबकुछ दिखता है, वह तो बहुत ऊंचे आसन पर बैठा है।

इसीलिये ज्यादातर लोगों को शनि से डर लगता है। निश्चित रूप से आपका यह प्रश्न आयेगा कि शनि की दृष्टि से कैसे बचा जाये।

मैं तो स्पष्ट रूप से कह रहा हूं शनि की दृष्टि से बचा नहीं जा सकता।

पर आपमें शौर्य है और सूर्य की कृपा है तो फिर आप अपनी गलतियें को सुधार देते है।

कर्मशक्ति जब शौर्य के साथ होती है तो वह आपके कर्म को बलवान बना देती है और आपके दोष समाप्त हो जाते है।

शनि में ही वह क्षमता है कि यह अति प्रदायक अर्थात् अति प्रदान करने वाला और अति विनाशक अर्थात् सब कुछ नष्ट कर देने वाला ग्रह है।

शनि मनुष्य को चारित्रिक बल प्रदान करते है जिससे मनुष्य जिम्मेदार, आत्मनियन्त्रण वाला, कठोर निर्णय लेने वाला और ठोस व्यक्तित्व बन जाता है।

शनि ही मनुष्य को बल और संतोष प्रदान करता है, क्योंकि यह बाधाओं पर विजय प्राप्त करने की शक्ति देता है।

पुराणों में कथा आती है कि राम का वनवास शनि की दशा में हुआ। द्रौपदी का चीर हरण शनि की दशा में हुआ, सीता का हरण शनि की दशा में हुआ।

एक बार शनि देवता की दृष्टि अयोध्या पर पड़ने वाली थी। राजा दशरथ को उनके ज्योतिषियों ने सूचित किया कि शनि कृतिका नक्षत्र के अन्त में जा पहुंचे हैं और जब शनि रोहिणी का भेदन करके आगे बढ़ेंगे उस समय अत्यन्त उग्र शाकट भेद नामक योग उत्पन्न होता है जो देवताओं तथा असुरों के लिए भी भयंकर है। चूंकि रोहिणी प्रजापति ब्रह्माजी का नक्षत्र हैं, उसका भेदन हो जाने पर प्रजा किस प्रकार रह सकती है?

ब्रह्मा एवं इन्द्र के लिए भी यह योग असाध्य है, फिर आप क्या करेंगे? इस घोर त्रासदी का निवारण कैसे करेंगे?

राजगुरु वसिष्ठ की बात सुनकर दशरथ गंभीर सोच विचार में पड़ गए। फिर उन्होंने अपने मन में महान साहस एकत्र करके दिव्यास्त्रों सहित दिव्य धनुष लेकर रथ पर आरुढ़ हो बड़े वेग से वे नक्षत्र मण्डल में गए। रोहिणी पृष्ठ सूर्य से सवा लाख योजन ऊपर है। वहां पहुंचकर राजा ने धनुष को कान तक खींचा और संहारास्त्र का संधान किया।

उस अस्त्र को देखकर शनि कुछ हंसते हुए बोले- हे राजन तुम्हारा महान पुरुषार्थ शत्रु को भय पहुंचाने वाला है। मेरी दृष्टि में आकर देवता, असुर, मनुष्य, नाग, किन्नर, गन्धर्व सभी भस्म हो जाते हैं। मगर तुम जीवित हो। तुम्हारे पुरुषार्थ से मैं सन्तुष्ट हूं। वर मांगों।

महाराज दशरथ कहते हैं, आप रोहिणी का भेदन कर आगे नहीं बढ़ें। इससे बारह वर्ष के लिए दुर्भिक्ष नहीं आ पाऐगा।

शनि देवता ने राजा दशरथ की बातों को ध्यानपूर्वक सुना और उनकी साहसिकता और निष्ठा से प्रसन्न होकर कहा,

राजा दशरथ, तुम्हारी प्रजा के प्रति तुम्हारी चिंता और तुम्हारा धर्म के प्रति समर्पण देखकर मैं तुम्हारी नगरी पर अपनी दृष्टि नहीं डालूंगा।

तो शौर्य है सूर्य का स्वरूप। क्या कहा था शनि ने राजा दशरथ को प्रजा के प्रति तुम्हारी चिन्ता और धर्म के प्रति समर्पण देखकर मैं तुम्हारी नगरी पर दृष्टि नहीं डालूंगा।

अब धर्म, गृहस्थ धर्म भी है। इस गृहस्थ धर्म को श्रेष्ठ रूप से कैसे निभाया जाये? यहां शौर्य काम नहीं आता। अब जो मैं बात कह रहा हूं, प्रत्येक गृहस्थी के लिये, पति-पत्नी के लिये आवश्यक है।

एक बार एक पत्नी ने अपने पति से आग्रह किया कि - आप मुझे मेरी छः कमियां बनायें जिन्हें सुधारने से वह श्रेष्ठ पत्नी बन जाये। अब पति बेचार हैरान रह गया। बड़ा असमन्जस, मन ही मन सोचा कि मैं इसे बड़ी आसनी से छः बातों की सूची दे सकता हूं जिनमें सुधार की जरूरत है। फिर मन ही मन सोचा कि ईश्वर जानता है कि मेरी पत्नी मुझे साठ बातों की सूची थमा सकती है जिसमें मुझे सुधार की आवश्यकता है।

पति ने ऐसा नहीं किया और कहा कि मुझे थोड़ा सोचने का समय दो। दूसरे दिन ऑफिस गया, रास्ते में फूल वाले का बोला छः गुलाब का गुच्छा बनाओं और उसके साथ एक चिट्ठी डाली। उसमें क्या लिखा -

मुझे तुम्हारी छः कमियां तो नहीं मालूम जिसमें सुधार की जरूरत है,

तुम जैसी भी हो मुझे बहुत अच्छी लगती हो।

शाम को पतिदेव घर आये, पत्नी द्वार पर इंतजार कर रही थी। आंखों में प्रेम के अश्रु थे और कहने की आवश्यकता नहीं है कि उनके जीवन में मिठास और अधिक बढ़ गई।

पति भी इस बात पर खुश हुआ कि उसने बार-बार आग्रह के बावजूद पति को छः कमियों की सूची नहीं दी।

इसलिये यथा संभव जीवन में सराहना करने में कंजूसी न करें और आलोचना से बचकर रहना ही समझदारी है।

जिन्दगी का यह हुनर भी आजमाना चाहिये
जंग अगर अपनों से हो तो हार जाना चाहिये।

पसीना उम्र भर का उसकी गोद में सूख जायेगा।
हम सफर क्या चीज है, ये बुढ़ापे में समझ आयेगा।।

हमारे सूर्यदेव ने भी अभिमान नहीं किया। हर साल चले जाते है, शनि के घर। उसको शांत करने के लिये, उसको मनाने के लिये।

शनि की तो पूजा करो, वह तो आपके पूरे शरीर में व्याप्त है क्योंकि वही कर्मफल देता है। हमारे कर्मों का फल। पर फल के साथ बाधा यह है कि जब तक मिलता नहीं है हम सब उसे पाने के लिये व्याकुल रहते है और जब मिलने का समय आता है तो उस समय चिन्ता घेर लेती है। कितनी भी मेहनत करें रिजल्ट का टाईम आता है तो हर विद्यार्थी को चिन्ता होती है।

बहुत परिश्रम किया, प्रमोशन की लिस्ट डिक्लेयर होने वाली होती है तो चिन्ता आती है। बहुत सामान बेचा पेमेन्ट जब आने वाला होता है तो चिन्ता हो ही जाती है कि पूरा आयेगा या नहीं आयेगा।

इसीलिये सामान्य लोग कर्मफल सहजता से स्वीकार नहीं करते। शनि हमारे ज्ञात-अज्ञात कर्म, मानसिक शारीरिक कर्म सब देख लेते है।

हर व्यक्ति कोई न कोई मुखौटा लगाये रखता है और सूर्य पुत्र शनि तो उस मुखौटे के भीतर भी देख लेते है। क्योंकि कर्म तो प्रतिपल घटित हो रहा है। दिनभर में अनगिनत कर्म फलीभूत हो रहे है।

चलो, विचार करो कि ऑफिस में आपने दिनभर काम किया। छुट्टी का समय आया, आपके अधिकारी ने कहा कि यह काम और है इसे आज ही पूरा करना है और आप कहोगे, जी.. जी...। आप ऑफिस में दस बजे तक रुककर काम पूरा कर देंगे। ऊपर से हंसते रहोगे लेकिन मन ही मन सौ गालियां निकाल दोगे।

देखो भाई आपने काम भी पूरा किया और मानसिक रूप से 100 अपशब्द भी कह दिये। अब क्या बात हुई, अधिकारी ने आपका काम देखा और शाबासी दी।

शनि ने आपके मन में आये उन अपशब्दों को भी सुन लिया, जो आपने मन ही मन बोलें थे।

सब देख रहे शनि - इतनी चिन्ता करने की आवश्कतया नहीं है शनि की।

हम है सूर्यवंशी, सूर्य के साधक और सूर्यदेव है हमारे मित्र दोनों की आपके कर्मों का लेखा-जोश रखते है अन्तर है। शानि न्यायधीश रूप में देखते है, सूर्य मित्र रूप में आपके दोषों को देखकर उसे शनि की दृष्टि से बचाते है।

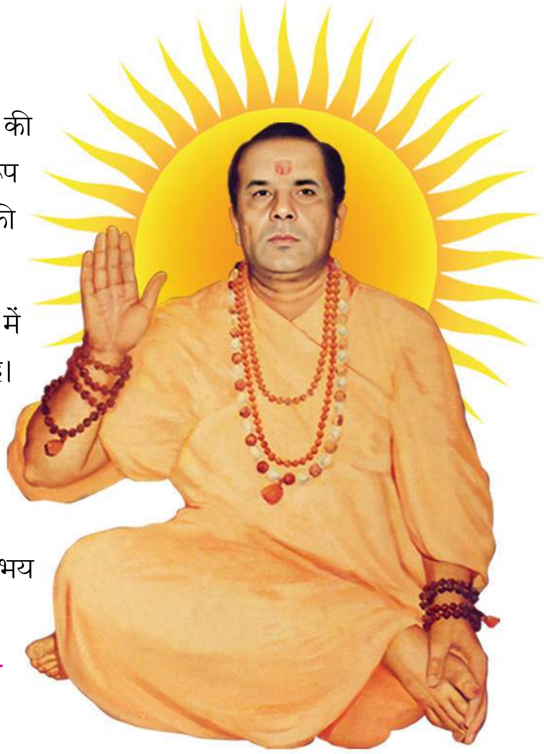

इसीलिये गुरु की उपमा सूर्य से की गई है। गुरु हमारे जीवन में सूर्य रूप में आते है। वे लेखा-जोखा नहीं करते, सीधे देखते हे। अपने पुत्र शनि को भी कहते है कि ये मेरी प्रजा है इस पर दयालु रहो। कहते है कि सूर्य की गर्मी न्याय को भी मुलायम बना देती है। इसीलिये सूर्य साधना से शनि दोष की भी निवृत्ति हो जाती है।

सूर्य का मार्ग तो सीधा है।, किरणें सीधी है। फिर जीवन में भय चिन्ता परेशानी नहीं रहती है। जब शक्ति का विकास हो जाता है।

सूर्य हमें सम्मोहन शक्ति प्रदान करता है, कर्म शक्ति प्रदान करते हैं

तो सबसे महान् क्या हुआ कर्म ओर कर्म हाथ-पैर, बुद्धि और ज्ञान के सहयोग से सम्पन्न होता है। एकाग्रता का भाव होना चाहिये।

मुझसे किसी साधक ने एक बार पूछा कि गुरुजी मेरा शरीर ठीक नहीं रहता है। कोई न कोई व्याधि लगी ही रहती है। चलो एक छोटी सी कहानी सुनों, तुम खुद ही निर्णय कर लेना।

एक शहर में एक सेठजी रहते थे, बड़ा व्यापार, बड़ा घर, नौकर चाकर, भरा पूरा परिवार सब तरह के सुख था बस ही दुःख था।

रात को नींद नहीं आती थी और थोड़ी देर आंख लग जाती भयंकर सपने आते। बहुत बैचेनी रहती, बहुत ईलाज कराया लेकिन रोग घटने की बजाय, बढ़ता ही जा रहा था।

एक दिन नगर में एक संत आये बड़े ही ज्ञानी, लोगों का दुःख दर्द दूर करते।

सेठ जी को पता लगा वे भी गये और अपनी विपदा कह सुनाई और बोलें कि महाराज जी जैसे भी हो मेरा कष्ट दूर कर दीजिये।

संत ने उन्हें देखा और कहा कि - आपके रोग का एक ही कारण है आप अपंग हो। सेठ जी का बड़ा आश्चर्य हुआ कि मैं अपंग कैसे मेरे शरीर में स्वस्थ हाथ-पैर है।

संत ने हंसते हुए कहा कि - **अपंग वह नहीं होता जिसके हाथ-पैर नहीं होते। वास्तव में अनंग तो वह होता है जो हाथ-पैर होते हुए भी उनका इस्तमाल नहीं करता।**

संत ने पूछा - बताओं आप शरीर से कितना काम करते हो? सेठ जी विचार में पड़ गये। वे क्या जवाब देते, वे तो हर छोटे-बड़े काम के लिये नौकरों पर ही निर्भर रहते।

संत ने कहा कि यदि आप अपने रोग से बचना चाहते हो तो स्वयं अपने हाथ-पैर से इतनी मेहनत करों कि थक कर चूर हो जाओं। एक सप्ताह में तुम्हारी बीमारी चली जायेगी।

वही हुआ, एक सप्ताह वह अपने सारे काम खुद करने लग गया। बहुत गहरी नींद आई, बहुत विश्राम मिला, शरीर और मन तरोताजा हो गया।

मैं आपको भी यही कहता हूं कि तन के आरोग्य से मन को आरोग्य मिलता है और जब मन आरोग्यवान नहीं होता है तो रात को दिन नहीं आती है।

मैं आपको कह रहा हूं यदि आपको भी अपने कार्यो में सफलता नहीं मिल रही है, तो एक बार दिल लगाकर मेहनत करो।

देखों भाई! जो किस्मत में नहीं लिखा है वह मेहनत से मिल जाता है।

कठिन परिश्रम, कर्म वह कीमत है जो हमें सफलता के लिय चुकानी पड़ती है। यदि आप परिश्रम रूपी कर्म कर्मरूपी कीमत चुकाने के लिये तैयार है तो अपने जीवन में सफलता अवश्य प्राप्त करेंगे।

मनुष्य स्वयं अपने कर्मों का लेखा-जोखा नहीं कर सकता है। वह तो सदैव सोचता है कि जो मैं कर रहा हूं वह ठीक है। फिर समझाता है कि अपने परिवार की उन्नति के लिये कर रहा हूं। छल-कपट भी करता है **लेकिन एक बात याद रखिये छल-कपट से आपके कर्म शुद्ध नहीं हो सकते है। शुद्ध कर्म से ही शुभ फल प्राप्त होता है।**

स्कन्द पुराण में एक बहुत सुन्दर कथा आती है -

काशी नरेश की कन्या कलावती के के साथ मथुरा के राजा दाशर्ह के साथ हुआ। बड़ी धूमधाम से विवाह हुआ। विवाह के बाद राजा ने अपनी पत्नी को अपने साथ बुलाया पर पत्नी ने इंकार कर दिया। राजा ने बल प्रयोग की धमकी दी।

कलावती बड़ी विद्वान थी, उसने कहा आप मेरे पति है, यदि हमें अच्छे से गृहस्थ धर्म निभाना है तो बल प्रयोग नहीं स्नेह प्रयोग होना चाहिये। स्नेह से ही गृहस्थ जीवन में अभिवृद्धि होती है। यह सुनकर राजा को क्रोध भी आया और बात अनसुनी कर पत्नी के पास गया।

और जैसे ही पत्नी को स्पर्श किया, उसके शरीर में एक विद्युत करंट जैसा लगा, राजा का अंग-अंग जलने लगा। एकदम घबराकर दूर हटा और बोला आप तो इनती सुन्दर कोमल है फिर आपका स्पर्श करते ही मुझे इतनी जलन क्यों होने लगी।

पत्नी ने कहा मैंने बाल्यकाल में दुर्वासा ऋषि से शिव मंत्र लिया और वह मंत्र जप करने से मेरी सात्विक ऊर्जा का विकास हुआ। आपने अब तक भोग ही भोग किये है, राजन् जिस प्रकार अंधेरी रात और दोपहर एक साथ नहीं रह सकते। वैसे आपका अन्तर्मन कलुषित है और मेरा अन्तर्मन बिल्कुल विशुद्ध है। साथ होना असंभव है।

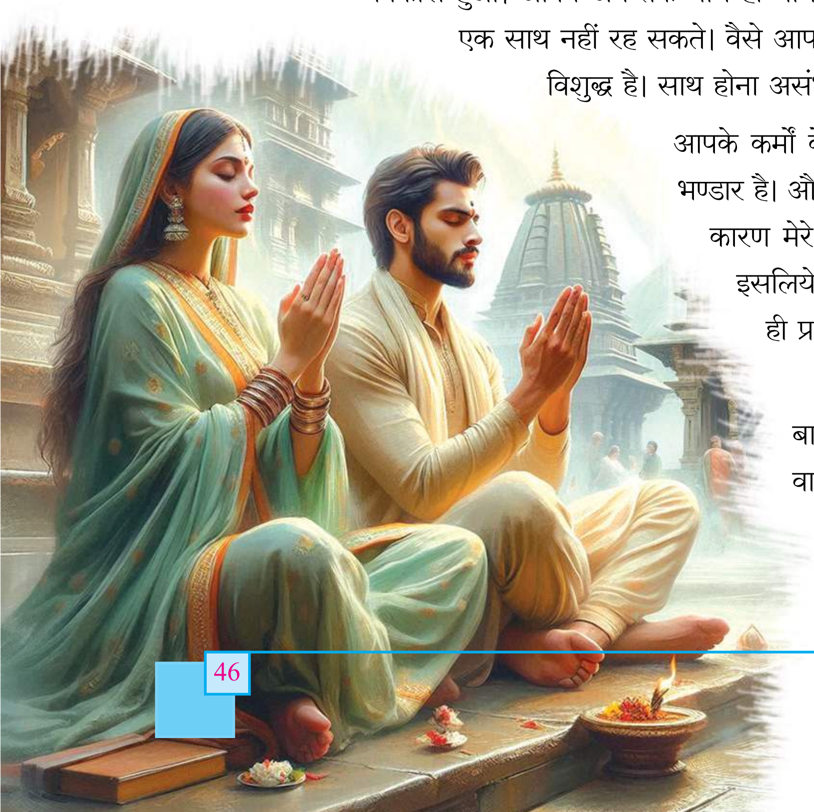

आपके कर्मों के कारण आपके शरीर में, मन में बुद्धि में दोषों का भण्डार है। और मैंने जो साधना, तपस्या और मंत्र जप किया है उस कारण मेरे शरीर में ओज, तेज, आध्यात्मिक कर्म अधिक है। इसलिये मैं आपके निकट नहीं आ सकती। आपसे दूर रहकर ही प्रार्थना करती हूं।

आप बुद्धिमान है, बलवान है, तेजस्वी है, धर्म की बात भी आपने सुन रखी है फिर भी आपमें विषय वासना के भोग अधिक है।

राजा के बड़ा आश्चर्य हुआ कि आपको यह कैसे मालूम पड़ा।

स्त्री ने बड़े भोलेपन में कहा कि - जब हृदय शुद्ध होता है तो दूसरों के मन की तरंगें स्पष्ट सुनाई दे जाती है।

अब राजा ने कहा कि मुझे भी भगवान शिव का यह मंत्र दे दो। मेरा सौभाग्य है कि मुझे आप जैसी ज्ञानी पत्नी प्राप्त हुई है।

रानी ने कहा कि आप मेरे पति है, मैं आपकी गुरु नहीं बन सकती है। उचित रहेगा कि हम दोनों गर्गाचार्य महाराज के पास चलते है।

दोनों यमुना तट पर गर्गाचार्य जी के पास गये और गुरु आज्ञा से, स्नान आदि से निवृत होकर गुरु शिव स्वरूप में ध्यान में बैठे और अपने दिव्य नेत्रों से शांभवी दीक्षा द्वारा राजा पर शक्तिपात किया।

आगे कथा आती है कि देखते ही देखते राजा के शरीर से कई कौऐं निकलने लगे, काले कौऐं अर्थात् छोटे-छोटे परमाणु। अशुभ कर्मों के तुच्छ परमाणु करोड़ों की संख्या में सूक्ष्म दृष्टि से गुरु द्वारा ही देखे जाते हे। इसे कहते है शमन क्रिया।

गुरु चरणों में, संत चरणों में बैठकर साधक को लाभ ही लाभ प्राप्त होता है। उसकी मंद बुद्धि पर पड़े कुसंस्कार समाप्त होते है। आत्मभाव प्राप्त होता है और व्यक्तिगत जीवन में भी शांति और समाजिक जीवन में सम्मान मिलता हैं।

देखों शुभ-अशुभ, पूर्व जन्मों के संस्कारों का प्रभाव, हमारे भीतर उथल-पूछल मचाता हे। हमारा शरीर पाप और पुण्य का मिश्रण है। हमारा अन्तःकरण शुभ और अशुभ मिश्रिण हैं जब हम अन्तःकरण में शुभ नहीं होते तो अशुभ परमाणु बढ़ जाते है।

जीवन में कर्म क्या है? पुरुषार्थ क्या है? यह है कि हमारे जीवन में अशुभ क्षीण हो जाये तथा शुभ भाव उच्चता की और बढ़े।

जीवन में ज्ञान का सूर्य सदैव और सदैव प्रकाशवान हो। जहां ज्ञान है वहां श्रेष्ठ गति है जहां श्रेष्ठ गति है वहा शुभता है, श्री है, समृद्धि है, शांति और संतोष है।

आप अपने जीवन में पूर्ण आरोग्य के साथ भौतिक, आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त करें।

बहुत-बहुत आशीर्वाद...

परम पूज्य गुरुदेव नन्द किशोर जी श्रीमाली

**(मकर संक्रान्ति महोत्सव,
सम्बलपुर - 2025)**

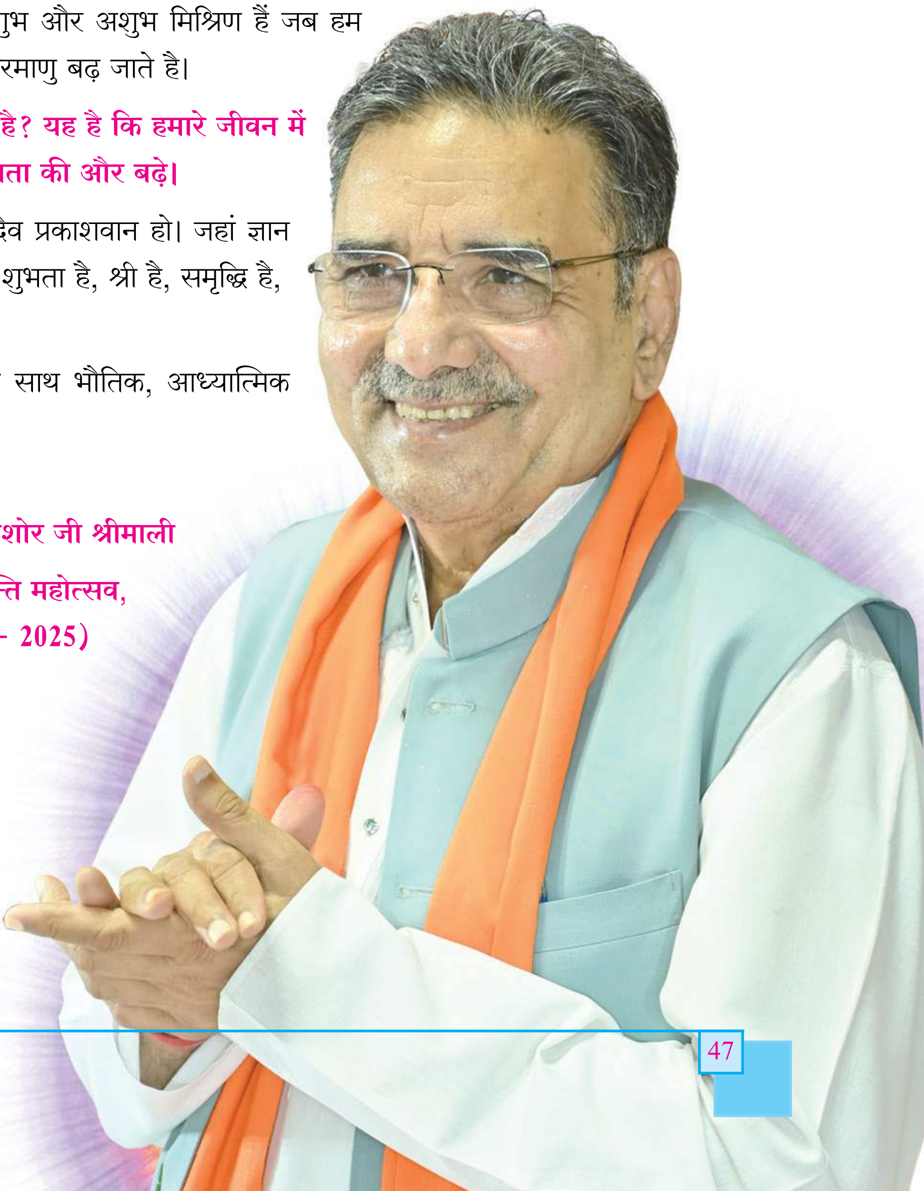

जून 2026 अंक में प्रकाशित

आपको याद दिलाने के लिये

आपको इस मास ये साधनाएं सम्पन्न करनी हैं
जिनका पूर्ण विवरण पिछले माह जून 2026 में प्रकाशित है

शमन महादीक्षा

(पापमोचिनी तृतीया - 2 जुलाई 2026)

शमन अर्थात् जीवन चक्र दोष जो चाहे इस जन्म के हों अथवा पूर्व जन्मों के उनको समाप्त करना। सद्गुरुदेव अपने शक्तिपात द्वारा चित्त पर आये हुए दोषों का नाश कर साधक के चित को प्रकाश से आलोकित कर देते है जिससे शिष्य के कर्म आसक्ति के बंधन से मुक्त हो जाते है, चेतना में निर्मलता का प्रवाह होने से विकास यात्रा में गति आ जाती है और संचित पुण्यों का फल प्राप्त होने लगता है।

जब एक बार शुद्धिकरण और शमन की यह क्रिया प्रारम्भ हो जाती है तो जीवन यात्रा में आनन्द, शांति, शीतलता प्राप्त होने लगती है। भारहीन, द्वेष मुक्त जीवन यात्रा परम सुख प्रदायिनी होती है।

साधक को जीवन में जब भी अवसर प्राप्त हो अपने चित पर वर्तमान युग के क्रियाकल्पों के कारण आई अशुद्धि के निवारण हेतु शमन महादीक्षा अवश्य ग्रहण करनी चाहिये। जिस प्रकार शारीरिक शुद्धि के लिये निरन्तर स्वच्छता आवश्यक है उसी प्रकार आध्यात्मिक, भौतिक उन्नति के लिये चित्त की शुद्धता निरन्तर आवश्यक है।

- शमन महादीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

पापांकुशा साधना

(पापमोचिनी तृतीया - 2 जुलाई 2026)

ओजवान, ऊर्जावान स्वस्थ शरीर के लिये शरीर के आन्तरिक अंगों का सुचारू रूप से चलना आवश्यक है उसी प्रकार मन, चित्त को निर्मल रखने के लिये, शुद्ध रखने के लिये निरन्तर शुद्धि आवश्यक है जिससे आत्म प्रकाश से प्रकाशित मन, चित्त शुद्ध कर्म कर सके।

इस क्रिया को पापांकुशा भी कह सकते है। इस क्रिया को कर्म बंधन से मुक्ति भी कह सकते है। इस क्रिया को शमन भी कह सकते है कि हम अपनी स्वयं की शक्ति द्वारा उन विरोधी तत्वों का संहार कर रहे है जो हमारे मन और देह को पीड़ित कर रही है। पापांकुशा साधना कल्पतरु की भांति है। जीवन को ऊर्जावान बनाये रखने के लिये और यम-नियम अनुसार जीवन के संचालन के लिये सतत् रूप से पापांकुशा साधना सम्पन्न करनी चाहिये।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 700/-

आपदा उद्धारक बटुक भैरव साधना

(बटुक भैरव जयन्ती - 24 जून 2026 अथवा किसी भी रविवार)

बटुक भैरव 'रुद्र' का स्वरूप है जो साधक को बाल्य चेतना, ऊर्जा, शक्ति, विचार, नवाचार प्रदान करते है जिससे साधक अपनी बाधाओं, आपदाओं, समस्याओं को समाप्त कर आनन्द के साथ सुखी जीवन प्राप्त करता है। बटुक भैरव के साधक में न तो छल होता है, न कपट, न भय, न ही सीमाओं का बंधन होता है। वह मानसिक रूप से स्वतंत्र और ऊर्जा से भरा होता है। हर क्षण कुछ नया करने के लिये प्रेरित होता है। बटुक भैरव साधक के अन्दर उस शक्ति भाव को जाग्रत करता है जो समय, समाज और अनुभवों के बोझ से मुक्त होती है। वास्तव में बटुक भैरव सहजता और सरलता के साथ शक्ति का समावेश है। यह वह शाक्ति है जो विनाश नहीं करती, बल्कि सृजन का मार्ग प्रशस्त करती है। इसी कारण बटुक भैरव को आपदा उद्धारक कहा जाता है।

बटुक भैरव साधक को केवल साहस और ऊर्जा ही प्रदान नहीं करते है बल्कि साहस को सही दिशा तथा ऊर्जा को सही उपयोग का मार्ग प्रदान करते है। बटुक भैरव साधक को सिखाते हैं कि असफलता अंत नहीं है, बल्कि एक नयी शुरुआत का अवसर है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 550/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 17)

भैरव दीक्षा

(बटुक भैरव जयन्ती - 24 जून 2026 अथवा किसी भी रविवार)

भैरव शिव समान ऐसे देव हैं जो कि साधक द्वारा किसी भी रीति से उनकी पूजा-साधना स्वीकार करते हुए, प्रसन्न होकर अपने भक्त को पूर्णता प्रदान करते हैं, भैरव सभी प्रकार की योगिनियों, भूत-प्रेत, पिशाच के अधिपति हैं।

किसी भी प्रकार के यज्ञ में, साधना में, गृह प्रवेश में, भूमि पूजन में भैरव की पूजा अवश्य ही की जाती है। जब तक भैरव पूजन नहीं हो जाता, तब तक मूल यज्ञ भी प्रारम्भ नहीं होता, क्योंकि भैरव रक्षा कारक देव हैं। हमारे जीवन में किसी भी प्रकार की आकस्मिक दुर्घटना या आकस्मिक बाधा नहीं आये। हमारे परिवार के सभी सदस्य स्वस्थ रहे तथा विशेष रूप से बालकों के स्वास्थ्य हेतु भी 'भैरव उपासना' अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी गई है। भैरव साधना सद्गुरु द्वारा भैरव शक्तिपात दीक्षा ग्रहण कर ही सम्पन्न करनी चाहिये।

- भैरव दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 19)

वार्ताली तीव्र तंत्र स्तम्भन साधना

(आषढ़ीय गुप्त नवरात्रि - 15 जुलाई 2026 से 22 जुलाई 2026 अथवा किसी भी कृष्ण पक्ष की अष्टमी अथवा अमावस्या)

वार्ताली साधना, शिव साधना का एक प्रमुख भाग है, आदि देव शिव की यह विशेष शक्ति वार्ताली शत्रुहन्ता, मारण, विद्वेषण, स्तम्भन की शक्ति हैं। जब शत्रु अत्यन्त प्रबल हो जाए और सामान्य प्रभाव से वश में न आए तो तंत्र शास्त्र में प्रमुख इस साधना का प्रयोग करना चाहिए।

तांत्रिक वार्ताली साधना निम्न कार्यों के लिए सम्पन्न की जाती है - ☆ जब व्यापार में निरन्तर हानि हो रही हो और कार्य बहुत प्रयास करने पर भी पूरे नहीं हो रहे हों। ☆ जब राज्य बाधाएं बढ़ने लगें ☆ जब आपके अधिकारी आपके अनुकूल न हों और आपको तंग करने का प्रयास करते ही रहें। ☆ किसी कार्य द्वारा मानहानि, अपयश की आशंका हो। ☆ किसी मुकदमे में हार की संभावना हो अथवा मुकदमा निपट ही नहीं रहा हो। ☆ जब मानसिक अशांति बढ़ जाए और आगे बढ़ने का कोई मार्ग न मिले। ☆ जब शत्रु प्रत्यक्ष, अप्रत्यक्ष रुप से हानि पहुंचाने लगें। ☆ घर पर किसी प्रकार का तांत्रिक प्रयोग आपके विरुद्ध किये जाने लगें और घर में हर समय कलह, रोग का वातावरण रहने लगे। ☆ घर पर भूत-प्रेत-पिशाच का डर हो, अदृश्य आत्माएं अपना प्रकोप दिखाने लगें।

स्तम्भन एक गूढ़ शब्द है। जिसका अर्थ है शत्रु को जड़ कर देना, पत्थर सदृश कर देना। उसकी बुद्धि, शक्ति एवं मति को स्तम्भित कर देना।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 23)

विंध्यवासिनी साधना

(विंध्यवासिनी सिद्धि दिवस - 20 जून 2026 अथवा किसी भी शुक्रवार)

'विंध्यवासिनी साधना' मां दुर्गा का ही रक्षा स्वरुप है, जो अपने साधक की हर क्षण रक्षा करती हैं, उसको जीवन की विभिन्न उलझनों से, परेशानियों से मुक्ति दिलाती हैं, और यदि साधक इस सिद्धि को प्राप्त कर ले तो उस पर किसी प्रकार की बाधा का प्रकोप-प्रभाव नहीं पड़ सकता, यहां तक कि कोई तांत्रिक 'कृत्यावार' करता है, जो एक प्रकार का तांत्रिक प्रयोग है, वह भी निष्फल हो जाता है। विंध्यवासिनी तीव्र से तीव्र प्रहारों को भी निष्फल करने की अचूक साधना है, जो बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के लिए भी दुर्लभ है, इस विद्या को सिद्ध कर लेने के बाद, अन्य साधनाओं में स्वतः ही शीघ्र सफलता मिलने लग जाती है।

श्रद्धा और विश्वास के साथ सम्पन्न की गई विंध्यवासिनी साधना साधक को तंत्र के क्षेत्र में आगे बढ़ने की प्रेरणा देती है। सुव्यवस्थित तंत्र प्रक्रिया से साधक का उर्ध्वगामी विकास होता है और उसके मान-सम्मान, पद-प्रतिष्ठा, धन-लाभ इत्यादि में अभिवृद्धि होती है। भय, शत्रु, असफलता इत्यादि से मुक्त साधक आत्मबोध से आनन्द पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 12)

आद्या विभूषिणी योगिनी साधना

(योगिनी एकादशी - 10 जुलाई 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

योगिनी श्रेष्ठ नारी स्वरूपा, पूर्ण चैतन्यता से युक्त होती है। इनके रोम-प्रतिरोम में साधनात्मक बल समाया होता है। अत्यन्त गौर वर्ण, विद्युत आभा सा दैदीप्यमान मुखमण्डल, समोहित करती झील सी गहरी आंखें और उनका चिरयौवन साधक को अभूतपूर्व बल और शक्ति प्रदान करता है। योगिनी साधना के पश्चात् साधक के जीवन में असंभव जैसा कुछ होता ही नहीं है।

योगिनी अपने साधक को मोहन, वशीकरण, स्तम्भन और उच्चाटन की शक्ति प्रदान करती है। साधक का व्यक्तित्व, सौन्दर्य रस और आभा से युक्त हो जाता है।

तंत्र की अत्यन्त उच्चकोटि की साधनाएं योगिनी के साहचर्य के बिना पूर्ण होती ही नहीं है। योगिनी साधना के माध्यम से मनुष्य अपनी समस्त इच्छाओं को पूर्ण कर सकता है, भौतिक और आध्यात्मिक उन्नति प्राप्त कर सकता है। योगिनी भोग और मोक्ष दोनों देने में सक्षम है।

- प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 600/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 59)

योगिनी दीक्षा

(योगिनी एकादशी - 10 जुलाई 2026 अथवा किसी भी शुभ मुहूर्त में)

प्रेम, सौन्दर्य, आकर्षण, सम्मोहन, तेज और माधुर्य जीवन्त चेतना की अभिव्यक्तियां हैं, जो साधक के व्यक्तित्व को प्रभावशाली और पूर्ण बनाती हैं।

तांत्रिक और आध्यात्मिक परम्पराओं में योगिनी शक्ति को दिव्य गुणों की अधिष्ठात्री माना गया है। योगिनी चेतना की जागृत शक्ति हैं, जो साधक के भीतर छिपी संभावनाओं को प्रकट करती हैं।

योगिनी शक्ति साधक को केवल बाहरी उपलब्धियां नहीं देती, बल्कि भीतर के परिवर्तन से जीवन को बदलती है।

योगिनी शक्ति कोई सामान्य उपासना से जागृत होने वाली शक्ति नहीं, सद्गुरु शक्तिपात से प्रकट होने वाली चेतना है।

सद्गुरुदेव शक्तिपात के माध्यम से साधक में योगिनी तत्व का बीजारोपण करते हैं, सुप्त शक्तियों को जाग्रत करते हैं। गुरु की शक्ति साधक के सूक्ष्म शक्ति चक्रों को स्पंदित करती है, आभामंडल को परिष्कृत करती है और उसे योगिनी अनुग्रह के योग्य बनाती है।

योगिनी दीक्षा से साधक को आकर्षण, तेज, वाणी सिद्धि, आन्तरिक रुपांतरण जैसे अनेक लाभ प्राप्त होते हैं। योगिनी शक्ति जीवन को दिव्य, प्रभावशाली और पूर्ण बनाने वाली शक्ति है।

- योगिनी दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/- (जून 2026 पृष्ठ सं. 61)

श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

कल्याणकारी देवाधिदेव महादेव-शिव हमारे इष्ट

शिव ही जीवन का आधार है, शिव ही मृत्युंजय है, शिव ही शक्ति के साथ संयुक्त होकर क्रिया को उच्चतम् स्वरूप प्रदान करने वाले देव हैं, और शिव ही औघड़दानी, संन्यासी, पारमेष्ठि गुरु, गुरुओं के गुरु आदि देव महादेव हैं।

देवाधिदेव महादेव शिव चेतना के सर्वोच्च शिखर पर आसीन है। शिव ब्रह्माण्ड के कण-कण में व्याप्त परम सत्य, अनंत ऊर्जा और साक्षात् चेतना हैं।

शिव का अर्थ ही कल्याण है, वे आदि हैं और अंत भी, वे शून्य हैं और अनंत भी। **शिव संहारक भी हैं और परम रक्षक भी।** जीवन के हर क्षेत्र चाहे वह गृहस्थ जीवन हो, वैराग्य हो, कला हो, या विज्ञान हो शिव हर जगह एक आदर्श के रूप में मार्गदर्शित करते हैं। भगवान शिव हमारे इष्ट हैं, इष्ट अर्थात् जो हमारी आत्मा के सबसे निकट हो, जिससे हम बिना किसी संकोच के जुड़ सकें और जो हमारे भीतर की आध्यात्मिक चेतना को जाग्रत करें।

भगवान शिव भोलेनाथ है, साधकों के प्रार्थना से बहुत जल्दी प्रसन्न होते है। उन्हें जो भी अर्पित किया जाये उसे वह सहर्ष स्वीकार कर लेते है। भगवान भोलेनाथ शिव की पूजा अर्चना में कठोर नियमों, शुद्धता, पूजन सामग्री इत्यादि का दिखावा नहीं है। भोलेनाथ शिव तो केवल एक लोटा जल, कुछ बेलपत्र और सच्ची श्रद्धा से प्रसन्न हो जाते हैं। वे बाहरी आडंबरों को नहीं, बल्कि भक्त के हृदय के भाव को देखते हैं। शिव का भोलापन और सुलभता ही उन्हें हर साधारण से साधारण मनुष्य का इष्ट बना देती है।

देवों के देव महादेव हैं शिव, वे केवल देवताओं के ही ईश्वर नहीं हैं, बल्कि वे दानवों, भूत-प्रेतों, यक्षों, गंधर्वों और समाज द्वारा बहिष्कृत किए गए जीवों के भी स्वामी हैं। जब समुद्र मंथन से अमृत निकला, तो उसे लेने के लिए देवता और असुर आपस में लड़ पड़े। लेकिन जब भयंकर हलाहल विष निकला, जिससे सृष्टि के विनाश का संकट पैदा हो गया, तब न तो देवता आगे आए और न ही असुर। उस समय केवल महादेव ने उस विष को सहर्ष स्वीकार किया और उसे अपने कंठ में धारण कर नीलकंठ कहलाए। जो संसार की भलाई के लिए जहर पीने का साहस रखता हो, वही सच्चा रक्षक हो सकता है। शिव का यह त्यागी और रक्षक स्वरूप ही उन्हें ब्रह्मांड का सर्वोच्च इष्ट बनाता है।

संसार में जीवन धारा के मुख्यतः दो मार्ग माने जाते हैं एक गृहस्थ का मार्ग और दूसरा संन्यास या वैराग्य का मार्ग। भगवान शिव इन दोनों मार्गों के परम समन्वयक हैं। वे एक ओर श्मशान में निवास करने वाले, भस्म रमाने वाले और परम वैरागी दिगम्बर हैं। तो दूसरी ओर वे माता पार्वती के साथ एक आदर्श पति और कार्तिकेय व गणेश के श्रेष्ठ पिता भी हैं। वे संसार के सभी सुखों के बीच रहते हुए भी उनसे पूरी तरह मुक्त रहने का ज्ञान प्रदान करते है।

शिव के स्वरूप का हर एक अंश हमें जीवन जीने की शिक्षा देता है। विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना नीलकंठ स्वरूप में, इच्छाओं और विकारों पर नियंत्रण रखना कामदेव दहन में, समानता और नारी शक्ति को सम्मान शिव के अर्धनारीश्वर स्वरूप में, सादगी और भौतिकता से विरक्ति कैलाश निवासी के स्वरूप में, अहंकार का नाश और मृत्यु की स्वीकार्यता शिव के महाकाल स्वरूप में, निरंतर सजगता और ध्यान शिव के योगी स्वरूप में।

जीवन का परम सत्य हैं शिव, देवाधिदेव महादेव शिव का महात्मय शब्दों की सीमा से परे है। वे केवल एक अलौकिक शक्ति नहीं, बल्कि हमारे भीतर बैठी हमारी अपनी आत्मा हैं। आदि गुरु शंकराचार्य ने निर्वाणषट्कम में कहा है –

चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्...

हमारे चित्त, हमारी आत्मा, हमारे रक्त कण-कण में गुरु स्वरूप में, सद्गुरु स्वरूप में शिव ही विद्यमान है। शिव आत्मा में निवास करते है, उन्हें बाहर नहीं अन्दर ही पाया जा सकता है। **शक्ति भी शिव को ही प्राप्त होती है, आत्मा में विराजित शिव से आत्मसात् करके ही शक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। भीतर के अज्ञान, अहंकार, वासना और क्रोध का संहार करते हैं, तब हमारे भीतर साक्षात् शिव और शक्ति का प्राकट्य होता है।**

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं।
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।।

शक्ति के साथ संयुक्त होकर ही शिव सृष्टि की रचना करने में समर्थ होते हैं; अन्यथा वे स्पन्दन करने में भी समर्थ नहीं।

शिव और शक्ति अर्थात् चेतना और ऊर्जा का मिलन ही सृष्टि का आधार है। शिव चेतना हैं और शक्ति क्रिया। शिव शान्त महासागर हैं तो शक्ति उसकी लहरें। शिव बीज हैं तो शक्ति उसका अंकुरण। शिव अग्नि हैं तो शक्ति उसकी ज्वाला।

शिव का अर्धनारीश्वर स्वरूप मानव जाति को स्पष्ट सन्देश है कि इस संसार में पुरुष और स्त्री एक-दूसरे के विरोधी नहीं, पूरक हैं। सृष्टि दोनों के सामंजस्य से चलती है। जहां केवल कठोरता हो वहां जीवन सूख जाता है, और जहां केवल भावुकता हो वहां स्थिरता नहीं रहती। शिव और शक्ति का मिलन संतुलन का प्रतीक है।

मनुष्य के भीतर जो साहस, प्रेरणा, उत्साह, प्रेम, ज्ञान और करुणा है, वही शक्ति है। जब यह शक्ति शिव अर्थात् चेतना से जुड़ती है, तब चेतना जाग्रत स्वरूप हो जाती है।

हमारे भीतर के राक्षस हैं – काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार और ईर्ष्या। शिव और शक्ति की साधना मनुष्य को इन विकारों से मुक्त करती है।

प्रत्येक मनुष्य के भीतर शक्ति सुप्त अवस्था में विद्यमान है। साधना, मंत्र जप से शक्ति जाग्रत होती है और जाग्रत उर्ध्वमुखी शक्ति सहस्रार में स्थित शिव से मिलती तो मनुष्य को आत्मबोध होता है।

शिव आदियोगी हैं। योग का प्रथम ज्ञान उन्होंने ही प्रदान किया। ध्यान मनुष्य को स्वयं से जोड़ता है। जब मन शांत होता है, तब भीतर की चेतना प्रकट होने लगती है।

शिव की साधना केवल धार्मिक क्रिया नहीं, बल्कि मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग है।

देवाधिदेव महादेव हमारे इष्ट हैं, हमारे गुरु हैं और हमारे जीवन का अंतिम गंतव्य हैं। हर हर महादेव।

शिवाभिषेक

शिवलिंग का जलाभिषेक सृष्टि में सृजन को निरूपित करता है क्योंकि जिस ग्रह पर जल नहीं है, वहां जीवन भी नहीं है ओर जहां जीवन है उसकी आत्मा शिव ही है। शिव से एकाकार होने के लिये, एकोऽहम् बहुस्याम होने के लिए जल अति आवश्यक है। जल के अलावा अन्य स्निग्ध द्रव्य भी अर्पित किए जाते हैं शिव को। जैसे शर्करा, दुध, दही, मधु और घृत।

घृत यज्ञ हेतु हवि में प्रयोग किया जाता है एवं मधु, दूध, दही, शर्करा पंचामृत में प्रयोग किए जाते हैं। ये सारे तत्व मिठास, पौष्टिकता, स्वास्थ्य, मूलभूत तौर पर आनन्द को निरूपित करते हैं।

शिव को इन तत्वों को समर्पित करने का भी कारण है। जो शिव को समर्पित किया जाता वही दुबारा से ग्रहण भी किया जाता है। शिव का अभिषेक मनुष्य के मन को वापस लौटता है क्योंकि आनन्द के स्रोत का जब अभिषेक किया जाएगा तो आनन्द ही मिलेगा – सत चित आनन्द – सत अर्थात् सत्य, चित यानि चित शक्ति और आनन्द शिव हैं, भोले नाथ, रसेश्वर।

श्रावण मास - 30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026

पाशुपतास्त्रेय साधना

शौर्य शक्ति का विस्तार

जीवन में पूर्ण सफलता के साथ भाग्योदय चाहते है, तो भगवान शिव की **'पाशुपतास्त्रेय साधना'** के अलावा और कोई ऐसी साधना नहीं है, जो कि जीवन में पूर्णता दे सके।

पाशुपतास्त्रेय साधना सिद्धि हेतु स्वयं विश्वामित्र को कठिन तपस्या करनी पड़ी थी। मार्कण्डेय ऋषि ने एक स्वर में स्पष्ट किया है, कि पाशुपतास्त्रेय साधना जीवन का सौभाग्य है। भगवान शिव को प्रसन्न करने के लिए, उनसे समस्त साधनाओं में सिद्धि और सफलता प्राप्त करने का वरदान प्राप्त करने के लिए यही प्रयोग श्रेष्ठ और श्रेयस्कर है।

श्रावण मास (30 जुलाई 2026 से 28 अगस्त 2026) के किसी भी दिन किए जाने वाले इस पाशुपत साधना के **'शिव पुराण'** में कई लाभ बताए गएं हैं -

1. **ग्रह संयोगों एवं स्वयं के कर्म दोषों से साधनाओं में सिद्धि मिलते - मिलते रह जाती है, उन सभी के दुष्प्रभाव भगवान पशुपति की कृपा से समाप्त हो जाते हैं** और उसके कर्म दोषों व ग्रह नक्षत्रों का विपरीत प्रभाव लगभग नगण्य हो जाता है, जिससे किसी भी साधना में सफलता निश्चित हो जाती है।
2. साधक को जीवन में कहीं पर भी असफलता, अपमान या पराजय नहीं देखनी पड़ती।
3. भगवान शिव भाग्य के अधिपति देवता हैं। **जिन का भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमजोर हो अथवा जीवन में कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहे हों, तो उन्हें अवश्य ही पाशुपतास्त्रेय साधना सम्पन्न करनी चाहिए।**
4. इस साधना को यदि पूर्ण श्रद्धा और भक्ति के साथ सम्पन्न किया जाए तो **साधक के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते हैं।**

इस साधना में **'बाण लिंग'** की मुख्य रूप से आवश्यकता होती है। **बाण लिंग** को बिल्व पत्र का आसन देकर किसी पात्र में स्थापित करें और निम्न ध्यान मंत्र करें -

शान्तं पद्मासनस्थं शशिधरमुकुटं पंच वक्त्रं त्रिनेत्रं।
शूलं वज्रं च खड्गं परशुमभयदं दक्षभागे वहन्तम्।
नागं पाशं च घण्टा प्रलयहुतवहं साङ्कुशं वामभागे
नाना अलंकार युक्तं स्फाटिक मणिनिभं पार्वतीशं नमामि।।

शिव जो शान्त स्वरूप हैं, पद्मासन में विराजमान हैं, मस्तक पर चन्द्रमा का मुकुट धारण करने वाले हैं, जिनके पांच मुख हैं, तीन नेत्र हैं, जो अपने दाहिने भाग की भुजाओं में शूल, वज्र, खड्ग, परशु और अभयमुद्रा धारण करते हैं तथा वामभाग की भुजाओं में सर्प, पाश, घंटा, प्रलयाग्नि और अंकुश धारण किये रहते हैं, उन नाना अलंकारों से विभूषित एवं स्फटिक मणि के समान श्वेत वर्ण भगवान पार्वती ईश को नमस्कार करता हूं।

अब अपने सिर पर एक पुष्प रखें तथा बाण लिंग के सामने भी एक पुष्प रखकर अपने और शिव के परस्पर प्राण सम्बन्ध स्थापित करते हुए निम्न उच्चारण करें -

पिनाक-धृक् इहावह इहावह, इह तिष्ठ इह तिष्ठ,
इह सन्निधेहि इह सन्निधेहि, इह सन्निधत्स्व,
यावत् पूजां करोम्यहं। स्थानीयं पशुपतये नमः।

इसके बाद **'रुद्रयामल तंत्र'** के अनुसार **'रुद्राक्ष माला'** से निम्न मंत्र की 21 माला मंत्र जप करें -

।। ॐ हर महेश्वर शूलपाणि पिनाक धृक् पशुपति
शिव महादेव ईशान नमः शिवाय।।

यह सम्पूर्ण प्रकार की सफलता देने वाला मंत्र है और इसके माध्यम से पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है। शास्त्रों में इसे **'अष्टाष्ट मंत्र'** या **'अष्ट शिव मंत्र'** कहते हैं। प्रयोग समाप्ति के बाद समस्त साधना सामग्री जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठित न्यौ. - 450/-

सद्गुरुदेव अमृत वचन है -

तमसो मा ज्योतिर्गमय,
असतो मा सद्गमय,
मृत्योर्मामृतं गमय।

शिव के अतिरिक्त और कौन है जो हमारे जीवन को प्रकाश सत्य और अमरता की ओर ले जाएगा, पर क्या यह सब बिना शौर्य के संपन्न हो पाएगा?

देखो तुम सब निखिल शिष्य हो, मैं जान रहा हूं जीवन महाभारत है, लेकिन मेरे शिष्य धर्म के साथ खड़े हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे अर्जुन महाभारत में थे, कर्ण अधर्म के साथ था, उसने शक्ति को साधा हुआ था, ऐसे में अर्जुन ने कृष्ण की आज्ञा से अपनी जीत सुनिश्चित करने के लिए तपस्या की और शिव को प्रसन्न किया और उनसे पाशुपतास्त्रेय ग्रहण किया, जिसके द्वारा युद्ध में जीत संभव हो सके।

जहां भी धर्म होगा, वहां शिव आएंगे गुरु रूप में। कर्ण ने गुरु को छलकर विद्या ग्रहण की थी, इसलिए जिस समय उन्हें विद्या की सबसे ज्यादा आवश्यकता थी उस समय विद्या ने उनका साथ नहीं दिया, क्योंकि गुरु के साथ किया गया छल वापस लौटता है, ऐसा छल करके आप जीत नहीं सकते।

उच्च उद्देश्य के साथ शौर्य का भाव होना चाहिए और शौर्य के साथ सावधानी रखनी चाहिए। शत्रुओं को मारना है, बाधाओं को समाप्त करना है शौर्य का अर्थ बलिदान नहीं, अपितु बाधाओं का बलिदान करना है।

वास्तविक शौर्य अपने आपको मारना नहीं है। पीड़ा और तिल-तिल से मरना नहीं है बल्कि अपने शौर्य से अपनी बाधाओं को समाप्त करना है।

शौर्य का अर्थ है जोश जो आपके बल को विस्तार दे, प्रबलता का भाव दे, संहार का भाव दे।

शिव पुराण के अनुसार शौर्य प्रदायक पाशुपतास्त्रेय साधना दीक्षा के द्वादश लाभ इस प्रकार हैं -

1. जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त होती है, और हर स्थान पर सफलता प्राप्त होती है।
2. जीवन से रोग समाप्त होते हैं और वह पूर्ण निरोगी अनुभव करता है।
3. अकाल मृत्यु भय समाप्त होता है, फलस्वरूप दुर्घटना या मृत्यु की आशंका नहीं रहती।
4. शरीर में ऊर्जा, बल, साहस और क्षमता प्राप्त होती है।
5. गृहस्थ जीवन में अनुकूलता प्राप्त होती है।
6. भगवान शिव को कुबेराधिपति कहा गया है, इनकी साधना करने से पूर्ण रूप से लक्ष्मी प्राप्त होती है।
7. योग्य संतान की प्राप्ति होती है।
8. शत्रु अपने आप समाप्त होने लगते हैं और जीवन में शत्रुओं का भय नहीं रहता।
9. जिनका भाग्योदय नहीं हो रहा हो या जिनका भाग्य कमजोर हो अथवा जीवन में कार्य भली प्रकार से सम्पन्न नहीं हो रहे हो तो भाग्योदय की स्थिति बनती है।
10. भगवान शिव सम्पूर्ण स्वरूप है। पाशुपतास्त्रेय साधना दीक्षा से शिव के भव्य दर्शन सम्भव होते हैं और साधक के जीवन के सभी मनोरथ पूर्ण हो जाते है।

पाशुपतास्त्रेय दीक्षा (प्रति चरण) न्यौ. - 3100/-

गन्धर्वराज पुष्पदंत भगवान शिव की अर्चना के लिये नित्य अदृश्य रुप मे एक राजा के बगीचे मे जाकर सुगन्धित पुष्प तोड़ कर लाते थे। राजा ने काफी छानबीन की, कि पुष्प कौन ले जाता है, परन्तु पता न चल सका। अंत मे यह निष्कर्ष निकला, कि कोई अदृश्य होकर इस उपवन से फूल ले जाता है। इसके समाधान के लिये राजा ने उपवन के चारों ओर **शिव निर्माल्य** फैला दिया, जिससे उसे लांघते ही अदृश्य व्यक्ति की अदृश्यता क्षीण हो जाए और वह दिख जाए। अगले दिन पुष्पदंत ने जैसे ही फूल तोड़ने के लिये **शिव निर्माल्य** को लांघा, वैसे ही मालियों ने उन्हे देख लिया और पकड़ कर राजा के कारागार में डाल दिया।

जब कारागार में पुष्पदंत को पता चला कि उन्होंने भगवान शिव के निर्माल्य को लांघा है, तो उन्हे अपराध बोध हुआ, उन्होंने शिव को प्रसन्न करने के लिये कारागार में ही शिव की उपासना की, जिससे भगवान प्रगट हुए और उन्हें मुक्ति मिली। उन्होंने **पुष्पदंतेश्वर शिवलिंग** की स्थापना की।

पुष्पदंत प्रणीत शिव साधना करने से साधक केसभी कार्य सिद्ध होते हैं, यदि किसी कार्य में कोई रुकावट आ रही हो, तो वह समाप्त हो जाती है - **जैसे संतान का विवाह नहीं हो पा रहा हो, किसी योजना के क्रियान्वित होने में बार-बार विघ्न उपस्थित हो रहे हैं, या किसी भी कार्य को आपने हाथ में लिया हो और आप उसमें पूर्ण सफलता चाहते हो किसी प्रकार की कोई राज्य बाधा या सरकारी बाधा से आपके कार्य रुक रहे हों, कोई धन आपका कहीं अटका हो, आदि।**

इस साधना को **श्रावण मास के किसी भी दिन अथवा किसी भी प्रदोष** से प्रारम्भ किया जा सकता है। उत्तर दिशा की ओर मुख करके गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। किसी थाली में सुगन्धित पुष्प से स्वास्तिक बना कर उस पर **'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र के चारों दिशाओं मे **'चार पुष्पदंत रुद्राक्ष'** स्थापित करें। यंत्र एवं रुद्राक्ष का कुंकुम, अक्षत, धूप, दीप आदि से पूजन करें। दाहिने हाथ में पुष्प लेकर किस कार्य की पूर्णता के लिये यह साधना कर रहें हैं, उस प्रयोजन को बोलें और फिर उस पुष्प को यंत्र चढ़ा दें। फिर **'पुष्पदंतेश्वर माला'** से निम्न मंत्र की ग्यारह माला जप सांत दिनो तक नित्य करें -

पुष्पदंतेश्वर शिव मंत्र

॥ ॐ ह्रीं ह्रौं कार्य सिद्धिं नमः शिवाय ॥

साधना समाप्ति होने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक सभी सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर दें।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 460/-

ब्रह्मा के पौत्र अङ्गिरस समस्त शास्त्रों के ज्ञाता, वेदो के पारंगत थे, उन्होंने भगवान महादेव की तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर भगवान शिव प्रकट हुए और वर मांगने को कहा अङ्गिरस बोले कि मैं तो आपके दर्शन से ही कृतकृत्य हो गया हूं, अब कोई कामना नहीं रहीं है। इस पर शिव ने कहा -

'तुमने महान तप किया है, तुम इन्द्र आदि सभी देवताओं के गुरु होओगे तथा सभी ग्रहों में पूज्य होओगे और 'बृहस्पति' नाम से पुकारे जाओगे। तुम बड़े वक्ता और विद्वान होओगे, तुम्हारी या तुम्हारे द्वारा जो मेरी अर्चना करेगा, वह तुम्हारे समान ही विद्वान एवं श्रेष्ठ वक्ता बनेगा।'

तदनन्तर बृहस्पति को देवताओं का आचार्य पद प्राप्त हुआ और वे स्वर्गलोक के सर्वोच्च पद पर आसीन हुए। धनबल, राज्य बल से भी अधिक श्रेष्ठ **'ज्ञान बल'** है। इस ज्ञान को, समस्त शास्त्रों के ज्ञान को, आध्यात्मिक सूक्ष्मताओं को जानने वाले ज्ञानी की सर्वत्र पूजा होती है- **'विद्वान सर्वत्र पूज्यते'**।

देवगुरु बृहस्पति द्वारा प्रणीत शिव साधना से व्यक्ति की पूर्ण आध्यात्मिक उन्नति होती है, मोक्ष मार्ग प्रशस्त होता है और यदि पूर्ण श्रद्धा से साधना सम्पन्न कर ली जाये तो भगवान शिव के परोक्ष-अपरोक्ष दर्शन भी सम्भव होते हैं। बृहस्पति की यह साधना करने से गुरु कृपा भी प्राप्त होती है, क्योंकि बृहस्पति गुरु के ही रूप हैं।

इस साधना को **श्रावण मास के किसी भी दिन अथवा किसी भी प्रदोष** से प्रारम्भ किया जा सकता है। इस साधना को प्रातःकाल ही सम्पन्न करना चाहिए। उत्तर या पूर्व दिशा की ओर मुख कर, गुरु चित्र एवं शिव चित्र का संक्षिप्त पूजन करें। गुरु मंत्र की एक माला अवश्य जप करें। फिर अपने सामने एक थाली में कुंकुम से गुरु मंत्र अंकित करें। इसके ऊपर पुष्प का आसन देकर **'तांत्रोक्त रुद्र यंत्र'** को स्थापित करें। यंत्र की दायीं ओर पुनः पुष्प का आसन देकर **'गुरु गुटिका'** रखते हुए देवगुरु बृहस्पति की स्थापना करें। फिर **'चैतन्य माला'** से निम्न मंत्र की 7 माला जप 16 दिन तक नित्य करें -

बृहस्पतीश्वर शिव मंत्र

॥ ॐ श्रीं नमः शिवाय ॐ श्रीं॥

आठवें दिन 'चैतन्य माला' को गले में धारण कर लें। साधना समाप्ति होने के बाद कम से कम एक सप्ताह तक अन्य सामग्री को पूजा स्थान में ही रहने दें, फिर बाद में उसे जल में विसर्जित कर सकते हैं।

प्राण प्रतिष्ठा न्यौ. - 450/-

जुलाई 2026

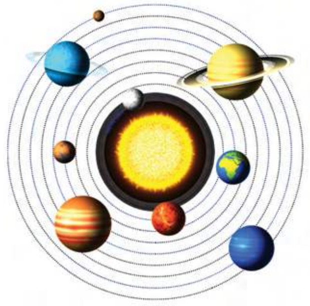

नक्षत्रों की वाणी

मेष

आलस्य एक ऐसा दोष है, जिससे जातक के भाग्य में लिखी सफलता भी असफलता में बदल जाती है। आप स्वयं को प्रयासपूर्वक आलसी होने से बचायें, अपनी दैनिक दिनचर्या में तत्परता रखें। इस माह व्यवहार और वाणी में संयम बनायें रखें। इस माह आय के संसाधनों में वृद्धि होने से आर्थिक पक्ष मजबूत होगा, किन्तु लाभ प्राप्ति के लिये आपको अनावश्यक खर्च नियन्त्रित करना पड़ेगा। अनुकूलता हेतु सद्‌गुरुदेव से **'भुवनेश्वरी दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 11, 20, 28 हैं।

वृषभ

इस माह सुख-दुःख, दिन-रात की तरह आते जाते रहेंगे। बुद्धिमान व्यक्ति विवाद और व्यर्थ की बातों में तटस्थ भाव रखते है, आप भी तटस्थ भाव अपनायें। आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी और आपकी उन्नति देखकर शत्रुपक्ष आपको परेशान करने का प्रयत्न करेगा। सम्पत्ति क्रय करते समय सावधानी रखें, धोखा हो सकता है। सद्‌गुरुदेव एवं इष्ट के प्रति आपकी श्रद्धा से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आप अनुकूलता हेतु सद्‌गुरुदेव से **'महाकाली दीक्षा'** अवश्य ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 11, 15, 24, 31 हैं।

मिथुन

वर्तमान समय आपका परीक्षा काल है, किन्तु आपको घबराने की आवश्यकता नहीं है। गुरु कृपा से समस्याओं का हल करने में सफल होंगे। आर्थिक पक्ष को लेकर सावधानी रखें, उधार के लेन-देन से बचें। राजकीय एवं न्यायिक कार्यों में विश्वासी सहयोगियों की सलाह से कार्य करें। जीवन साथी से पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा, संतान पक्ष से सुखद समाचार आत्मविश्वास में वृद्धि करेंगे। आप अनुकूलता हेतु **'विन्ध्यवासिनी साधना'** (जून 2026) अवश्य सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 4, 10, 14, 25 हैं।

कर्क

नवग्रहों के प्रभाव से आपके मान-सम्मान में वृद्धि होगी। इस माह परिश्रम और योग्यता से सफलता प्राप्त होगी, परिणामस्वरूप नवीन भवन एवं वाहन प्राप्ति होगी। इस माह बेरोजगार व्यक्तियों को योग्यता अनुरूप रोजगार प्राप्त होगा। परिवार में किसी बात पर वाद-विवाद हो सकता है, सम्पति सम्बन्धी मामलों में सोच-विचार कर निर्णय करें। अविवाहित युवक-युवती के विवाह के श्रेष्ठ योग बन रहे है। आप लाभ प्राप्ति हेतु सद्‌गुरुदेव से **'इन्द्र वैभव वर्चस्व दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 7, 12, 20, 28 हैं।

सिंह

समय चुनौतीपूर्ण है आप असमंजस का त्याग कर बुद्धि-विवेक का उपयोग करें। अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिये कर्मशील रहें, धैर्य पूर्वक कार्य करें सफलता अवश्य प्राप्त होगी। व्यापार एवं नौकरी क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति समय की आवश्यकता को देखते हुए नये अवसरों एवं संभावनाओं पर विचार कर, योजनापूर्वक आगे बढ़े। शुभचिन्तकों एवं सहयोगियों से से सम्पर्क में रहे, भविष्य में आवश्यकता होगी। अनुकूलता हेतु सद्‌गुरुदेव **'आपदा उद्धारक बटुक भैरव दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 2, 14, 18, 30 हैं।

कन्या

अपनी योजनाओं को, अपने सपनों को धरातल पर उतारने के लिये कर्म साधना करनी पड़ती है। कर्म के अभाव में योजनाएं असफल हो जाती है, इसी सत्य को स्वीकार कर कर्म-पथ पर गतिशील बनें रहे। इस माह नवीन अवसरों की प्राप्ति होगी, आर्थिक लाभ के योग भी बन रहे है। अपने खर्च को नियन्त्रित कर भविष्य के लिये निवेश करें। संतान पक्ष से शुभ समाचार प्राप्त होगा, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। आप अनुकूलता हेतु **'चन्द्रमौलिश्वर साधना'** (मई 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 12, 20, 29, 31 हैं।

तुला

व्यक्ति के साथ धोखा, विश्वासघात तब होता है, जब वह आंखें बंद कर किसी पर भी विश्वास कर लेता है। इस माह आपके साथ भी धोखा, विश्वासघात हो सकता है, सावधानी रखें। व्यर्थ के वाद-विवाद से अपने आप को दूर रखें अन्यथा आपकी प्रगति, उन्नत्ति के साथ मानसिक शान्ति भी समाप्त हो जायेगी। उच्च बृहस्पति की स्थिति शिक्षा प्रतियोगिता में आपको लाभ दिलायेगी। इस माह यात्रा करते समय सावधानी रखें। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'शनि प्रसन्न दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 5, 10, 17, 25 हैं।

वृश्चिक

वर्तमान समय मिश्रित फल कारक है धूप-छांव की तरह सुख-दुख की अनुभूति आपको होती रहेगी। साथ ही आप ध्यान रखें किसी समस्या को लेकर चिंता करना उसका समाधान नहीं है उसकी अपेक्षा बुद्धि-विवेक से उसका हल खोंजे। सम्पति सम्बन्धी किसी लम्बित कार्य के पूर्ण होने से आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। इस माह क्रोध और आवेश में आकर कोई निर्णय नहीं करें अन्यथा बनता कार्य बिगड़ सकता है। अनुकूलता हेतु **'ऋण मोचन मंगल साधना'** (मई 2026) सम्पन्न करें। शुभ तिथियां - 9, 18, 25 28 हैं।

धनु

नवग्रहों के प्रभाव से आपके मान-सम्मान में वृद्धि होने जा रही है, लोग आपके कार्य की प्रशंसा करेंगें। व्यापार क्षेत्र से जुड़े व्यक्ति अपना कार्य विस्तार करने के लिये यात्रा इत्यादि पर जा सकते है, जिसका आपको उचित लाभ प्राप्त होगा। नौकरीपेशा व्यक्ति अपने उच्च अधिकारीयों को प्रसन्न कर प्रमोशान प्राप्त करने में सफल हो सकते है। संतान के भविष्य को चल रही समस्या के हल होने से शांति प्राप्त होगी। आप अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'कमला महाविद्या दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 12, 22, 28, 30 हैं।

मकर

अपने शुभ चिन्तकों, सहयोगियों और अपने शत्रुओं, प्रतिद्वंद्वों को पहचानने का प्रयास करें। मित्र रूपी शत्रु आपको ज्यादा नुकसान पहुंचा सकता है और कठोर वचन कहने वाला मित्र आपकी उन्नति में सहयोगी हो सकता है। समय उन्नतिप्रदायक है अतः व्यर्थ के वाद-विवाद से दूर रहे और

☆ **सर्वार्थ सिद्धि योग** - 3, 7, 9, 11, 13, 19, 24, 26 जुलाई / 2, 4, 8, 16 अगस्त ☆ **अमृत योग** - 11, 13, 19 जुलाई / 4, 8, 16 अगस्त ☆ **द्विपुष्कर योग** - 9 अगस्त ☆ **त्रिपुष्कर योग** - 11 जुलाई / 25, 29 अगस्त ☆

अपने लक्ष्य, कार्यों पर ध्यान केन्द्रित रखें। निवेश हेतु शुभ समय है, संतान के भविष्य को लेकर महत्वपूर्ण निणर्य हो सकते है। अनुकूलता हेतु **'आद्या विभूषिणी योगिनी साधना'** (मई 2026) करें। शुभ तिथियां - 5, 10, 16, 26 हैं।

कुम्भ

सुबह की भौंर से पहले अंधेरा गहरा जाता है, पर सूर्य की प्रकाश किरणें जब क्षितिज पर आती है तो अंधकार छू मंतर हो जाता है। आपके जीवन में भी गुरुशक्ति का प्रकाश अवरोधों, समस्याओं, परेशानियों को समाप्त कर आपको शांति, सम्मान और धन प्रदान करवायेगा। गुरुशक्ति पर विश्वास रखते हुए कठिन समय में भी कर्म करते रहे, सफलताएं जल्द ही बरसेगी, हर स्थिति पर विजय प्राप्त होगी। अनुकूलता हेतु सद्गुरुदेव से **'गुरू शक्ति भाग्योदय दीक्षा'** ग्रहण करें। शुभ तिथियां - 15, 18, 25, 31 हैं।

मीन

वर्तमान समय मिश्रित फलकारक है। सफलता प्राप्ति हेतु आलस्य को अपने ऊपर हावी न होने दें और व्यर्थ के कार्य से अपने को दूर रखें। इस माह आर्थिक पक्ष को लेकर भी आपको सावधानी रखनी है और व्यर्थ के खर्च से बचना है। बेरोजगार व्यक्तियों का संघर्ष समाप्त होने जा रहा है, आपको आपकी योग्यता अनुरूप रोजगार की प्राप्ति संभव है। राजनीति क्षेत्र से जुड़े व्यक्तियों को सफलता प्राप्त होगी। अनुकूलता हेतु **'वार्ताली तीव्र तंत्र स्तम्भन साधना'** (जून 2026) करें। शुभ तिथिया - 3, 12, 25, 30 हैं।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्यौहार

15 जुलाई	आषाढ़ शु.-01	बुधवार	गुप्त नवरात्रि प्रारम्भ
22 जुलाई	आषाढ़ शु.-09	बुधवार	नवमी
25 जुलाई	आषाढ़ शु.-11	शनिवार	देव शयनी एकादशी
29 जुलाई	आषाढ़ शु.-15	बुधवार	गुरु पूर्णिमा
03 अगस्त	श्रावण कृ.-05	सोमवार	श्रावण प्रथम सोमवार
09 अगस्त	श्रावण कृ.-11	रविवार	कामदा एकादशी
10 अगस्त	श्रावण कृ.-12	सोमवार	श्रावण द्वितीय सोमवार
12 अगस्त	श्रावण कृ.-30	बुधवार	हरियाली अमावस्या

काल निर्णय

साधक, पाठक तथा सर्वजन सामान्य के लिए समय का वह रूप यहां प्रस्तुत है; जो किसी भी व्यक्ति के जीवन में उन्नति का कारण होता है तथा जिसे जान कर आप स्वयं अपने लिए उन्नति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं।

नीचे दी गई सारिणी में समय को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत किया गया है - जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य के लिये, चाहे वह व्यापार से सम्बन्धित हो, नौकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उत्सव से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सम्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम समय का उपयोग कर सकते हैं, और सफलता का प्रतिशत **99.9%** आपके भाग्य में अंकित हो जायेगा।

ब्रह्म मुहूर्त का समय प्रातः 4.24 से 6.00 बजे तक ही रहता है।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय
रविवार (जुलाई 5, 12, 19, 26)	दिन 06:00 से 08:24 तक 11:36 से 02:48 तक 03:36 से 04:24 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 04:24 से 06:00 तक
सोमवार (जुलाई 6, 13, 20, 27)	दिन 06:00 से 07:30 तक 09:12 से 11:36 तक रात 08:24 से 11:36 तक 02:48 से 03:36 तक
मंगलवार (जुलाई 7, 14, 21, 28)	दिन 10:00 से 11:36 तक 04:30 से 06:00 तक रात 06:48 से 10:00 तक 12:24 से 02:48 तक 05:12 से 06:00 तक
बुधवार (जुलाई 1, 8, 15, 22, 29)	दिन 06:48 से 10:00 तक 02:48 से 05:12 तक रात 07:36 से 09:12 तक 12:24 से 02:48 तक
गुरूवार (जुलाई 2, 9, 16, 23, 30)	दिन 06:00 से 07:36 तक 10:00 से 11:36 तक 04:24 से 06:00 तक रात 09:12 से 11:36 तक 02:00 से 04:24 तक
शुक्रवार (जुलाई 3, 10, 17, 24)	दिन 06:00 से 06:48 तक 07:36 से 10:00 तक 12:24 से 03:36 तक रात 07:36 से 09:12 तक 10:48 से 11:36 तक 01:12 से 02:48 तक
शनिवार (जुलाई 4, 11, 18, 25)	दिन 06:00 से 06:48 तक 10:30 से 12:24 तक रात 08:24 से 10:48 तक 02:48 से 03:36 तक 05:12 से 06:00 तक

आज क्या करना है - वराहमिहिर वचन

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जाएंगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं? प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे उपाय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिनसे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल एवं आनन्दयुक्त बन जाए। कुछ ऐसे ही उपाय आपके समक्ष प्रस्तुत हैं, जो वराहमिहिर के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित ग्रंथों से संकलित हैं, जिन्हें यहां प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्पन्न करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

अगस्त - 2026

1. **'वज्रेश्वरी सिद्धि दिवस'** पर सद्गुरुदेव से **'तंत्र बाधा निवारण दीक्षा'** ग्रहण करें।
2. गणपति पर लाल पुष्प अर्पित करें, बाधा समाप्त होगी।
3. **श्रावण के प्रथम सोमवार** पर **'रसेश्वर शिव अभिषेक साधना'** (पृष्ठ सं. 30) सम्पन्न करें।
4. आज **'बजरंग बाण'** का पाठ कर दिन का आरम्भ करें।
5. **श्रावण सप्तमी** पर बाधाओं के समापन हेतु **'आपदा उद्धारक बटुक भैरव साधना'** (जून 26) सम्पन्न करें।
6. गुरु पादुकाओं को गंगाजल से अभिषेक कर उस जल को स्वयं पर छिड़के, रोग बाधा समाप्त होगी।
7. भगवती लक्ष्मी को लाल पुष्प अर्पित करें।
8. एक मुट्ठी काले तिल घर के बाहर रख दें, आने वाली बाधा समाप्त होगी।
9. **कामदा एकादशी** के रसपूर्ण मुहूर्त पर **'शुक्र साधना'** (पृष्ठ सं. 26) अवश्य सम्पन्न करें।
10. **श्रावण के द्वितीय सोमवार** पर **'रसेश्वर शिव अभिषेक साधना'** (पृष्ठ सं. 30) सम्पन्न करें।
11. आज गुड़ खाकर घर से निकलें कार्य सिद्धि होगी
12. **हरियाली अमावस्या और सूर्य ग्रहण** के सिद्ध मुहूर्त में **'तंत्र उत्कीन त्रिपुरा शक्ति दीक्षा'** ग्रहण कर **'तंत्र उत्कीलन त्रिपुरा साधना'** (पृष्ठ सं. 20) सम्पन्न करें।
13. चिटियों को शक्कर मिश्रित आटा डालें, लाभ होगा।
14. आज सफेद वस्तुओं का दान करें।
15. **मधुश्रवा तीज** के अद्वितीय मुहूर्त में **'आद्या विभूषिणी योगिनी साधना'** (जून 2026) अवश्य सम्पन्न करें।
16. गणेशजी को **'ॐ गं गणपतये नमः'** बोलकर इक्कीस बार दूर्वा अर्पित करें।
17. **श्रावण के तृतीय सोमवार** पर **'रसेश्वर शिव अभिषेक साधना'** (पृष्ठ सं. 30) सम्पन्न करें।
18. **श्रावण शु. षष्ठी** पर के **कल्कि जयन्ती** पर सद्गुरुदेव से **'क्रियमाण भाग्योदय दीक्षा'** ग्रहण करें।
19. तेल का दीपक जलाकर घर के बाहर रख दें।
20. आज प्रात: गुरु स्मरण कर घर से निकलें।
21. **'गुरु जन्म'** दिवस पर विशेष गुरु पूजन कर, गुरु सेवा का संकल्प लें।
22. काले उड़द काला वस्त्र दान करें, धन लाभ होगा।
23. **पुत्रदा एकादशी** के शुभ मुहूर्त में सद्गुरुदेव से **'संतान सौभाग्य दीक्षा'** ग्रहण करें।
24. **श्रावण के चतुर्थ सोमवार** पर **'रसेश्वर शिव अभिषेक साधना'** (पृष्ठ सं. 30) सम्पन्न करें।
25. **मूंगा माला** (न्यौ. 300/-) का पूजन कर धारण करें, आत्मविश्वास जाग्रत होगा।
26. अपने इष्ट का स्मरण कर दिन का आरम्भ करें।
27. प्रात: गुरु आरती अवश्य सम्पन्न करें।
28. **रक्षा बंधन और चन्द्र ग्रहण** के शुभ मुहूर्त में गुरुदेव से **'महामृत्युंजय दीक्षा'** ग्रहण करें।

29 हनुमान विग्रह पर तेल और सिन्दूर अर्पित करें।

30. भगवान सूर्य कुंकुम, अक्षत मिश्रित जल से अर्घ्य दें।
31. **कज्जली तीज** के शुभ योग में प्रेम, सौन्दर्य, दाम्पत्य सुख अभिवृद्धि हेतु सद्गुरुदेव से **'आद्या विभूषिणी योगिनी दीक्षा'** ग्रहण करें।

गुरु पूर्णिमा विचार प्रवाह
गुरु शिष्य सम्बन्धों का आधार

गुरु - तत्व आकर्षण

गुरु के प्रति आकर्षण - समर्पण से ही जीवन का अज्ञान रूपी अंधकार समाप्त होता है और गुरु ज्ञान की ज्योति में शिष्य सदैव उज्जवल ओजस्वी बनता है।

संसार में शक्ति के दो रूपों की व्याख्या होती है। एक है प्रकृति और दूसरा है गुरु। इस विषय पर भारतीय ऋषियों ने निरन्तर अनुसंधान किये और पहले द्वैत सिद्धान्त का परिचालन हुआ कि जगत का आधार प्रकृति और पुरुष है। दोनों अलग-अलग तत्व है। आगे और ऋषियों ने अनुसंधान किया और शंकराचार्य ने अद्वैत का सिद्धान्त दिया और यह स्थापित किया कि प्रकृति और पुरुष एक ही है और दोनों मिलकर पूर्णत्व को स्थापित करते है।

प्रकृति के बिना पुरुष का रहना संभव नहीं है और पुरुष के बिना प्रकृति अधूरी है और इस परिपालना में उन्होंने **'अहम् ब्रह्मास्मि...'** का सिद्धान्त प्रतिपादित किया और कहा कि केवल मनुष्य शरीर ही नहीं, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड प्रकृति और पुरुष के मिलन का स्वरूप है।

आज के वैज्ञानिक आधार पर चर्चा करें तो यह माना जाता है कि लाखों-करोड़ों वर्ष पहले सृष्टि में कुछ भी नहीं था। सर्वत्र अंधकार था और फिर सूर्य की उत्पति हुई और सूर्य ने पूरे समुद्र से आप्लावित जल रूपी पृथ्वी को सुखाना प्रारम्भ किया और जिससे पृथ्वी ग्रह का निर्माण हुआ और यह प्रक्रिया चलती रही। करोड़ों-करोड़ों वर्षों बाद भी आज भी पृथ्वी का करीब 65-70 प्रतिशत भाग जल है और बाकी भूभाग ठोस भूमि है।

भारतीय मनीषियों ने भी सूर्य को जगत की आत्मा कहा है और वेदों में लिखा है -

'सूर्य आत्मा जगतस्तस्थुषश्च...'

सूर्य ही जगत की आत्मा का स्वरूप है।

प्रकृति का सीधा अर्थ सामान्य बोलचाल भाषा में हजारों रूपों में प्रकट किया जाता है। वायु, जल, बादल, आकाश, पृथ्वी के अलावा विभिन्न प्रकार के पेड़-पौधों को भी प्रकृति की संज्ञा दी गई।

प्रकृति का क्षेत्र अत्यन्त विशाल है। मनुष्य जीवन में प्रकृति को **'स्वभाव'** से जोड़ा गया है और यह कहा गया है कि संसार के प्रत्येक मनुष्य, जीव-जन्तु की प्रकृति अलग-अलग होती है। हम जानवरों की भाषा समझते नहीं है इसीलिये जानवरों की प्रकृति का पूर्ण विश्लेषण नहीं कर पाते है।

मनुष्य की प्रकृति

अब मनुष्य में प्रकृति क्या है? उसका स्वभाव, उसका चरित्र, उसकी कार्यशैली, उसकी बुद्धि, विवेक, क्षमता, ज्ञान, प्रेम, घृणा, शौर्य, ईर्ष्या, द्वेष उसकी प्रकृति है।

एक विशेष बात यह है कि संसार में कोई भी जीव-जन्तु एकाकी नहीं रहता है। चाहे भेड़-बकरी हो, गाय हो, जीव-

जन्तु हो, शेर हो, हाथी हो, यहां तक की वृक्ष भी हो, कोई भी एकाकी नहीं रहता। अपनी ही प्रजाति के साथ आकर्षण में बंधा हुआ होता है।

मनुष्य भी इसीलिये समाज में रहता है, एक समूह के रूप में रहता है और एक दूसरे के प्रति आकर्षित रहते है। यदि कोई भेद है, विकर्षण है तो वह भी आकर्षण का ही स्वरूप है।

विचारणीय बात है कि किस कारण से लाखों-लाखों, करोड़ों वर्षों से सारे ग्रह सूर्य की परिक्रमा करते है। चन्द्रमा, पृथ्वी की परिक्रमा करता है, शनि के उपग्रह टाईट, एन्सेलाडस इत्यादि शनि की परिक्रमा करते है।

आकर्षण शक्ति सर्वोपरि है

इस सिद्धान्त के अनुसार यह सर्वमान्य सिद्धान्त स्थापित होता है कि संसार की सबसे बड़ी शक्ति आकर्षण की शक्ति है। इसीलिये कोई भी व्यक्ति एकांकी नहीं हर सकता है। स्त्री को पुरुष के प्रति और पुरुष को स्त्री के प्रति आकर्षण होता है। दोनों के मिलन से सृष्टि में नवीन संरचना और यही आकर्षण का विस्तार समाज, राष्ट्र और पूरे भूमण्डल का निर्माण करता है। इसीलिये हमारे शास्त्रों में **वसुधैव कुटुम्बक...** का सिद्धान्त स्थापित हुआ है कि इस वसुधा अर्थात् धरती पर रहने वाले सभी प्राणी, जीव-जन्तु, वनस्पति एक कुटुम्ब के समान है।

शक्ति प्रकृति सर्व विद्यमान

संसार में प्रत्येक व्यक्ति जिसमें ईश्वर ने शक्ति अर्न्तनिहित कर दी है वह अपनी शक्ति का और अधिक प्रसार करना चाहता है। इसी कारण नये अनुसंधान होते है और शक्ति विस्तार के कारण ही पाषाण युग से लेकर वर्तमान युग तक संस्कृति का विकास हुआ है। यह विकास का क्रम निरन्तर चलता ही रहेगा, जब तक पुनः प्रलय न हो जाये और यह प्रलय कब होगा? किसी को जानकारी नहीं है, कोई निश्चित तौर पर यह नहीं बता सकता है कि पृथ्वी कब तक रहेगी।

जब तक पृथ्वी है, तब तक पृथ्वी पर प्रत्येक प्राणी ईश्वर द्वारा प्रदत्त अपनी आयु जीता रहेगा। ईश्वरीय विधान बहुत स्पष्ट है, उन्होंने मनुष्य के लिये 80-100 वर्ष, गाय के लिये 15-25 वर्ष, घोड़े के लिये 25-30 वर्ष, हाथी के लिये 50-70 वर्ष, कछुआ 100-150 वर्ष तक जीता है तो पूर्णायु कही जाती है।

क्या केवल जीना ही पर्याप्त है?

निश्चित रूप से यही उत्तर प्राप्त होगा कि केवल जीना अर्थात् श्वास लेना और देह की दैनिक क्रियाएं करना पर्याप्त नहीं है। जीवन में शक्ति का और अधिक विस्तार होना ही चाहिये, निरन्तर अभिवृद्धि होनी चाहिये।

आकर्षण शक्ति का विस्तार

इन सबके मूल में क्या है? इन सबके मूल में है आकर्षण की शक्ति। यह आकर्षण केवल वासनात्मक शक्ति नहीं है। यह आकर्षण ईश्वरीय वरदान है। जिस तत्व के पूर्ण जाग्रत होने पर मनुष्य अपने जीवन की बाधाओं का शमन कर सकता है, अपने जीवन को उर्ध्वगति प्रदान कर सकता है।

सामान्य भाषा में कहा जाये तो स्पष्ट है कि प्रत्येक मनुष्य को आकर्षण शक्ति से जुड़ना ही पड़ता है। कोई भी जीव-जन्तु, मनुष्य गहरे अंधकार में पूरा जीवन नहीं जी सकता है, यहां तक कि एकाकी जीवन भी नहीं जी सकता है।

प्रकृति का आकर्षण है, जगत की आत्मा सूर्य के प्रति और यह सूर्य के दो स्वरूप है। एक सूर्य जो हमें दृश्यमान होता है, वह स्थिर है, हमारी पृथ्वी ही उसके चारों ओर परिक्रमा करती है। एक ओर सूर्य जो मनुष्य के मन में स्थित है वह निरन्तर प्रेरणा और शक्ति प्रदान करता रहता है और यह प्रेरणा और शक्ति किस दिशा में जाये यह मनुष्य के बुद्धि और विवेक पर निर्भर करता है। इसीलिए मनुष्य ने विनाशाकारी परमाणु बम भी बनाये और इसी परमाणु शक्ति से बिजलीघरों का निर्माण भी किया। अर्थात् हम शक्ति को जिस रूप में ले जाना चाहे, वह उस रूप में जा सकती है।

ज्ञान और शक्ति का आकर्षण भाव

इतना तो निश्चित है कि शक्ति को एक विशेष दिशा निर्देश चाहिये, प्रकृति अर्थात् शक्ति कभी भी अपनी इच्छानुसार क्रियाशील नहीं होती है। उसे ज्ञान रूपी सूर्य के द्वारा एक निश्चित दिशा देनी पड़ती है। गुरु प्रार्थना है -

ॐ अज्ञान तिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जन शलाकया।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

इस श्लोक का भावार्थ बहुत महान् है, गुरु मनुष्य जीवन में सूर्य है, जो उसके अज्ञान रूपी अंधकार को समाप्त करते है, नाश करते है।

अंधकार तो किसी को अपने जीवन में नहीं चाहिये। अंधकार में सारी शक्तियां सुप्त हो जाती है। प्रकाश तो सबको चाहिये और ईश्वरीय प्रतिरूप मनुष्य को निरन्तर अपने से बड़ी शक्ति का प्रसार चाहिये।

गुरुत्वाकर्षण शक्ति : गुरु तत्व आकर्षण

आलेख के प्रारम्भ में जिस शक्ति का विवेचन किया गया है वह गुरुत्वाकर्षण की ही शक्ति हैं।

गुरुत्वाकर्षण का अर्थ है गुरु के आकर्षण चक्र में रहना और यह पृथ्वी के सभी ग्रह निरन्तर कर रहे है।

मनुष्य जीवन में भी गुरु का आगमन सूर्योदय के समान है। जब वह अपनी निद्रा, आलस्य को त्याग कर गुरु रूपी प्रकाश में स्वयं अपने आपको देखता है, विश्लेषण करता है और यह विचार करता है कि मुझे अपने जीवन को क्या दिशा देनी है। तो आवश्यक है कि गुरु के प्रति आकर्षण शक्ति को तीव्र से तीव्रतम बनाया जाये। यदि एक व्यक्ति चाहे वह साधक हो, शिष्य हो गुरुत्वाकर्षण अर्थात् गुरु तत्व आकर्षण से छूट जाता है तो वह संसार के भंवर जाल में दिशाहीन, निरुद्देश्य जीवन जीता है। न उसे अपनी गति का ध्यान है, न लक्ष्य का। ऐसा व्यक्ति एक फुटबॉल की तरह संसार सागर में इधर से उधर ठोकरें खाता है। हर व्यक्ति उस पर प्रहार करता रहता है।

शिष्य का संकल्प

जब कोई शिष्य-साधक गुरु को धारण करता है तो वह एक मानसिक संकल्प लेता है कि हे गुरुदेव! मैं आपके प्रति अपने आकर्षण को और अधिक तीव्र बनाता रहूंगा। मेरी दिल की इच्छा है कि मैं संसार में निरुद्देश्य जीवन नहीं जीऊ।

मुझे आपके आकर्षण के प्रभाव से निरन्तर दिशा निर्देश प्राप्त होता रहे और यह दिशा निर्देश मानसिक, वाचिक और लिखित भी हो सकता है।

गुरु शिष्य के मानस में प्रवेश कर उसे दिशा निर्देश देते है। शास्त्रों में इसे ही इसे शक्तिपात कहा गया है।

जब उच्च शक्ति, निम्न शक्ति को तीव्रता प्रदान कर उसकी प्रकृति को निर्देशित करती है तो निम्न शक्ति उर्ध्वमुखी होकर उच्चता को प्राप्त करती है।

जिस प्रकार सूर्य स्थिर है उसी प्रकार गुरु भी शिष्य के जीवन में स्थिर है। कर्त्तव्य है तो केवल शिष्य और साधक का कि वह गुरु तत्व आकर्षण में कितना अधिक जुड़ा हुआ है। इस जुड़ाव का स्तर भावनात्मक भी होता है, बौद्धिक भी होता है और इसमें आदेश भी होता है। शरीर दृश्यमान होता है इस कारण शरीर का शरीर से जुड़ाव स्पष्ट दिखाई देता है और उस स्पष्ट प्रभाव को शिष्य सहज ग्रहण कर सकता है। इसीलिये दर्शन, वचन और कर्म को **'मनसा वाचा कर्मणा...'** कहा गया है और इन तीन से ही साधक के जीवन की दिशा निर्धारित होती है।

सदैव स्मरण करो : गुरु मेरे जीवन के सूर्य

प्रत्येक व्यक्ति को निरन्तर आत्म विश्लेषण करते रहना चाहिये कि मेरे जीवन के सूर्य गुरु है और इस गुरु तत्व के आकर्षण में कितना जुड़ कर सकता हूं। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी को सदैव अपने आकर्षण में गतिशील रखते है। गुरु भी अपने आकर्षण में मुझे निरन्तर गतिशील रखें।

मूल बात यह है कि प्रत्येक मनुष्य का निर्माण प्रकृति से ही हुआ है और उनके अन्तर्मन में प्रकाश गुरु ही करते है। गुरु अपना ज्ञान, तेज, शक्ति शिष्यों को प्रदान करते रहते है।

जिस व्यक्ति के जीवन में गुरु नहीं है, गुरु तत्व आकर्षण नहीं है वह व्यक्ति मनुष्य तो अवश्य है। पर उसमें ज्ञान का तेज नहीं है और ज्ञान के तेज बिना संसार सागर में यात्रा अत्यन्त कठिन हो जाती है। जब तक गुरु का तेज, गुरु का आकर्षण और गुरु का प्रकाश किसी के जीवन में रहता है तब उसके जीवन में कोई अंधकार नहीं आता। अंधकार का दूसरा नाम है - निराशा, हताशा, पराजय, कर्महीनता, आलस्य, प्रमाद इत्यादि-इत्यादि।

गुरु ही शिष्य के जीवन व्याप्त अंधकार को समाप्त कर उसके जीवन में आशा, उत्साह और कर्म को जाग्रत करते है।

यही गुरु-शिष्य सम्बन्धों का सारभूत स्वरूप है।

17-18-19 जुलाई 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

27-28-29 जुलाई 2026

पारमेष्ठि गुरु शक्ति गुरु पूर्णिमा महोत्सव, अयोध्या

शिविर स्थल : कारसेवक पुरम निकट जानकीघाट (परिक्रमा मार्ग), अयोध्या (उ.प्र.)

आयोजक-सिद्धाश्रम साधक परिवारः व्यवस्थापक मण्डल-आजमगढ़ः फौजदार सिंह 9721458101• डॉ. दिनेश मिश्र 9307637084• रमाशंकर यादव 9120590115• मीरा मिश्रा 9307782759• दिवाकर सिंह एडवोकेट 9415833466• राम मिलन सिंह 9721458122• अरूण सिंह एडवोकेट 9415457229• रामू राम आर्या 9208491715• डा. जितेन्द्र गौतम 7319886120• माखन लाल संन्यासी 7607951922• डॉ. प्रमोद कुमार मिश्रा प्राचार्य 97214558117• डॉ. दिवाकर सिंह प्राचार्य 9721458112• मुसाफिर सिंह चेयरमैन• मदन मोहन पाण्डेय• **अयोध्याः** आशीष मौर्य 933670965• राजेन्द्र पाण्डेय• शोभनाथ मौर्य 9450647011• **लखनऊः** उदय सिंह 9795405047• **रायबरेलीः** राम सिंह यादव 7379854779• **प्रतापगढ़ः** तरुणेन्द्र पाण्डेय 7860190328• **प्रयागराजः** गजराज सिंह 9935699073• **विशिष्ट आयोजक आजमगढ़ कालेज प्रबंधकगणः** इन्द्रासन राय• डॉ.सानन्द सिंह• राज बहादुर सिंह• डॉ.प्रेमप्रकाश यादव• डॉ.अशोक सिंह• राकेश सिंह पालीवाल• डॉ.जितेन्द्र राय• शारदा शंकर राय• दीपक राय• सुनील राय• श्यामसुन्दर सिंह• पण्डित हरिनाथ तिवारी शास्त्री• डॉ.संजय सिंह• डॉ. रेनू सिंह• शम्भू नाथ सिंह पूर्व मंत्री• डॉ.आर. पी. सिंह प्राचार्य• भूपेन्द्र बहादुर सिंह• अनिल सिंह श्रमविभाग• सुजीत तिवारी• यशवंत सिंह डिग्री कालेज• अवनीश प्रताप सिंह• पुन्ज प्रकाश सिंह• गायत्री सिंह• बालमुकुन्द सिंह• रामनाथ सिंह• ओंकार सिंह (दुबरी)• पंकज सिंह गोपालगंज• श्रीराम सिंह वाजिदपुर• आज्ञाशंकर चौबे• ओमप्रकाश सिंह• अम्बरीश राय• पूरन सिंह• उमाकान्त सिंह पुट्टू• विवेक सिंह• सिद्धार्थ सिंह• शैलेन्द्र सिंह सिचाई विभाग• प्रतीक राज सिंह लखनऊ• रामअवतार सिंह लखनऊ अमित सिंह (बन्टी)• रवि गुप्ता• अजय सर्राफ• बजगंज बहादुर सिंह• सुब्बालाल यादव• धमेन्द्र यादव• डॉ. मनोज सिंह• सचिन सिंह• मिथिलेश सिंह गहजी• मनोज चौबे• डॉ. मिथिलेश सिंह• प्रवीण सिंह निजामाबाद• **आयोजक मण्डल आजमगढ़ः** ओमप्रकाश सिंह• हरिद्वार सिंह• चेतनरायन सिंह• शुभम• सौरम• हरिभजन राम• हरिबंश सिंह• दीपक राम• सौदागर शर्मा• विन्ध्याचल पाण्डेय• चुन्नीलाल चौहान• घनश्याम तिवारी• इन्दुमति राय• विद्या जायसवाल• मंजू जायसवाल• मनोज साहनी• राधेश्याम दूबे• बेदप्रकाश सिंह• अखिलेश मिश्रा• इन्द्रसेन यादव• डॉ.आर.डी.सिंह• हरिलाल गुप्ता• हषिकेश तिवारी• रामदेव यादव• चेतई यादव• रामसूरत यादव• मनोज साहनी• जितेन्द्र मौर्य• राजेन्द्र मौर्य• सबिता• उषा चौहान• प्रेमशीला राय• स्नेहलता चौरसिया• विजय यादव• धमेन्द्र• शारदा विश्वकर्मा• जगदीश पाण्डेय• परमहंश मौर्य• राधिका सिंह• लोदई• कैलाशी• फूलमती• कमला प्रसाद निखिल• उत्तम पाठक• विजय विश्रा• पार्वती मौर्य• प्रभुनाथ मिश्रा• राममूरत यादव• लालचन्द निषाद• मनोज कुमार• राममूरत सिंह• रविशंकर यादव• अनिल यादव• संजय राय• विगविजय नाथ द्विवेदी• **मुहम्मदाबादः** पूनम गौड़• विमला यादव• लालसा यादव• मंजू यादव• शान्ती साहनी• इन्दू• लक्ष्मी• शीला• **खुरहटः** रामनयन मौर्य• प्रदुम्न यादव• विजय शंकर• रामप्रवेश यादव• रामअवध चौहान• **अम्बेडकर नगरः** अच्छेलाल यादव• डॉ.लालजी पटेल• रमेश चन्द सोनी• देवनरायन पाण्डेय• योगेन्द्र मौर्य• **संतकबीर नगरः** रूदल प्रसाद चौधरी• चिन्ताहरण पटेल• अलख निरंजन विश्वकर्मा• राजदेव मौर्य• निखिलानन्द यादव• लालसा प्रसाद पासवान• दिगविजय चौरसिया• अश्वनी कुमार• रामानन्द• विपिन विश्वकर्मा• **गोरखपुर देवरियाः** अंकित पाण्डेय• विरेन्द्र साही• **रायबरेलीः** उषा शर्मा• शिवविरंचि• श्रीकृष्ण वर्मा• उमाशंकर पटेल• वियज पाल सोनी• सोनू सोनी• ज्ञानवती सिंह• **प्रयागराज-प्रतापगढ़ः** एम.आर.मिश्रा• रविशंकर सोनी• विकास तिवारी• **जौनपुर वाराणसीः** अंकित सिंह• मंजू सिंह• डॉ. विनोद कुमार सिंह• **लखनऊः** वी.के.श्रीवास्तव• कमला सिंह• शिवओम बाजपेई• हरिओम बाजपेई• रामा• समर जीत सिंह• साधना सिंह• ज्ञानशंकर शुक्ला• मनीष साहू• शैलेश मिश्रा• प्रवीण पंकज• नीरज बाजपेई• रामगोपाल साहू• सुशील मण्डल• अनामिका सिंह• **बाराबंकीः** रामनाथ मौर्य• अनिल कुमार मौर्य • रामेश्वर प्रसाद पान्डेय• माधुरी वर्मा• किरन तिवारी• उदय प्रताप सिंह• **चित्रकूटः** गायत्री तिवारी• **दिल्लीः** इन्द्रपाल सिंह• शिव कुमार गुप्ता बन्टी• रामकिशोर मौर्य• सचिन शर्मा• **टाटानगरः** वाई. एम.

मूर्ति• अभय कुमार वर्मा • डॉ.रवि• नरेश कुमार वर्मा• रामकेश चौधरी• विजय बहादुर साहू• संजीव कुमार• रामबाबू सोनकर• अरूण प्रसाद• गुरुवारी देवी• विजय कुमार झा• नमन पाठक• हरदीप सिंह• अनिल उराव• रामकृष्ण कुमार• विजय गुप्ता• संजीव सुमन• नवीन कुमार• **बिहार:** शोभादास • गणेश कुमार• **बेगूसराय:** गिरीश प्रसाद• **खगडिया:**राम मनोहर• डॉ. अशोक कुमार• **सीतामढी:** नन्दकिशोर मण्डल• **मधुबनी:** राजेन्द्र कुमार लाल• **कटिहार:** नरेश निखिल• **मधेपुरा:** मुरली प्रसाद यादव• **नैरतिया:** जनार्दन यादव• **दरभंगा:** पुरसोत्तम सिंह• **मोतीहारी:** लालन कुमार• **मुजफ्फर नगर:** सुरेन्द्र सिंह• **पुर्णिया:** संजय कुमार• **पटना:** राधा मोहन• मंजू• कामता प्रसाद• डॉ.विजय• राजेन्द्र राम• बालाजी सहाय• धीरज कुमार सिंह• **नागपुर:** राजेन्द्र सिंह सेमर • मधुकर उडकुडे• के. एन. मोहाडिकर• शुक्राचार्य ठाकरे• अशोक लड़के• गुणवंत खोब्रागडे• प्रशांत परसोडकर• महेश आर्थिक• संजय रसनफुटे• आनंगपाल पवार• भारतराव चंद बघेल• **उडीसा:** सुधांशू दोस • सत्याब्रत साहू• **छत्तीसगढ़:** के. के. तिवारी • बबला उपाध्याय• सुदामा चन्द्रा• संतोष सोनी• **नेपाल:** डॉ.एस.के.धिताल• डॉ.सुडान बासकोटा• गोपी कोइराला• शम्भू प्रसाद• **छिन्दवाडा:** बलदेव देवण्डे• **आसाम:** प्रभुदयाल सिओटिया• चन्द्रभान सिंह• हरेन्द्र यादव• राधेश्याम तिवारी• गुलाब प्रसाद गुप्ता• मुन्नीलाल साहू• भानू कमल• नागेश्वर गुप्ता• प्रदीप भराली• स्वाती अग्रवाल• शिवशंकर अग्रवाल• प्रेमबहादुर• हिमशिखा• **शिविर सम्बन्धी जानकारी के लिये सम्पर्क करे:** डॉ. दिनेश मिश्रा 9307637084 • मीरा मिश्रा 9307782759 • रमाशंकर यादव 9120590115 • **रूम बुकिंग हेतु सम्पर्क करे:** राम मिलन सिंह 9120922801, 9721458122 •

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

7-8-9 अगस्त 2026

जोधपुर दीक्षा कार्यक्रम, जोधपुर

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

16 अगस्त 2026

शिव सायुज्य छिन्नमस्ता साधना शिविर, इंदौर

शिविर स्थल : आनन्दम् क्लब रिजॉटर्स, रेडिसन होटल स्क्वेयर, मालवीय नगर मेट्रो के सामने, ए.बी. रोड इंदौर (म.प्र.)

आयोजक- विष्णु पाटीदार 9826231345• अशोक प्रजापति 9425074794• कुंवरसिंह राजपूत 9301060305• ललित जोशी 9826088920• गणेश मोदिया 9826031845• मुकेश जैन 9425922222• रघुराज सिंह मेहदेले 9754645047• गंगाप्रसाद जायसवाल 9755629061• राम सिंह राजपूत 9425400822• दिलीप धोटे 9826702088• रामस्वरूप निखिल 9826091488• कमल खेड़े 9827233200• जगदीश बैरागी 7587615075• यतिंद्र सक्सेना 9425059293• अर्जुन दास बैरागी 9399417091•आशीष डाले 9406718124• उमाशंकर पुरोहित 9009044033• जीपी परसाई 9340326221• देव काग 8619110544• हेमंत सोलंकी 9826082921• दिनेश साहू 9039207313• प्रीतम सिंह राजपूत 8889721421• नरेंद्र सिंह सोलंकी 7772884571• देवराम वर्मा 9826042471• नरेश साहू 9229610122• राजेश शर्मा 8878444044• डॉ. दीक्षा राजपूत 9340804586• कमल सिसोदिया 9753208821• गोपाल वशिष्ठ 9926802121• गिरीश वर्मा 9399686395• चंद्रभान सिंह• जाहर सिंह 9826701516• हेमराज सिंह चौहान• मनोहर साहू 8349622901• लक्ष्मीकांत पांडेय 9827031916• नितिन नंदवाल 9769862821• जगदीश शर्मा 9179099007• कैलाश साहू 6268635910• रामकिशन पवार 9869361920• दिलीप फूल माली 7224090205• दिनेश पटेल 9179815241• अनुराग जज साहब 7999130379• संतोष बैरागी 9399417091• नितेश बाघेल 9926380089• संजय मोदिया 09826641215• अरविंद कोष्ठी• सत्यनारायण मौर्य• राजेश शर्मा 9424495527• डॉ राजेंद्र विश्वे 7000065294• रामू चौहान 9425071986• सुभाष धौलपुर 9827700021• विनोद शर्मा 9827304221• राजाराम चौकसे 998135282• **शेष नाम अगले अंक में...**

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

28-29-30 अगस्त 2026

दिल्ली दीक्षा कार्यक्रम, दिल्ली

✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧✧ ✧✧ ✧ ✧✧ ✧✧

27 सितम्बर 2026

पितृ प्रसन्न कुल देवी देवता साधना शिविर, बोकारो

शिविर स्थल : बौद्ध विहार सेक्टर - 4, जगन्नाथ मन्दिर के पास, बोकारो, झारखण्ड

एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षीभूतम्
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुंतं नमामि।।

गुरु पूर्णिमा महादीक्षा

गुरु पूर्णिमा
29 जुलाई
2026

पारमेष्ठि गुरु शक्ति महादीक्षा

ॐ ह्रीं मम प्राण देह रोम प्रतिरोम चैतन्य जाग्रय ह्रीं ॐ नमः

पारमेष्ठि गुरु शक्ति शिष्य के लिये संजीवनी बूटी के समान है। जो शिष्य पारमेष्ठि शक्ति को ग्रहण करते है वे ही इसके गुणों को अनुभव कर सकते है और अपने व्यक्तित्व में आये परिवर्तन को अनुभव करते है। पारमेष्ठि गुरु शक्ति शिष्य को तीव्र चेतना युक्त करने की क्रिया है। शिष्य में निष्क्रिय पड़े शक्ति तत्त्व को सक्रियता प्रदान करने का मार्ग है।

सद्गुरु द्वारा प्रदत्त पारमेष्ठि शक्तिपात से शिष्य के सौभाग्य, कीर्ति, कुण्डलिनी चक्र में चेतना का प्रवाह प्रारम्भ होता है और वह अपने मूल को अपने सहसार से जोड़ देता है। जिससे शक्ति का एक अविरल प्रवाह उसके देह, मन, प्राण, वाणी एवम् व्यवहार में आ जाता है।

गुरु पूर्णिमा के शुभ अवसर पर पारमेष्ठि गुरु शक्ति महादीक्षा ग्रहण करने हेतु दीक्षार्थी अपना नवीनतम निखिल मंत्र विज्ञान के Whatsapp 9602334847 पर भेज दे तथा दीक्षा न्यौ. 2100/- निखिल मंत्र विज्ञान के SBI A/c. No.-32677736690 अथवा UBI A/c. No. -310001010036403 में जमा करवाकर जानकारी Whatsapp 9602334847 कर दें।

RNI No. RAJBIL/2010/34824
Postal Registration No. Jodhpur/366/2025-2027

MAGAZINE POST
Cust. ID - 3000067831
Contract ID - 41372420
BPC Jodhpur HO 342001

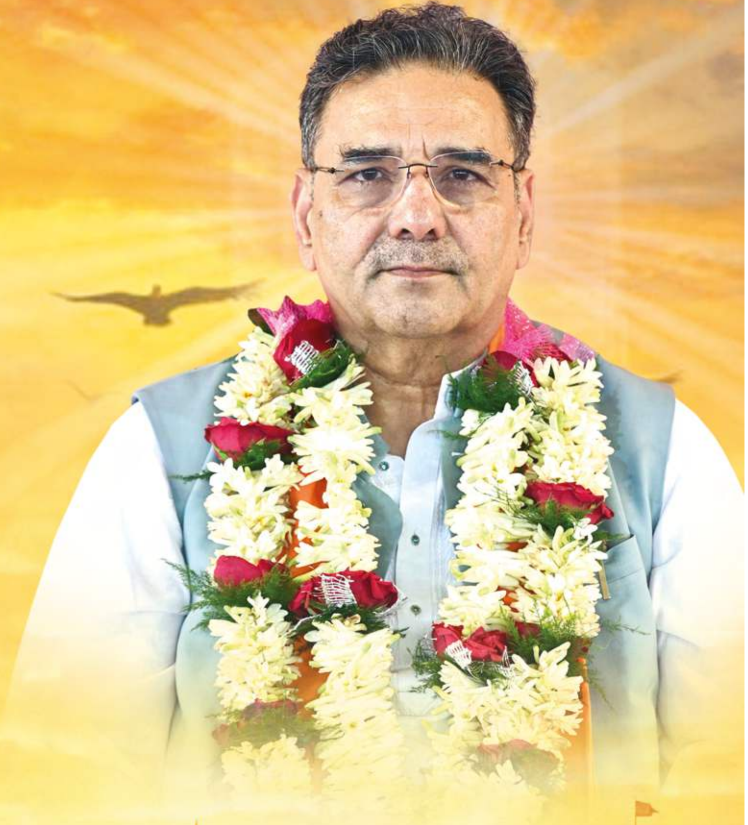

माह : जुलाई और अगस्त में दीक्षा के लिए निर्धारित विशेष दिवस

स्थान जोधपुर	स्थान आरोग्यधाम (दिल्ली)
3-4-5 जुलाई	17-18-19 जुलाई
7-8-9 अगस्त	28-29-30 अगस्त

पूज्य गुरुदेव श्री नन्दकिशोर श्रीमाली निम्न दिवसों पर साधकों से मिलेंगे व दीक्षा प्रदान करेंगे। इच्छुक साधक निर्धारित दिवसों पर पहुंचकर दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं।

प्रेषक -
निखिल मंत्र विज्ञान
14 A, मेन रोड हाई कोर्ट कॉलोनी,
सेनापति भवन के पास,
जोधपुर - 342001 (राज.)
फोन: 9799988915, 9799988930
9799988937, 9799988938
SMS & WhatsApp - 9602334847
Web Add. - nikhilmantravigyan.org
facebook.com\nikhilmantravigyan.org

Email - nmv.guruji@gmail.com

दिल्ली कार्यालय - आरोग्य धाम, गुजरात अपार्टमेन्ट के पीछे, जोन 4/5, पीतमपुरा, नई दिल्ली - 110034,
फोन: 9799988904, 9799988905, 9799988970